राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Www.gauravshalibharat.com

गौरवशाली भारत

नई दिल्ली से प्रकाशित

वर्ष : 12
अंक : 58
पृष्ठ : 08
नई दिल्ली
सोमवार 12 सितंबर 2022
मूल्य : 1.50/-
RNI No .DELHIN/2011/38334

मुख्य अपडेट | पेज 3 एलजी विनय सक्सेना अपने ऊपर लगे आरोपों की जांच से बचने के लिए दिल्ली सरकार पर लगा रहे रोज नया आरोप | पेज 5 'निराश' गठबंधन को 'अकेला' बनाने के लिए बिन बुलाए मेहमान बन रहे अखिलेश: स्वाती सिंह | पेज 7 पाकिस्तान में बाढ़ प्रभावितों के लिए हिंदू मंदिर ने खोले दरवाजे, मुस्लिम परिवारों के लिए बना पनाहगाह

बारीश : 10 राज्यों में यलो अलर्ट

अब तक देश के 31 प्रतिशत हिस्से में सामान्य से ज्यादा बारिश; बेंगलुरु में मौसम सुधरा

नई दिल्ली। देश में मानसून अंतिम चरण में एक बार फिर रफ्तार पकड़ सकता है। मौसम विभाग ने बंगाल की खाड़ी के ऊपर बन रहे कम दबाव के चलते उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत के विभिन्न राज्यों में तेज बारिश की आशंका जताई है। उत्तराखंड, ओडिशा, बिहार, दिल्ली और उत्तर प्रदेश समेत कई राज्यों के ज्यादातर जिलों में अगले 4 दिनों तक मध्यम जबकि कुछ जिलों में भारी बारिश हो सकती है

उत्तराखंड में बारिश से भारी तबाही

आईएमडी ने उत्तराखंड के कई क्षेत्रों में भारी बारिश को देखते हुए अगले चार दिनों तक यलो अलर्ट जारी किया है। उत्तरकाशी में गंगोत्री और यमुनोत्री के क्षेत्र में लगातार बारिश हो रही है। बागेश्वर जिले के कपकोट से सटे क्षेत्रों में भारी बारिश के चलते बिजली गुल है। कुछ इलाकों में भूस्खलन की भी खबर है। रविवार को भी भारी बारिश का सिलसिला जारी रहा।

राजस्थान में 10 दिन बाद मानसून फिर एक्टिव

पिछले 24 घंटे में राजस्थान के बांसवाड़ा जिले के जगपुरा में 3 इंच से ज्यादा बारिश रिकॉर्ड की गई है। झालावाड़ जिले में बिजली गिरने से झुलसे 4 लोगों की मौत हो गई है। जिले के रटलाई में रीझौन के खाल की रपट में पानी भर जाने के कारण आवागमन बाधित रहा, लोग जान जोखिम में डालकर रपट पार करते नजर आए।

मौसम विभाग ने सितंबर में औसत से 109 प्रतिशत ज्यादा बारिश होने की संभावना जताई है।

श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, दौसा, टोंक, सवाईमाधोपुर, अलवर, अजमेर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, बूंदी, बारां, कोटा, झालावाड़, उदयपुर, डूंगरपुर जिले में बारिश होने की संभावना है। भारी बारिश के कारण बारां का प्रसिद्ध डोल मेला में पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया है।

ओडिशा में 5 से अधिक जिलों में यलो अलर्ट

ओडिशा के कई हिस्सों में शनिवार को तेज बारिश हुई। राज्य के दक्षिणी हिस्सों के लिए ड्डस्ष्ठ ने 13 सितंबर तक ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। ढेंकनाल में रविवार सुबह 5.30 बजे तक 114 मिमी बारिश दर्ज की गई, वहीं कोरापुट में 106 मिमी बारिश हुई। भुवनेश्वर और कटक के लिए जिला प्रशासन ने गाइडलाइन जारी की है।

लोगों से घरों से निकलने से पहले सड़कों और यातायात व्यवस्था की स्थिति जानने की अपील की गई है। मछुआरों को सोमवार तक समुद्र तट से दूर रहने को कहा गया है। खुर्दा, कटक, संबलपुर, झारसुगुडा, अंगुल सहित अन्य जिलों में भारी बारिश की आशंका के चलते यलो अलर्ट जारी किया गया है।

राज्य सरकार ने सभी जिला कलेक्टरों को कठिन परिस्थितियों के लिए तैयार रहने और प्रोटोकॉल के अनुसार संकट की स्थिति से निपटने के लिए कहा है।

छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में तेज बारिश

राज्य में बस्तर के बीजापुर जिले में पिछले 2 दिनों से लगातार मूसलाधार बारिश हो रही है। जिससे जिले में बाढ़ जैसे हालात बन गए हैं। बीजापुर-भोपालपटनम नेशनल हाईवे 163 समेत अंदरूनी इलाके के कई गांवों में पानी भर गया है। जिले के एक गांव में 50 से ज्यादा मवेशी भी बह गए हैं।

उत्तर प्रदेश में मानसून कमजोर पड़ा

यूपी में बीते 24 घंटे में सिर्फ 1.2 मिलीमीटर बारिश पूरे प्रदेश भर में रिकॉर्ड की गई है। मौसम विभाग ने रविवार को 12 जिलों में मामूली बारिश का अलर्ट जारी किया है। अन्य जिलों में लोगों को उमस का सामना करना पड़ सकता है। प्रदेश में अब तक 46 प्रतिशत कम बारिश रिकॉर्ड की गई है। प्रदेश में मानसून शुरू होने से अब तक 349.8 मिलीमीटर बारिश ही रिकॉर्ड की गई है। जबकि अनुमान था कि 653.3 मिलीमीटर पानी बरसेगा।

राजस्थान : झालावाड़ में बिजली गिरने से 4 की मौत

राजस्थान के 20 जिलों में बारिश का अलर्ट, बांसवाड़ा में 3 इंच से ज्यादा बरसात

जयपुर। राजस्थान में एक बार फिर मानसून एक्टिव हो गया है। पिछले 24 घंटे में बांसवाड़ा के जगपुरा में 3 इंच से ज्यादा बारिश रिकॉर्ड की गई है। झालावाड़ जिले में 4 जगह बिजली गिरने से झुलसे 4 लोगों की मौत हो गई। आज 20 जिलों में बारिश होने के आसार है। मौसम विभाग ने सितम्बर में औसत से 109 प्रतिशत ज्यादा बारिश होने की संभावना जताई है।

मौसम विभाग के अनुसार जयपुर,अजमेर ,दौसा, अलवर ,झुंझुनूं,सीकर,चूरू, बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, पाली, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, नागौर, उदयपुर,चित्तौड़गढ़, राजसमंद, सिरोही, जालोर जिले में बारिश होने की संभावना है। आंध्रप्रदेश और उड़ीसा से लगने वाले बंगाल की खाड़ी क्षेत्र के ऊपर एक लो-प्रेशर का एरिया बना हुआ है। इसके असर से पूर्वी राजस्थान में भी बारिश हो रही है। झालावाड़ जिले में 10 सितंबर की देर शाम बिजली गिरने से असनावर, मनोहर थाना, बाघेर और चुनाभाटी में 1-1 व्यक्ति की बिजली गिरने से मौत हो गई।

13 जिलों में हुई बारिश

प्रदेश में पिछले 10 दिन से कमजोर पड़ा मानसून का बरसाती सिस्टम शनिवार को फिर से एक्टिव होने लगा है। 10 सितंबर को जयपुर में शाम 4 बजे बाद मौसम में बदलाव आया और तेज हवा के साथ बारिश का दौर शुरू हुआ है। टोंक, अलवर, दौसा, सवाई माधोपुर, कोटा, बारां, बूंदी, झालावाड़, उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़ जिलों में कई जगहों पर बरसात हुई।

मौसम विज्ञान केन्द्र जयपुर के मुताबिक बांसवाड़ा के जगपुरा में सबसे ज्यादा 77 मिलीमीटर बारिश रिकॉर्ड की गई। कोटा के सांगोद में 50 मिलीमीटर, झालावाड़ के अकलेरा में 50 मिलीमीटर, डूंगरपुर के वेजा में 40 मिलीमीटर, प्रतापगढ़ के पीपलखूंट में 40, उदयपुर के सारारा में 30 मिलीमीटर, करौली के नादौती में 30 मिलीमीटर बरसात रिकॉर्ड की गई है।

जयपुर में हुई बारिश

जयपुर में शाम पौने 5 बजे से बारिश का दौर फिर शुरू हो गया है। जयपुर के टोंक रोड, मानसरोवर, शिवदासपुरा, चाकसू जवाहर नगर, मालवीय नगर, जगतपुरा समेत कई इलाकों में बारिश हो रही है।

राजस्थान में औसत से 36 प्रतिशत ज्यादा बारिश

राजस्थान में मानसून के दौरान 1 जून से 8 सितम्बर तक कुल 546.3 मिलीमीटर बारिश रिकॉर्ड की गई। जबकि सामान्य तौर पर 402.5 मिलीमीटर बारिश होती है। यह औसत से 36 प्रतिशत ज्यादा है। पूर्वी राजस्थान में 695 मिलीमीटर बारिश हुई है। जबकि सामान्य बारिश 578.1 मिलीमीटर होती है। पूर्वी राजस्थान में सामान्य से 20 प्रतिशत ज्यादा बारिश हो चुकी है।

हिमाचल प्रदेश के ऊना में खंभे से टकराकर पलटी कार, 5 लोगों की मौत

शिमला। हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले में एक कार एक खंभे से टकराने के बाद पलट गई, जिससे उसमें सवार पांच लोगों की मौत हो गई। राज्य आपदा प्रबंधन विभाग ने यह जानकारी दी। दुर्घटना कुठार कलां गांव के निकट रात साढ़े बारह बजे के आसपास हुई, जिसमें दो व्यक्तियों की मौके पर ही मौत हो गई। इसके अलावा तीन घायलों को ऊना के क्षेत्रीय अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया।

विभाग ने कहा कि इनमें से चार ऊना जिले के विभिन्न गांवों के रहने वाले थे, जबकि एक पंजाब के रोपड़ जिले का निवासी था। रिपोर्ट के मुताबिक, हादसे में गांव कुठार कलां में ऊना जिले के रहने वाले राजन जसवाल और अमल दोनों की मौके

पर ही मौत हुई। जबकि घायल कार चालक हरियाणा के माजरा निवासी विशाल चौधरी, पंजाब के हाजीपुर के सिमरनजीत सिंह और हिमाचल के झलेड़ा के अनूप सिंह ने अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

15 सितंबर से ऊंचाई वाले मार्ग पर ट्रेकिंग पर रोक

हिमाचल प्रदेश सरकार ने किन्नौर और कुल्लू जिलों में हुई घटनाओं के मद्देनजर 15 सितंबर से 15,000 फुट से अधिक ऊंचाई वाले मार्ग पर ट्रेकिंग को प्रतिबंधित कर दिया है। डिप्टी कमीश्नर्स को लिखे पत्र में राज्य आपदा प्रबंधन निदेशक सुदेश मोख्ता ने कहा, विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार अत्यधिक ऊंचाई वाले पर्वतीय मार्ग पर ट्रेकिंग कार्यक्रम के लिए उपयुक्त समय 1 मई से 15 सितंबर तक होता है।

इस महीने की शुरुआत में किन्नौर जिले के चितकुल में खिमलोग दर्रे पर एक पर्वतारोही की मौत हो गई, एक अन्य घायल हो गया और तीन कुली लापता हो गए। अधिकारियों के अनुसार, कुल्लू जिले में माउंट अली रत्नी टिब्बा पर चढ़ने वाले पश्चिम बंगाल के चार पर्वतारोही बुधवार को लापता हो गए।

दिल्ली में 1000 लो फ्लोर बसों की खरीदी में घोटाला

एलजी ने सीबीआई जांच की मंजूरी दी; आप ने कहा- हमें पढ़े-लिखे उपराज्यपाल की जरूरत

एजेंसी

नई दिल्ली। शराब घोटाले की जांच झेल रही दिल्ली सरकार पर अब लो फ्लोर बसों की खरीदी में भ्रष्टाचार का आरोप लगा है। एलजी वीके सक्सेना ने रविवार को मामले की सीबीआई जांच की मंजूरी दे दी है। शिकायत दिल्ली परिवहन निगम के मुख्य सचिव नरेश कुमार ने 9 जून को दर्ज कराई थी।

शिकायत में दिल्ली के परिवहन मंत्री पर टेंडर, खरीद और दिल्ली इंटीग्रेटेड मल्टी-मॉडल ट्रांजिट सिस्टमसमिति के अध्यक्ष की नियुक्ति में भ्रष्टाचार का आरोप लगाया गया था।

हालांकि पिछले साल शिकायत के बाद बस खरीद का टेंडर रद्द कर दिया गया था।

सीबीआई जांच पर भड़की आम आदमी पार्टी

आम आदमी पार्टी ने सीबीआई जांच के जवाब में कहा, एलजी खुद भ्रष्टाचार के कई गंभीर आरोपों का सामना कर रहे हैं।

ध्यान हटाने के लिए, वे ऐसे काम कर रहे हैं। अब तक सीएम, डिप्टी सीएम और स्वास्थ्य मंत्री के खिलाफ हुई जांचों का कोई नतीजा नहीं निकला है। उन्होंने अब चौथे मंत्री के खिलाफ शिकायत की है। उन्हें पहले अपने खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों का जवाब देना चाहिए।

आप ने यह भी कहा कि ये बसें कभी नहीं खरीदी गईं और टेंडर रद्द कर दिए गए। दिल्ली को और ज्यादा पढ़े-लिखे एलजी की जरूरत है। इस

आदमी को पता नहीं है कि वह किस पर साइन कर रहा है।

2019 में शुरू हुई थी बसों की खरीद

भाजपा विधायक विजेंद्र गुप्ता ने आरोप लगाया था कि जुलाई 2019 में दिल्ली सरकार ने 1,000 लो-फ्लोर बसों की खरीद और उनके रखरखाव में पांच हजार करोड़ रुपए का घोटाला किया है। मेंटेनेंस का ठेका भी बस सप्लाई करने वाली कंपनी को ही दे दिया गया है जो गलत है।

बसों के सड़कों पर उतरते ही मेंटेनेंस कॉन्ट्रैक्ट भी लागू हो जाएगा जबकि बसों की तीन साल की वारंटी होनी चाहिए।

इस दौरान गड़बड़ियां आने पर मेंटेनेंस के लिए एक भी पैसे नहीं देने होते हैं। तत्कालीन उपराज्यपाल अनिल बैजल के निर्देश पर तीन सदस्यीय समिति ने एक रिपोर्ट पेश की थी।

समिति ने एनुअल मेंटेनेंस कॉन्ट्रैक्ट में खामियां पाई थीं और इसे खत्म करने की सिफारिश की थी।

19 अगस्त से दिल्ली में आप और भाजपा के बीच तकरार

दिल्ली में आप और भाजपा के बीच 19 अगस्त से तकरार चल रही है। दरअसल, आबकारी नीति को लेकर दिल्ली में पहली बार 19 अगस्त को मनीष सिसोदिया के घर पर CBI ने छापेमारी की थी। यह छापेमारी करीब 14 घंटे तक चली थी, जिसके बाद CBI ने इस मामले में PMLA कानून के तहत केस दर्ज कर लिया था। भाजपा का आरोप है कि यह शराब घोटाला 2,000 करोड़ रुपए का है। हालांकि घोटाले को लेकर CBI ने बड़े दावे किए। जांच एजेंसी के मुताबिक, इसकी पटकथा दिल्ली नहीं, मुंबई में लिखी गई थी। इसे तैयार करने में मुंबई की इवेंट मैनेजमेंट कंपनी के पूर्व CEO का नाम सामने आया है।

वैशाली में प्रेमी जोड़े को पकड़ा, बॉयफ्रेंड के सामने गैंगरेप

रेप का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर डाला; लड़की की हालत गंभीर, 5 पर एफआईआर

हाजीपुर (वैशाली)। बिहार के वैशाली में कुछ युवकों ने खेत में एक प्रेमी जोड़े को पकड़ा। इसके बाद 4-5 युवकों ने दोनों के कपड़े उतरवाए। मारपीट और गाली-गलौज की। पुलिस को बुलाने की धमकी देकर युवकों ने बॉयफ्रेंड के सामने ही लड़की के साथ गैंगरेप किया। लड़की जब बेहोश हो गई, तो युवक भाग गए। युवकों ने इसका वीडियो भी बना लिया और उसे सोशल मीडिया पर डाल दिया। लड़की की उम्र 15 साल है। लड़की की हालत गंभीर है। उसका

इलाज जारी है। पुलिस में पांच युवकों पर केस दर्ज किया है। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी जारी है।

मामला जिले के जंदाहा थाना इलाके का है। शनिवार को 9वीं की छात्रा (15) अपने बॉयफ्रेंड से मिलने सुनसान इलाके में पहुंची थी। खेत में दोनों बातचीत कर रहे थे। तभी वहां कुछ युवक आ गए। दोनों के साथ अभद्रता करने लगे। लड़कों ने दोनों के कपड़े उतरवाए और मारपीट की। फिर पुलिस को बुलाने की धमकी देकर लड़की के साथ गैंगरेप किया। दोनों छोड़ने की गुहार लगाते रहे, पैर भी पकड़े। लेकिन युवकों ने नहीं छोड़ा।

लड़की बेहोश हुई तो आरोपी भाग गए

इस दौरान एक लड़का पूरी घटना का वीडियो बनाता रहा। रेप से लड़की जब बेहोश हो गई तो युवक फरार हो गए। इसके बाद वीडियो भी वायरल कर दिया। घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया। आसपास के लोगों की भीड़ लग गई।

सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई। पुलिस का कहना है कि वायरल वीडियो के आधार पर आरोपियों की पहचान की जा रही है। लड़की का मेडिकल करवाया जा रहा है। कुछ लोगों से पूछताछ की जा रही है। आरोपियों की तलाश में छापेमारी चल रही है।

रांची के स्कूल में छात्राओं को उठा लेने की धमकी

मुस्लिम युवक हथियार लेकर पहुंचे, बोले- दोस्ती करो नहीं तो उठा लेंगे; एफआईआर

रांची। झारखंड की राजधानी रांची के एक स्कूल में मुस्लिम युवकों ने हथियार लहराकर लड़कियों को दोस्ती करने के लिए धमकाया। युवकों ने कहा- दोस्ती कर लो, नहीं तो उठा ले जाएंगे। बताया जाता है कि इसका विरोध करने पर स्कूल के छात्रों से मारपीट भी की गई। पुलिस ने इस मामले में युवकों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है।

घटना शनिवार को ओरमांझी के प्रोजेक्ट प्लस 2 स्कूल में हुई। लड़कियों ने इसकी जानकारी परिवार

वालों को दी। घटना के बाद शनिवार को स्कूल कैंपस में बैठक हुई। बैठक में स्थानीय जनप्रतिनिधि, समाजसेवी, पदाधिकारी और स्कूल के शिक्षक शामिल हुए। इसमें छात्राओं से घटना के बारे में विस्तृत जानकारी ली गई।

उसके बाद मामले की पूरी जानकारी ओरमांझी थाने को दी गई। घटना के बाद स्थानीय लोगों में काफी आक्रोश है। एक खास समुदाय द्वारा धमकी दिए जाने से जुड़े सवाल के जवाब में पुलिस ने कहा कि टीम जांच करेगी। बताया जा रहा है कि पांच नामजद समेत कुछ और युवकों पर एफआईआर दर्ज की है। पुलिस ने नाम बताने से इनकार किया है।

घटना के संबंध में ग्रामीण एसपी नौशाद आलम ने बताया कि एसएसपी को सूचना मिली थी। एफआईआर दर्ज की गई है। जांच शुरू की जा रही है। हरकत करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने बताया कि पांच मेंबर्स की एसआईटी बनाई गई है। इसका नेतृत्व स्थानीय DSP कर रहे हैं।

मेघालय की जोवाई जेल से भागे छह कैदियों में से चार को भीड़ ने पीट-पीटकर मार डाला

शिलॉन्ग। मेघालय की जयंतिया पहाड़ियों के शांगपुंग गांव में मॉब लिंचिंग का एक सनसनीखेज मामला सामने आया है। यहां शनिवार को गांव के कुछ लोगों ने चार लोगों की पीट-पीटकर हत्या कर दी। बताया जा रहा है कि भीड़ को उन चार लोगों के बारे में यह संदेह हुआ था कि वो चारों जोवाई जिला जेल से फरार हुए हैं और उनका संबंध अपराधियों के एक गिरोह से है।

घटना का वीडियो भी आया सामने

भीड़ के इस हमले का वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वीडियो में देखा जा सकता है कि गांववाले लाठी, डंडो और लोहे की रॉड से कथित तौर पर फरार कैदियों को पीटने के लिए भाग रहे हैं। आपको बता दें कि 10 सितंबर को जोवाई जिला जेल से एक गार्ड पर चाकू से हमला कर एक गिरोह के चार अपराधी फरार हो गए थे। इन चार अपराधियों के नाम आई लव यू तलंग, रमेश डाखर, मार्सकी तारियांग, रिक्मेनलांग लामारे, शिदोरकी दखर और लोदेस्टार तांग था।

अधिकारियों ने बताई पूरी घटना

कारागार महानिरीक्षक जेरी एफके मारक ने पीटीआई को बताया है कि शनिवार सुबह करीब दो बजे छह कैदी जिला जेल से फरार हो गए। थे। जेल के अधिकारी प्रारंभिक जांच कर रहे हैं। शांगपुंग के मुखिया आर राबोन ने कहा कि वे लोग भागकर शांगपुंग इलाके के एक जंगल में छिप गए। उनकी जानकारी लोगों को तब लगी जब एक अपराधी खाने का कुछ सामान लेने के लिए एक चाय की दुकान र पहुंचा और ऐसे में उस अपराधी की पहचान हो गई।अपराधी की पहचान कुछ देर में ही पूरे गांव में फैल गई। इसके बाद गांव के लोग अपराधियों की तलाश में जंगल की तरफ भागे और गांववालों ने अपराधियों को घेर लिया। इसके बाद ग्रामीणों ने फरार अपराधियों की पिटाई शुरू कर दी। सामने आए वीडियो में, भीड़ को बेरहमी से बांस की डंडियों से तब तक मारते देखा जा सकता है जब तक कि वे गिर नहीं जाते। गांव के मुखिया ने इस घटना में चार लोगों की मौत की पुष्टि की है।

डिवोर्स सेलिब्रेशन | विवाद के बाद आयोजकों का फैसला; 200 लोग करने वाले थे सेलिब्रेट

भोपाल में तलाकशुदा लोगों का डिवोर्स सेलिब्रेशन निरस्त

भोपाल। भोपाल में होने वाला तलाकशुदा लोगों का डिवोर्स सेलिब्रेशन कार्यक्रम निरस्त हो गया है। दरअसल अपने आप में अनोखा ये आयोजन विवादों में घिर गया था। संस्कृति बचाओ मंच ने भी इसका विरोध किया था और चेतावनी दी थी। जिसके बाद आयोजकों ने कार्यक्रम नहीं करने का फैसला लिया है। बता दें कि भाई वेलफेयर सोसायटी ने विवाह विच्छेद समारोह का आयोजन रखा था, जो 18 सितंबर को होने वाला था।

दरअसल भोपाल में तलाकशुदा पति अपने तलाक का जश्न मनाने की तैयारी में थे। 18 सितंबर को बाकायदा इसके लिए डिवोर्स पार्टी रखी गई थी। जहां पति, पत्नियों से अलग होने की खुशी को सेलिब्रेट करने वाले थे। इस पार्टी में लोगों को बुलाने के लिए बिल्कुल शादी की तरह कार्ड तक बांटे गए थे।

पार्टी ऑर्गनाइज कर रही भाई वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष जकी अहमद ने बताया था कि इस पार्टी में 200 ऐसे लोग शामिल होंगे, जिनका कड़े संघर्ष के बाद तलाक हुआ है। जकी बताते हैं कि पार्टी किसी को ठेस पहुंचाने के मकसद से नहीं कर रहे हैं। संस्था का सिर्फ इतना ही उद्देश्य है कि पुरानी जिंदगी को तिलांजलि देकर नई जिंदगी की शुरुआत की जाए। संस्था ने पत्नियों से अलग होने, पुरानी जिंदगी को तिलांजलि देकर नई जिंदगी की शुरू करने वाले पतियों के सम्मान में यह कार्यक्रम रखा है।

शादी की यादगार चीजों का होना था विसर्जन

जकी ने बताया कि प्रोग्राम 18 सितंबर को सुबह 11 बजे रायसेन रोड के एक फार्म एंड रिसोर्ट में होगा। समारोह में जयमाला विसर्जन, सद्बुद्धि शुद्धिकरण यज्ञ, बारात वापसी, पुरुष संगीत, मानव सम्मान में कार्य करने के लिए सात कदम और सात प्रतिज्ञा ली जाएंगी।

यहां मुख्य अतिथि द्वारा विवाह विच्छेद की डिक्री भी दी जाएगी। इस दौरान समारोह में पति शादी की यादगार चीजों जैसे पगड़ी, जयमाला, फेरे की फोटो इन सभी का विसर्जन करेंगे, जिससे वे पुरानी बातें भूल एक बार फिर नए जीवन की शुरुआत कर सकें।

पत्नियों के अत्याचारों से दुखी पति होंगे शामिल

अध्यक्ष जकी अहमद का कहना कि हम ऐसे पतियों के लिए यह कार्यक्रम कर रहे हैं जो पत्नी के अत्याचारों से दुखी होकर हताश-निराश हैं। कई तो टूटी शादियों में लड़की पक्ष से मिली प्रताड़ना, कानूनी लड़ाई और आर्थिक मोर्चे से टूटकर खुदकुशी तक कर लेते हैं। ऐसे लोगों को संबल देने के लिए, उन्हें सम्मानित करने के लिए हमने यह आयोजन करने का फैसला किया है। लोग शादी का जश्न मनाते हैं, लेकिन तलाक का उत्सव उससे ज्यादा जरूरी है। हर पुरुष अत्याचारी नहीं होता, इसी तरह हर स्त्री बेचारी नहीं होती।

अध्यक्ष जकी ने बताया भाई वेलफेयर सोसायटी की शुरुआत 2014 में हुई थी। संस्थान ने प्रताड़ित पुरुषों के लिए हेल्पलाइन नंबर भी जारी किया है। हमारी कोशिश रहती है कि पीड़ित किसी भी तरह से डिप्रेशन का शिकार होकर खुदकुशी जैसे कदम ना उठाएं।

शार्ट न्यूज

स्कूल में बच्चे ने पैंट में कर दिया शौच, टीचर ने उसके ऊपर फेंका गरम पानी

बेंगलुरु। कर्नाटक में रायचूर जिले के स्कूल में 7 साल के एक छात्र ने पैंट में शौच कर दिया। इससे गुस्साए टीचर ने उसके ऊपर गर्म पानी डाल दिया, जिससे वह झुलस गया। रिपोर्ट के मुताबिक, पीड़ित बच्चा 40 फीसदी तक जल गया है। बच्चे को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। शिक्षा विभाग को भी इसमें एक टीचर के शामिल होने का संदेह है, जो घटना के बाद से ही फरार है। पुलिस टीम ने बताया कि यह घटना 2 सितंबर को जिले के मस्की तालुक के संते कल्लूर गांव में हुई। शिक्षा अधिकारियों के एक दल ने अस्पताल में भर्ती छात्र से मुलाकात की। वे स्टूडेंट से घटना के बारे में जानकारी लेना चाहते थे, लेकिन वह बोलने की स्थिति में नहीं है। उसके माता-पिता को भी इस बारे में पता नहीं है। पुलिस ने इस मामले में ग्रामीणों के बयान दर्ज किए हैं। गांव के लोग इस बारे में बातचीत कर रहे हैं कि यह काम एक शिक्षक का है, जो घटना के बाद से गायब है। पुलिस ने बताया कि मामले की जांच जारी है। पुलिस ने आरोपी टीचर की पहचान कर ली है। उसका नाम हुलिजेप्पा है। घटना के बाद आरोपी ने पीड़ित बच्चे के पेरेंट्स को शिकायत दर्ज न करने की धमकी भी दी।

श्रीनगर में दुष्कर्म का आरोपी गिरफ्तार

श्रीनगर। जम्मू कश्मीर पुलिस ने रविवार को श्रीनगर के लाल बाजार इलाके में नाबालिग लड़की के साथ दुष्कर्म के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार आरोपी की पहचान गुलशनबाग के साजिद अली सोफी के रूप मे की गई है। उसके खिलाफ लाल बाजार थाने में भारतीय दड संहिता की धारा 376 और पोस्को एक्ट की धारा 3/4 के अंतर्गत मामला दर्ज किया गया है।

भूमि रिकॉर्ड में हेराफेरी के आरोप में सरकारी अधिकारियों समेत पांच गिरफ्तार

इंफाल। मणिपुर पुलिस ने भूमि रिकॉर्ड की हेराफेरी और जालसाजी एवं 35 फर्जी भूमि पट्टा जारी करने के आरोप में वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों समेत पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। मणिपुर के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक क्ले खोंगसाई ने रविवार को बताया कि मुख्य आरोपी चंदेल जिले के उपायुक्त मोहम्मद नसीमुद्दीन को भी रविवार को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार के एक अनुमंडल पदाधिकारी (एसडीओ) शिजालेम्बी के अनुसार 17-चाओबोक शीट नंबर चार के भूमि रिकॉर्ड में हेराफेरी की गई और फर्जी भूमि पट्टा जारी किया गया। जांच के दौरान लिलोंग शांतिपुर के टी निपामाचा सिंह (सेवानिवृत्त एसके), लिलोंग बाजार के शाह दाउद (निलंबित एलए एसके), लिलोंग कालेखोंग मखोंग के मोहम्मद अलाउद्दीन खान (मंडोल) और कुछ अन्य लोग इस गड़बड़ी में शामिल पाए गए।जांच में पाया गया कि कयामगेई मुस्लिम अवांग लीकाई के मोहम्मद नसीमुद्दीन ने फर्जी दस्तावेज जारी किए थे, जो उस समय एसके इरोंग चेसाबा के प्रभारी थे। जब इस मामले का खुलासा हुआ तब वह चंदेल के एसडीसी के पद पर तैनात थे और गिरफ्तारी से बच रहे थे। लेकिन आखिरकार पुलिस उन्हें गिरफ्तार करने में सफल रही और वह भूमि रिकॉर्ड से छेड़छाड़ करने में भी शामिल पाए गए।

फिल्म, राजनीतिक हस्तियों ने कृष्णनम राजू को दी श्रद्धांजलि

हैदराबाद। पूर्व केन्द्रीय मंत्री और दिग्गज फिल्म अभिनेता कृष्णनम राजू को उनके निवास जुबली हिल्स पर रविवार को कई फिल्म और राजनीतिक हस्तियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।श्री राजू का आज तड़के एआईजी अस्पताल में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया था। राजू को श्रद्धांजलि देने वालों में केन्द्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी, तेलंगाना के मंत्री तलासनी श्रीनिवास यादव, तेलगुदेशम पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री एन चन्द्रबाबू नायडू, सुपरस्टार जी कृष्णा तथा अभिनेताओं में के चिरंजीवी, दुगुबत्ती वेंकटेश, महेश बाबू, निर्देशक के राघवेन्द्र राव, महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल के विद्यासागर राव, जनसेना पार्टी के अध्यक्ष पवन कल्याण, अभिनेता मोहनबाबू जूनियर एनटीआर मुरली मोहन और अभिनेत्री जयासुधा थी। राजू का अंतिम संस्कार सोमवार को राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा।केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ट्वीट कर दिग्गज अभिनेता और पूर्व सांसद कृष्णनम राजू गुरु के निधन पर शोक व्यक्त किया। आंध्र प्रदेश के राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन ने भी पूर्व केंद्रीय मंत्री और तेलुगु फिल्म अभिनेता यू.वी. कृष्णम राजू के निधन पर दुख व्यक्त किया है।

रूद्रपुर में पेट्रोल पंप कर्मियों से मारपीट के तीन आरोपी गिरफ्तार

नैनीताल। उत्तराखंड के उधमसिंह नगर जनपद के रूद्रपुर में पुलिस ने पेट्रोल पंप कर्मियों से मारपीट व लूटपाट के तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। रूद्रपुर के पुलिस अधीक्षक मनोज कत्याल ने रविवार को इस मामले को खुलासा करते हुए बताया कि गुरूवार की रात को रूद्रपुर के डीडी चौक स्थित भारत पेट्रोल पंप पर तीन बदमाश पहुंचे और उन्होंने पेट्रोल भरवाने के बहाने पेट्रोल पंप कर्मियों से मारपीट शुरू कर दी और बाद में आरोपियों ने कर्मचारियों पर तमंचा तानकर लूटपाट करने की कोशिश भी की। मौके पर लोगों के एकत्र होने के चलते आरोपी लूटपाट करने में सफल नहीं हो पाये और भागने में कामयाब हो गये। अगले दिन पेट्रोल पंप प्रबंधक मनोज कुमार की शिकायत पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया और आरोपियों की गिरफ्तार के लिये टीमों का गठन किया। तीनों आरोपियों की पहचान नावेद निवासी साईं मंदिर, रूद्रपुर, प्रदीप निवासी रामपुरा, वार्ड नंबर-6, रूद्रपुर व गुरविंदर सिंह उर्फ प्रीत निवासी वार्ड नंबर 37, रवीन्द्र नगर, रूद्रपुर के रूप में हुई है। तीनों को देर रात को मोदी मैदान से गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने वारदात में प्रयुक्त 32 बोर का तमंचा व मोटर साइकिल को भी बरामद कर लिया है। उन्होंने बताया कि अरोपियों के खिलाफ शस्त्र अधिनियम की धाराओं में वृद्धि कर दी गयी है। साथ ही आरोपियों के आपराधिक इतिहास को भी खंगाला जा रहा है।

आंध्र प्रदेश में करीब 50 लाख रुपए का सोना जब्त

हैदराबाद। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) के अधिकारी ने रविवार को आंध्र प्रदेश के शहर विजयवाड़ा अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एक महिला यात्री को तस्करी के आरोप में हिरासत में लिया और उसके पास से 50 लाख रुपये से अधिक का सोना बरामद किया। डीआरआई ने बताया कि खुफिया जानकारी के आधार पर सूचना मिली कि एक महिला यात्री एयर इंडिया एक्सप्रेस की उड़ान से संयुक्त अरब अमीरात से आ रही है, जो अवैध रूप से भारत में सोना तस्करी करती है। बाद उनकी टीम ने विजयवाड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से महिला को हिरासत में लिया। उसके पास सोने की चूड़ियां और चेन जब्त किये गये जिनकी कीमत 50,95,600 रुपये है।

शूटर दीपक मुंडी और उसके साथी सात दिन के पुलिस रिमांड पर

मानसा। प्रसिद्ध पंजाबी गायक शुभदीप उर्फ सिद्धू मूसेवाला की हत्या में शामिल छठा गैंगस्टर दीपक मुंडी तथा उसके दो साथी कपिल पंडित तथा राजिंदर जोकर को आज अदालत में पेश किया जहां उन्हें सात दिन के पुलिस रिमांड पर भेज दिया। इन आरोपियों को पंजाब पुलिस तथा दिल्ली पुलिस के साझा आपरेशन के तहत नेपाल बार्डर के समीप से गिरफ्तार किया गया । ये कनाडा में बैठे हत्याकांड के मास्टरमाइंड गोल्डी बराड की मदद मिल रही थी और जाली पासपोर्ट पर विदेश भेजने की तैयारी हो रही थी। कपिल तथा राजिंदर ने शूटरों को हथियार ,रहने और ,खाने का सामान मुहैया कराया था। अब तक चार शूटर जेल में हैं तथा दो पुलिस मुठभेड़ में मार गिराये। पुलिस इनको चार्जशीट में नामजद करने की तैयारी में है। पुलिस महानिदेशक गौरव यादव ने आज पत्रकारों को बताया कि विदेश में बैठे गैंगस्टर गोल्डी बराड़ को भी भारत लाने की कोशिश की जा रही है । इनसे पूछताछ के बाद जो कुछ सामने आयेगा उसके आधार पर आगे की कार्रवाई की जायेगी।

हरियाणा : सोनाली फोगाट मौत मामले में सीबीआई जांच की मांग

हिसार में हुई खाप महापंचायत का सरकार को अल्टीमेटम

हिसार। हरियाणा की भाजपा नेता सोनाली फोगाट की मौत मामले में सीबीआई जांच की मांग को लेकर रविवार को हिसार की जाट धर्मशाला में में सर्व जातीय खाप महापंचायत हुई। इस महापंचायत में सोनाली फोगाट की बेटी यशोधरा और परिवार के अन्य सदस्यों ने भी भाग लिया। सर्व जातीय खाप महापंचायत ने सरकार को सोनाली की मौत के मामले में 23 सितंबर तक सीबीआई जांच की सिफारिश करने का अल्टीमेटम दिया है। सोनाली फोगाट की मौत के मामले में गोवा पुलिस की जांच पर असंतोष व्यक्त करते हुए उनका परिवार इस मामले की सीबीआई जांच की मांग कर रहा है।

महापंचायत में निर्णय हुआ कि अगर सरकार मामले की सीबीआई से जांच कराने में विफल रहती है, तो 24 सितंबर को ऐसी ही एक और महापंचायत आयोजित की जाएगी। पूरे हरियाणा और अन्य राज्यों के खाप

प्रतिनिधि 24 सितंबर को बैठक में भाग लेंगे और कड़ा निर्णय लेंगे। आज की इस महापंचायत में 15 सदस्यीय कमेटी का गठन किया गया। इसमें सोनाली के परिवार के पांच सदस्य भी शामिल हैं। यशोधरा ने कहा कि मेरी मां को न्याय दिलाने के लिए मेरा समर्थन करें।

खाप महापंचायत के दौरान सोनाली फोगाट की बेटी यशोधरा फोगाट ने कहा कि हम मामले की सीबीआई जांच की मांग करते हैं। हमें अब सरकार से कोई उम्मीद नहीं, उनसे कोई आश्वासन नहीं मिला। हमारी मांग है कि मामले की सीबीआई जांच हो। मुझे और मेरे परिवार को सुरक्षा चाहिए।

वहीं, सोनाली फोगाट हत्याकांड पर हरियाणा के सीएम मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि हमने गोवा सरकार से लिखित में सीबीआई जांच कराने की मांग की थी, लेकिन उन्होंने कहा है कि पहले गोवा पुलिस अपनी जांच पूरी करेगी और अगर परिवार इससे संतुष्ट नहीं है तो जांच सीबीआई को सौंप दी जाएगी।

बता दें कि, बीते दिनों गोवा पुलिस की एक टीम ने इस हत्याकांड की जांच के लिए हिसार से लेकर गुरुग्राम और नोएडा तक जांच-पड़ताल कर परिवार और अन्य लोगों से पूछताछ कर सबूत जुटाए थे।

गौरतलब है कि 42 वर्षीय सोनाली फोगाट की 23 अगस्त को उत्तरी गोवा के कर्लीज रेस्तरां में कथित तौर पर ड्रग्स दिए जाने के बाद अंजुना के एक निजी अस्पताल में मृत लाया गया था। हालांकि शुरू में यह बताया गया था कि सोनाली की मौत दिल का दौरा पड़ने से हुई थी, लेकिन बाद में किए गए पोस्टमॉर्टम से पता चला कि उसके शरीर पर कई अंदरूनी चोटें थीं।

हालांकि, भाजपा नेता की मौत को हत्या का मामला माना जा रहा है। सोनाली पूर्व टिक-टॉक स्टार होने के साथ ही एक टीवी रियलिटी शो बिग बॉस में भी नजर आई थीं।

गोवा पुलिस द्वारा इस मामले में फोगाट के पीए सुधीर सांगवान, एक अन्य सहयोगी सुखविंदर सिंह, गोवा के रेस्तरां के मालिक एडविन नून्स, कथित ड्रग तस्कर दत्ताप्रसाद गांवकर और रामदास मांड्रेकर सहित कुल पांच लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

प्रत्येक आपदा प्रभावित परिवार को आवास व राहत राशि दी जायेगी

नैनीताल। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को पिथौरागढ़ के रांथी गांव पहुंचकर आपदाग्रस्त खोतिला के ग्रामीणों से मुलाकात की और उनके दर्द को जाना। उन्होंने कहा कि इस आपदा में 58 मकान क्षतिग्रस्त हुए हैं। सरकार ग्रामीणों का हरसंभव पुनर्वास करेगी। पीड़ितों को घर व राहत राशि मुहैया करायी जायेगी। धामी देहरादून से सुबह धारचूला के जवाहर सिंह नबियाल हैलीपैड पहुंचे और उन्होंने इस दौरान आपदाग्रस्त क्षेत्र का हवाई सर्वेक्षण किया। इसके बाद उन्होने पीड़ित ग्रामीणों से मुलाकात की और उनके दर्द को सुना। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर आपदा पीड़ितों को ढांढस बंधाया और उन्हें हरसंभव मदद का भरोसा दिलाया। इस दौरान ग्रामीणों की आंखों में आपदा के जख्म साफ दिखायी दे रहे थे। मुख्यमंत्री के सामने ग्रामीण मदद की गुहार लगाते नजर आये। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर आपदा प्रभावित छह परिवारों को आपदा राहत के चेक दिये। आपदा में मृत महिला पशुपति देवी के परिजनों को चार लाख रूपये की राहत राशि उपलब्ध करायी गयी। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर कहा कि सरकार आपदा प्रभावितों के दुख दर्द में इस समय उनके साथ खड़ी है और उन्हें हर संभव मदद दी जायेगी। सरकार प्रत्येक आपदा पीड़ित को आवास उपलब्ध कराने के साथ ही उन्हें तत्काल राहत राशि उपलब्ध करायेगी। मुख्यमंत्री ने काली नदी के किनारे तटबंध निर्माण कार्य का मुआयना किया और इसके लिये जिलाधिकारी डा. आशीष चौहान की पीठ थपथपायी। गौरतलब है कि नौ सितम्बर की रात को पिथौरागढ़ के धारचूला क्षेत्र भी भीषण बरसात व अंतर्राष्ट्रीय सीमा से सटे नेपाल के लास्को गधेरे में बादल फटने से काली नदी का जलस्तर यकायक बढ़ गया जिससे काली नदी के किनारे बसे रांथी गांव के तल्ली खोतिला के 50 से अधिक मकान पानी में डूब गये।

तेलुगु अभिनेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री कृष्णम राजू का निधन

हैदराबाद। टॉलीवुड अभिनेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री उप्पलपति वेंकट कृष्णम राजू का रविवार तड़के यहां एक निजी अस्पताल में इलाज के दौरान निधन हो गया। वह 83 वर्ष के थे। राजू के परिवार में पत्नी और तीन बेटियां हैं। प्रशंसकों और तेलुगु उद्योग के बीच अपनी विद्रोही अभिनय शैली के लिए 'विद्रोही स्टार' के रूप में लोकप्रिय श्री राजू स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से जूझ रहे थे। उनका गच्चीबौली के एआईजी अस्पतालों में इलाज चल रहा था जहां आज तड़के तीन बजकर 25 मिनट पर उनका निधन हो गया।

बीस जनवरी, 1940 को पश्चिम गोदावरी जिले के मोगलथुर में जन्में राजू का विवाह सीता देवी से हुआ था। उनकी मृत्यु के बाद उन्होंने 20 सितंबर 1996 को श्यामला देवी से शादी की जिनसे उनकी तीन बेटियां हैं। फिल्म निर्माता यू. सूर्यनारायण राजू उनके छोटे भाई हैं और अभिनेता प्रभास उनके भतीजे हैं।

अगले 10 दिनों में नयी पार्टी की घोषणा करेंगे गुलाम नबी

श्रीनगर। हाल में कांग्रेस से इस्तीफा दे चुके वरिष्ठ नेता गुलाम नबी आजाद ने कहा कि वह अगले 10 दिनों में अपनी नयी राजनीतिक पार्टी के नाम की घोषणा करेंगे।

आजाद ने अखिल भारतीय प्रदेश कांग्रेस कमेटी से अलग होने के बाद उत्तरी कश्मीर के बारामूला जिले में डाक बंगलो में अपनी पहली सार्वजनिक सभा को संबोधित करते हुए कहा कि वह एक नयी राजनीतिक पार्टी बनायेंगे और अगले दस दिनों के दौरान उसके नाम की घोषणा करेंगे।

उन्होंने कहा, जम्मू कश्मीर में धारा

370 को वापस लाने के लिए लोकसभा में दो तिहाई बहुमत और राज्यसभा में 150 सदस्य होने चाहिए, यह कहां से आएगा।

मैं धारा 370 पर लोगों को गुमराह क्यों करुं। उन्होंने दोहराया कि वह जम्मू कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल करने के लिए लड़ते रहेंगे, कोई बाहरी व्यक्ति जमीन नहीं खरीदेगा और न ही बाहरी व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा।

उन्होंने नेताओं को चुनौती देते हुए कहा कि वह उनकी सोच को नहीं मार सकते है इसके लिए उन्हें गुलाम नबी आजाद को मारना होगा। उन्होंने कहा, मैं किसी को भी धर्म, राजनीति और क्षेत्रीय मुद्दों के नाम पर वोट देने की अनुमति नहीं दूंगा और चाहे मैं जीतू या हार जाऊं।

उन्होंने लोगों को आगाह करते हुए कहा, मैंने लोगों से कहा कि वह मेरा समर्थन करें, मैं उनके जीवन को समृद्ध करने के लिए अपना खून दूंगा। मैं लोगों से नहीं कहूंगा कि वह मुझे मुख्यमंत्री बनाएं और मैं उनके लिए आसमान से तारे ला दूंगा यह संभव नहीं है गुमराह न हो।

आजाद ने कहा, जम्मू कश्मीर के लोगों के मुख्यमंत्री के रुप में मेरा एक सपना था कि मैं एक खुशहाल और समृद्ध कश्मीर देखूं और राज्य के विकास के लिए मैंने न केवल दो पारियों बल्कि तीन पारियों में काम की शुरुआत की थी।

एसडीआरएफ ने रेस्क्यू कार्यों के दौरान चार शव किये बरामद

देहरादून। उत्तराखंड राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) ने पिछले 24 घण्टे में राज्य के विभिन्न स्थानों पर राहत व बचाव कार्यों के दौरान अनेक लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया जबकि चार लोगों के शव भी बरामद कर पुलिस के सुपुर्द किये हैं।

एसडीआरएफ प्रवक्ता ललिता दास नेगी ने रविवार को बताया कि राज्य के जनपद पिथौरागढ़ अन्तर्गत, धारचूला में काली नदी का जलस्तर बढ़ने से ब्यास नगर खटोली गाँव में आसपास के कई मकान इसकी जद में आ गए। सूचना प्राप्त होने पर रेस्क्यू टीम उप निरीक्षक (एसआई) देवेन्द्र कुमार के नेतृत्व में मौके पर पहुंची। जहां काली नदी के कारण, 12 से 14 लोगो के घर पानी में डूब गये। रेस्क्यू टीम द्वारा घटनास्थल पर सर्चिंग करते हुए एक डूबी हुई महिला पशुपति देवी, उम्र -65 वर्ष पत्नी मान बहादुर का शव बरामद कर सिविल पुलिस के सुपर्द किया।

श्रीमती नेगी ने बताया कि दूसरे रेस्क्यू कार्य के दौरान, देहरादून जिले के त्यूणी में एक माह पूर्व हुई कार दुर्घटना में लापता कार और उसमें सवार व्यक्ति का शव भी बरामद किया गया।

उक्त कार नदी में दिखाई देने की सूचना पर एसडीआरएफ टीम पोस्ट डाकपत्थर से मुख्य आरक्षी सुरेश तोमर के नेतृत्व में गई। जिसने अथक प्रयासों से उक्त वाहन को किनारे पर लाया गया। उससे नवीन शर्मा पुत्र अमित चंद शर्मा का शव बरामद कर किया।

प्रवक्ता ने बताया कि जनपद बागेश्वर अन्तर्गत, कपकोट के तहसीलदार द्वारा एसडीआरएफ को एक वाहन गडेरा में खाई में गिर जाने की सूचना दी गई। मौके पर पहुंचे रेस्क्यू टीम ने रोप के माध्यम से खाई में उतरकर वाहन तक पहुंच बनायीं। दो घायल व्यक्ति को अस्पताल रवाना किया गया। जबकि वाहन में एक व्यक्ति खीम राम, उम्र -55 पुत्र गुमान राम, निवासी ग्राम गडेरा, कपकोट जिला बागेश्वर मृत अवस्था में मिला। टीम द्वारा शव को स्ट्रेचर के माध्यम से खाई से निकालकर जिला पुलिस के सुपुर्द किया गया।

ओडिशा एसटीएफ ने 16 लाख रुपये के नकली नोट जब्त किए

भुवनेश्वर। ओडिशा के राउरकेला में विशेष कार्य बल (एसटीएफ) के अधिकारियों ने एक अंतरराज्यीय अपराधी को गिरफ्तार किया है और उसके पास से करीब 16 लाख रुपए के नकली नोट, एक लैपटॉप और एक रंगीन प्रिंटर जब्त किया है। एसटीएफ सुत्रों ने रविवार को यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि सूचना के आधार पर एसटीएफ ने राउरकेला जिला पुलिस की सहायता से शनिवार को आरोपी एसके अहमद को गिरफ्तार किया। वह दिल्ली के बदरपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत मोल्लरबांध का निवासी है।वर्तमान में वह राउरकेला में रह रहा था।तलाशी के दौरान, उसके पास से 16.11 लाख रुपये के नकली नोट, एक लैपटॉप और एक रंगीन प्रिंटर और अन्य आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद और जब्त किए गए।

पेट्रोल-डीजल 15, सिलेंडर 150 रुपए घटाए सरकार : कांग्रेस

नयी दिल्ली। कांग्रेस ने सरकार पर ईंधन के दाम अंतरराष्ट्रीय आधार पर तय करने की मांग करते हुए कहा है की विश्व बाजार में जिस तरह से कच्चे तेल और गैस के दाम घटे हैं उसके आधार पर पेट्रोल डीजल में 15-15 और गैस सिलेंडर में 150 रुपए तत्काल कम किए जाने चाहिए।

कांग्रेस प्रवक्ता गौरव वल्लभ ने रविवार को यहां पार्टी मुख्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा कि वास्तविक जीडीपी बढ़ नहीं रही है और पेट्रोल तथा डीजल के दाम विश्व बाजार में घटने के बावजूद कम नहीं हो रहे हैं।

उनका कहना था कि ईंधन के दाम विश्व बाजार में सात माह के न्यूनतम स्तर पर हैं और सरकार को इसका लाभ जनता को देना चाहिए।

उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार विश्व बाजार मैं कच्चे तेल के दाम के हिसाब से नहीं बल्कि चुनाव के हिसाब से ईंधन के दाम घटाती है। उनका कहना था कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम बढ़ते हैं तो आधी रात को पेट्रोल डीजल के दाम बढ़ जाते हैं और यदि विश्व बाजार में कच्चे तेल के दाम कम होते हैं तो मोदी सरकार चुप्पी साध लेती है।

प्रवक्ता ने कहा कि पिछले तीन महीने में पेट्रोल डीजल के दामों में 13.33 प्रतिशत की कमी आई है और ईंधन के दाम आई कमी का लाभ किसान को तथा देश की जमात को मिलना चाहिए। इस हिसाब से सरकार अगर ईमानदारी से काम करती है तो पेट्रोल डीजल के दाम में 15 से 20 रुपए तक की तत्काल कमी आ सकती है और इसका लाभ देश की जनता को मिलना चाहिए।

प्रोफ़ेसर गौरव बल्लभ ने कहा कि पिछले तीन महीने के दौरान कच्चे तेल की कीमत में जो कमी आई है उसका लाभ जनता को मिलना चाहिए।

शाह, जगन ने कृष्णम राजू के निधन पर व्यक्त किया शोक

नयी दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री वाई एस जगन मोहन रेड्डी समेत विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने महान तेलुगु अभिनेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री उप्पलपति वेंकट कृष्णम राजू के निधन पर रविवार को शोक व्यक्त किया। राजू का आज तड़के तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद के एआईजी अस्पताल में हृदय गति रुकने से निधन हो गया। शाह ने एक ट्वीट में कहा,यह जानकर दुख हुआ कि तेलुगु सिनेमा के प्यारे सितारे एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री, यू कृष्णम राजू गारू हमें छोड़कर चले गए। उन्होंने अपने बहुमुखी अभिनय से लाखों दिल जीते और समाज की बेहतरी के लिए काम किया। उनका निधन हमारे तेलुगु सिनेमा में एक गहरा शून्य छोड़ गया है। मेरी संवेदना। रेड्डी ने ट्विटर पर कहा,पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता विद्रोही स्टार कृष्णम राजू का निधन दुखद है।

कूनो पालपुर के विस्थापित ग्रामों को राजस्व ग्राम का दर्जा दिया जाएगा: शिवराज सिंह

श्योपुर। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि कूनो नेशनल पार्क से विस्थापित हुए ऐसे ग्राम जो अभी भी मजरे टोले है, उन्हें पूर्ण राजस्व ग्राम का दर्जा दिया जाएगा, यह कार्यवाही आज से ही शुरू कर दी गई है।

चौहान श्योपुर जिले में स्थित कूनों नेशनल पार्क में आयोजित चीता मित्र सम्मेलन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होने कहा कि इस क्षेत्र में 05 स्किल केन्द्र बनाकर क्षेत्रीय युवाओं को रोजगार से जोडने के लिए प्रशिक्षण दिलाकर रोजगार उपलब्ध कराया जायेगा। इस अवसर पर केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद वीडी शर्मा, मप्र के वन मंत्री विजय शाह, वन विभाग के प्रमुख सचिव अशोक वर्णवाल, ग्वालियर-चंबल संभाग के कमिश्नर आशीष सक्सेना सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आगामी 17 सितंबर को चीतों की सौगात देने के लिए कूनो नेशनल पार्क आ रहे है। यह हमारे लिए एक एतिहासिक अवसर है। उन्होने कहा कि हमारे प्रदेश का कूनो नेशनल पार्क अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनायेगा। उन्होने कहा कि एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप पर चीतों की शिफ्टिंग का कार्य एक महत्वपूर्ण कार्य है। कूनो नेशनल पार्क में अफ्रीकन देश नामीबिया से चीतों को यहां बसाया जा रहा है।

शिवराज ने चीतों की रिलीज साइट का किया अवलोकन

श्योपुर। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव एवं केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर के साथ कूनो नेशनल पार्क में 17 सितंबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अफ्रीकन चीतों को रिलीज किये जाने की साइट का अवलोकन किया गया। इस अवसर पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद वी डी शर्मा सहित वन विभाग के आला अफसर मौजूद थे। मुख्यमंत्री द्वारा कूनों नेशनल पार्क में नामीबिया से लाये गये चीतों की पहली खेप की शिफ्टिंग के संबंध में अधिकारियों से चर्चा कर व्यवस्थाओं की समीक्षा भी की गयी।

मोदी नीत सरकार ने चीन के मुद्दे पर देश को गुमराह किया: पवार

एजेंसी

नयी दिल्ली । राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के अध्यक्ष शरद पवार ने रविवार को केंद्र की नरेंद्र मोदी नीत भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार पर जमकर निशाना साधा और आरोप लगाया कि चीन के मुद्दे पर प्रधानमंत्री ने देश को गुमराह किया है।

पवार ने दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में राकांपा के आठवें राष्ट्रीय अधिवेशन को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने दावा किया था कि चीनी सेना ने भारतीय क्षेत्र में प्रवेश नहीं

किया , लेकिन अब यह स्पष्ट है कि उन्होंने गलतबयानी की थी। उन्होने जोर दिया कि चीन के मसले पर मोदी सरकार की विफलता स्पष्ट है।

उन्होंने सवालिया लहजे में कहा, नरेंद्र मोदी सरकार के रहते चीन ने भारतीय सीमा पर एलएसी का लगातार उल्लंघन किया। हम चीनी घुसपैठ के सामने मुखर होकर कार्रवाई क्यों नहीं कर पा रहे हैं। अगर यह हमारी विफलता नहीं है तो क्या है।

अर्थव्यवस्था की स्थिति पर सरकार पर हमला करते हुए श्री पवार ने कहा कि सरकार का दावा है कि भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत हो गयी है जबकि देश बहुत अधिक मुद्रास्फीति और बेरोजगारी का सामना कर रहा है। उन्होने कहा कि केंद्र सरकार की गलत और तर्कहीन नीतियों के कारण आज महंगाई चरम पर है। वहीं रोजगार की समस्याओं के साथ-साथ देश की सुरक्षा को लेकर भी चिंताएं बढ़ गयी हैं। राकांपा नेता ने पार्टी कार्यकर्ताओं से केंद्र सरकार के कुकर्मों को चुनौती देने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर जुटने के लिए तैयार रहने का आह्वान किया। उन्हेंने कहा विपक्षी एकता इसकी सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। लोकतांत्रिक मूल्यों में लगातार गिरावट आ रही है, ऐसे में हमारे देश के युवाओं को आगे आना होगा। अब नयी पीढ़ी को लोकतांत्रिक तरीके से केंद्र सरकार के कुकर्मों के खिलाफ लड़ने के लिए नेतृत्व की भूमिका निभाने की जरूरत है।

मोदी आज करेंगे अंतरराष्ट्रीय डेयरी सम्मेलन का उद्घाटन

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सोमवार को उत्तर प्रदेश में ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट में पूर्वाह्न साढ़े 10 बजे इंटरनेशनल डेयरी फेडरेशन वर्ल्ड डेयरी समिट (आईडीएफ डब्ल्यूडीएस) का उद्घाटन करेंगे।

चार दिवसीय इस सम्मेलन में देश और विदेश के डेयरी उद्योग से जुड़े प्रमुख उद्यमी, विशेषज्ञ, किसान और नीति-निर्माता शामिल होंगे। इस सम्मेलन का विषय 'पोषण और जीविका के लिए डेयरी' है। इसमें 50 देशों के करीब 1500 प्रतिनिधि जुटेंगे। भारत में इस तरह का सम्मेलन इससे पहले 1974 में हुआ था।

भारत में डेयरी उद्योग सहकारिता पर आधारित अपनी तरह उत्कृष्ट मॉडल है। इसके माध्यम से छोटे एवं मध्यम किसानों और खासकर महिलाओं का सशक्तीकरण करने के अवसर प्राप्त होते हैं।

शार्ट न्यूज

सिक्योरिटी गार्ड के सोसायटी का गेट खोलने में हुई देरी, थप्पड़बाज महिला ने मारे 3 थप्पड़

नोएडा। नोएडा हाईराइज सोसायटी में रहने वाले खुद को किसी वीआईपी से कम नहीं समझते है,और उनकी सुरक्षा के लिये सिक्योरिटी गार्ड को तुक्ष्य समझते है यही कारण है की सोसायटी का गेट खोलने में देरी होने पर एक महिला आग बबूला हो कर गार्ड पर हमला कर दिया। और उसे 3 थप्पड़ मारे। इतना ही नहीं वह गार्ड को धमकाते हुए भी नजर आई पूरी घटना गेट पर लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। पूरी घटना नोएडा के फेस-3 में सेक्टर 121 की क्लियो काउंटी सोसाइटी की है। गार्ड की शिकायत पर पुलिस ने गार्ड की शिकायत पर पुलिस ने महिला खिलाफ मुकदमा दर्ज किया। लेकिन महिला को थाने से ही जमानत दे दी गई। सेक्टर 121 की क्लियो काउंटी सोसाइटी मे लगे सीसीटीवी कैमरे कैद थप्पड़बाज महिला का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। जिसमें साफ देखा जा सकता है कि सिक्योरिटी गार्ड के सोसायटी का गेट खोलने में हुई देरी की गुस्ताखी की सजा गुस्से में कार से उतरी महिला ने तडातड थप्पड़ मार कर दी, महिला ने 42 सेकंड में 3 थप्पड़ मारे सिर्फ यही नहीं, वह गार्ड को धमकाती भी नजर आ रही है। इस कारण वहां खड़े उसके साथी गार्ड बचाने की हिम्मत नहीं कर पाए। पूरी घटना नोएडा के कोतवाली फेस-3 में सेक्टर 121 की क्लियो काउंटी सोसाइटी की है। थप्पड़बाज महिला का नाम सुतापा दास है। जो टावर बी-2, फ्लैट नंबर 2404 मे रहती है और कॉलेज में लेक्चरर है। गेट खुलने में चंद मिनट की देरी पर महिला आग बबूला हो गई। वह गेट पर तैनात गार्ड सचिन के पास आई और बिना कुछ पूछे ही उसे मारना शुरू कर दिया। सचिन गार्ड का कहना है, हम आरएफआईडी का काम कर रहे थे। आरएफआईडी पर उनकी गाड़ी का नंबर नहीं आ रहा था। इसके बाद भी मैनुअल करके उनकी गाड़ी अंदर कर दी। इसके बाद भी वह गाड़ी से उतरकर गाली-गलौज करते हुए हमको मारने लगीं। काटकर डालने की धमकी दीं। हमने डायल-112 को फोन किया।

वर्ल्ड डेयरी समिट तैयारियों का जायजा लेने एक्सपो मार्ट सेंटर पहुंचे मुख्यमंत्री योगी

ग्रेटर नोएडा। ग्रेनो एक्सपो मार्ट सेंटर में वर्ल्ड डेयरी समिट का उद्घाटन प्रधानमंत्री आज नरेंद्र मोदी करेंगे। लेकिन इस कार्यक्रम से एक दिन पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तैयारियों का जायजा लेने दो दिवसीय दौरे पर ग्रेटर नोएडा पहुंच गए। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आगमन से पहले पुलिस ने बैरिकेटिग लगा वाहनो के आवा-गमन को रोक दिया था। एयरपोर्ट पर बने हेलीपैड हेलीकॉप्टर के उतरने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सीधे अपने ड्रीम प्रोजेक्ट नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पर चल रहे विकास कार्यो का निरीक्षण किया। मौके पर विधानसभा के विधायक ठाकुर धीरेंद्र सिंह पुलिस कमिश्नर आलोक सिंह व अन्य अधिकारी मौजूद रहे।लगभग 45 मिनट तक एयरपोर्ट का निरीक्षण करने के बाद योगी आदित्यनाथ वहां से सीधे गौतम बुद्ध नगर विश्वविद्यालय की ओर रवाना हुए। इंडिया एक्सपो मार्ट मे को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रस्तावित कार्यक्रम के मद्देनजर तैयारियों का जायजा लेने एक्सपो मार्ट सेंटर पहुंचे थे। इस दौरान सीएम योगी अधिकारियों के साथ कार्यक्रम स्थल पर करीब दो घंटे तक तैयारियों को परखा। एक्सपो मार्ट में कार्यक्रम सभागार, हेलीपैड एवं अन्य व्यवस्थाओं की जानकारी ली। वही डीएम सुहास एलवाई ने कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण अधिकारियों को कार्यक्रम आयोजन, सुरक्षा व्यवस्था सहित अन्य मुद्दों पर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए थे।

बिहार के व्यक्ति ने दो ठेकेदारों पर बेटे को बेचने का केस दर्ज कराया

नोएडा। बिहार के रहने वाले एक व्यक्ति ने दो लोगों पर गांव से उसके बेटे को नोएडा लाकर बेचने का आरोप लगाया है। इस संबंध में सेक्टर-126 थाना पुलिस ने कोर्ट के आदेश पर दो ठेकेदारों के खिलाफ केस दर्ज किया है। पुलिस को दी शिकायत में निमाई मुर्मु ने बताया कि वह बिहार के किशनगंज स्थित डांगपाड़ा के रहने वाले हैं। उनके गांव के ही रहने वाले ठेकेदार नौशाद आलम और ठेकेदार संतलाल मंरडी नोएडा में रहते हैं। वह बिहार से मजदूर लाकर एनसीआर में जगह-जगह भेजते हैं। पीड़ित का कहना है कि दोनों ठेकेदार 13 मार्च को उसके बेटे कीवी राज मुर्मू सहित सात लोगों को अपने साथ नोएडा लेकर आए थे। निमाई का आरोप है कि कुछ दिन उनके बेटे का फोन आया। उसने कहा कि दोनों ठेकेदार उसके शरीर के अंगों को बेचना चाहते हैं। इसको लेकर दोनों आपस में बात कर रहे थे। इसके बाद उनके बेटे का मोबाइल बंद हो गया। जब कीवी से काफी समय तक बात नहीं हुई तो निमाई नोएडा आ गए। उन्होंने नोएडा में अपने बेटे की तलाश की, लेकिन उसका पता नहीं चला। जब दोनों ठेकेदारों से उसके बारे में पूछा तो वह कोई जवाब नहीं दे सके। इसके बाद पीड़ित ने पुलिस को शिकायत दी, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। अब पुलिस ने कोर्ट के आदेश पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कंपनी पर छापा मारकर जीएसटी चोरी पकड़ी

नोएडा। बिना बिल सामान खरीदकर एलईडी टीवी बनाकर बेचने वाली एक कंपनी पर राज्य वाणिज्यकर विभाग गौतमबुद्ध नगर की टीम ने छापा मारा। जांच में एक करोड़ 40 लाख रुपये की जीएसटी चोरी पकड़ी गई है। टीम ने 42 लाख रुपये का सामान जब्त कर लिया है।विभाग के संयुक्त आयुक्त मनोज कुमार विश्वकर्मा ने बताया कि नैक्सॉन इलेट्रॉनिक्स कंपनी वर्ष 2018 में जीएसटी में पंजीकृत हुई थी। तभी से कंपनी जीएसटी की चोरी कर रही थी। कंपनी एलईडी टीवी बनाने का काम करती है। जांच में पता लगा कि कंपनी दिल्ली की गफ्फार बाजार से बिना बिल, बिना ईवेबिल सर्किट, मदर बोर्ड आदि सामान खरीदकर टीवी बनाकर थोक विक्रेता को बेचती है। उन्होंने बताया कि दिल्ली की पांच फर्जी कंपनी से नकली बिल बनाकर इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) ले लेती थी। इनमें दुर्गा ट्रेडिंग, दुर्गा ट्रेडर्स, श्री इंटरप्राइजेज, लाइटिंग पैलेट एलएलपी और एक अन्य कंपनी शामिल है। एलईडी टीवी पर 18 फीसदी जीएसटी लगता है, जिसे ना जमा कर और आईटीसी लेकर कंपनी सरकार से धोखाधड़ी कर रही थी। कंपनी पर एक करोड़ 62 लाख रुपये टैक्स, जुर्माना और ब्याज लगाया गया है। इस पर कंपनी ने अभी तक महज दस लाख रुपये जमा किए हैं। बाकी राशि कंपनी नहीं जमा कर रही है। उन्होंने कहा कि दो से तीन दिन में कंपनी के खिलाफ पुलिस में शिकायत दे दी जाएगी। मुख्यालय को भी इसकी जानकारी भेज दी गई है।

सोमवार को बस ट्रर्मिनल व कमांड कंट्रोल सेंटर का निरीक्षण करेंगे मुख्यमंत्री

नोएडा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सोमवार को नोएडा में सेक्टर-82 बस ट्रर्मिनल व सेक्टर-94 कमांड कंट्रोल सेंटर का निरीक्षण करने आएंगे। दोपहर में करीब आधा घंटे तक दोनों परियोजनाओं का निरीक्षण करेंगे। नवरात्र में इन परियोजनाओं का शुभारंभ किया जा सकता है। मुख्यमंत्री के आने के चलते दोनों परियोजना स्थल के पास सड़क बनाने से लेकर सफाई का काम बड़े स्तर पर चल रहा है। प्राधिकरण का पूरा स्टॉफ व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने में जुट गया है। नोएडा प्राधिकरण के अधिकारियों ने बताया कि मुख्यमंत्री सोमवार को दोपहर 2 बजकर 5 मिनट पर सेक्टर-82 बस टर्मिनल पहुंचेंगे। यहां पर करीब 10 मिनट तक रूककर बस टर्मिनल का जायजा लेंगे। इसके बाद 2 बजकर 25 मिनट पर इंटीग्रेटिड ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम के लिए बनाए गए कमांड कंट्रोल सेंटर पर पहुंचेंगे। यहां भी करीब 10 मिनट तक रूककर निरीक्षण करेंगे। इसके बाद ग्रेटर नोएडा निकल जाएंगे। मुख्यमंत्री के आने का कार्यक्रम जारी होने के बाद शनिवार से नोएडा प्राधिकरण के सभी विभागों की टीमें पूरी तरह से दोनों परियोजना स्थल पर अधूरे काम पूरे करने व साफ-सफाई में जुट गईं।

एमसीडी में होंगी कुल 250 सीट, 42 वार्ड अनुसूचित जाति के लिए रिजर्व

केंद्र ने जारी किया दिल्ली गजट नोटिफिकेशन

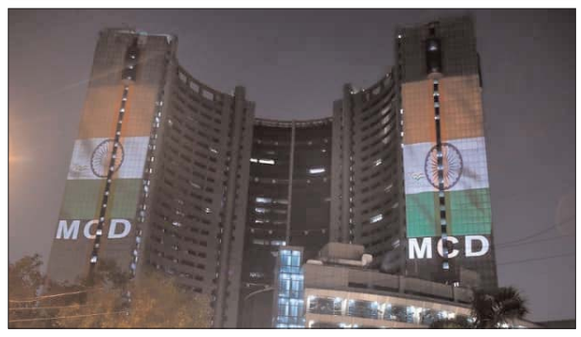

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने दिल्ली में एमसीडी चुनाव कराए जाने की तरफ एक कदम और बढ़ा दिया है। केंद्र ने दिल्ली नगर निगम में सीटों की कुल संख्या 272 से घटाकर 250 निर्धारित कर दी है। शनिवार को जारी दिल्ली गजट नोटिफिकेशन में यह बात कही गई है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने दिल्ली के नगर निगम वार्डों के परिसीमन के लिए जुलाई में तीन सदस्यीय आयोग का गठन किया था।

नोटिफिकेशन में कहा गया कि एमसीडी में अनुसूचित जाति के सदस्यों के लिए उनकी संख्या के अनुपात में आरक्षित सीटों की कुल संख्या भी 42 निर्धारित की गई है। दिल्ली में पहले के तीन नगर निगमों में कुल 272 वार्ड थे। उत्तरी और दक्षिणी निगर निगम में 104-104 वार्ड थे और पूर्वी नगर निगम के अधिकार क्षेत्र में 64 वार्ड थे।

नोटिफिकेशन में कहा गया है कि दिल्ली नगर निगम (संशोधन) अधिनियम, 2022 द्वारा संशोधित दिल्ली नगर निगम अधिनियम 1957 की धारा 3 की उप-धारा (5) के अनुसरण में, केंद्र सरकार इसके द्वारा दिल्ली नगर निगम में पार्षदों की कुल सीटों की संख्या दो सौ पचास (250) के रूप में निर्धारित करती है।

इसके अलावा, पूर्वोक्त अधिनियम की धारा 3 की उप-धारा (6) (संशोधित) के अनुसार, केंद्र सरकार अनुसूचित जाति के सदस्यों के लिए आरक्षित दिल्ली नगर निगम में पार्षदों की कुल सीटों की संख्या भी बयालीस (42) के रूप में निर्धारित करती है। सीटों की कुल संख्या के अनुपात के आधार पर अनुसूचित जातियों की जनसंख्या दिल्ली की कुल जनसंख्या (2011 की जनगणना) से संबंधित है।

संसद ने तीनों नगर निगमों के एकीकरण के लिए 5 अप्रैल को दिल्ली नगर निगम (संशोधन) विधेयक 2022 पारित किया था, जिसके तहत वार्डों की कुल संख्या 250 निश्चित कर दी गई थी।

इसके बाद, केंद्रीय गृह मंत्रालय ने दिल्ली के नगर निगम वार्डों के परिसीमन के लिए जुलाई में तीन सदस्यीय आयोग का गठन किया था।

वर्तमान में चल रही इस कवायद से दिल्ली में निकाय चुनावों का मार्ग प्रशस्त होगा, जो हाल ही में तीन निगमों के एकीकरण के बाद पहली बार होगा।

दिल्ली के चुनाव आयुक्त विजय देव की अध्यक्षता वाले इस परिसीमन आयोग में केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय में संयुक्त सचिव पंकज कुमार सिंह और एमसीडी के अतिरिक्त आयुक्त रणधीर सहाय शामिल हैं। नगर निगम ने जुलाई में कहा था कि आयोग अपने गठन के चार महीने में अपनी रिपोर्ट पेश करेगा।

22 मई को अस्तित्व में आया था एकीकृत एमसीडी

बता दें कि, आईएएस अधिकारियों- अश्विनी कुमार और ज्ञानेश भारती ने क्रमश-एकीकृत दिल्ली नगर निगम के विशेष अधिकारी और आयुक्त के रूप में कार्यभार संभाला था और इस तरह 22 मई को एकीकृत दिल्ली नगर निगम औपचारिक रूप से अस्तित्व में आ गया था।

1958 में स्थापित पूर्ववर्ती एमसीडी को 2012 में मुख्यमंत्री के रूप में शीला दीक्षित के कार्यकाल के दौरान तीन भागों में विभाजित किया गया था। इसे हाल ही में तीन नगर निगमों - उत्तर, दक्षिण और पूर्वी दिल्ली नगर निगमों को मिलाकर फिर से एक कर दिया गया था।

जुलाई में विशेषज्ञों ने कहा था कि यहां निकाय चुनाव 2023 से पहले होने की संभावना नहीं है क्योंकि क्योंकि नगर निगम वार्डों का पुनर्निर्धारण एक व्यापक अभ्यास है।

एलजी विनय सक्सेना अपने ऊपर लगे आरोपों की जांच से बचने के लिए दिल्ली सरकार पर लगा रहे रोज नया आरोप

जिस मामले में सीबीआई पहले ही क्लीनचिट दे चुकी है, एलजी विनय सक्सेना उसकी फिर से जांच कराना चाहते हैं : दुर्गेश पाठक

प्रफुल्ल राय/गौरवशाली भारत

नई दिल्ली। 'आप' विधायक दुर्गेश पाठक ने कहा कि एलजी विनय सक्सेना अपने ऊपर लगे आरोपों की जांच से बचने के लिए दिल्ली सरकार पर रोज एक नया आरोप लगातेहैं। जिस मामले में सीबीआई पहले ही क्लीनचिट दे चुकी है, एलजी विनय सक्सेना उसकी फिर से जांच कराना चाहते हैं। एलजी का एक ही मकसद है कि ठेकेदारों तक संदेश पहुंच जाए कि हिस्सा कहां आना है। एलजी साहब से विनती है कि ठेकेदारों को खुद बुलाकर बात कर लो, हमें क्यों परेशान किया जा रहा है। उप राज्यपाल ने खादी ग्रामोद्योग का चेयरमैन रहते हुए ब्लैक मनी व्हाइट कराया, अपनी ही बेटी को खादी इंडिया लाउंज के इंटीरियर का टेंडर दिया और पटना हाईकोर्ट के ऑर्डर के बावजूद कारीगरों को कैश में भुगतान किया। इतने बड़े आरोप लगने के बावजूद वह जांच के लिए तैयार नहीं हैं।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं विधायक दुर्गेश पाठक ने रविवार को पार्टी मुख्यालय में एक महत्वपूर्ण प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि दिल्ली के एलजी साहब एक महा भ्रष्टाचारी आदमी हैं।

सुबह-सुबह उठकर उनका एक काम है कि हर बार एक नई जांच शुरू करते हैं। इनकी नियत यह है कि हर ठेके में इनको पैसा मिलना चाहिए। एलजी साहब से विनती है कि यह हमसे नहीं हो पाएगा। आप सीधा-सीधा ठेकेदारों को बुला लिया करो और जो भी डील करनी है आप खुद कर लिया करो।

उन्होंने कहा कि आज एलजी साहब ने डीटीसी में घोटाला बताकर जांच के आदेश दे दिए। उनका कहना है कि 1000 बसें खीरीदी गई हैं इसलिए उसकी जांच कराओ। मुझे लगता है कि भ्रष्ट होने के साथ-साथ वह पूरी तरह से निकम्मे व अनपढ़ भी हैं। कुछ पता ही नहीं है, कहीं भी हस्ताक्षर करते चले जा रहे हैं। जिस चीज को लेकर आज इन्होंने सीबीआई की जांच के आदेश दिए हैं, इसी पर पूर्व एलजी द्वारा पहले ही बैठक हुई, उसकी जांच हुई और उन्होंने क्लीनचिट दे दिया। जिस चीज का टेंडर ही नहीं हुआ, आप उसकी जांच करने के लिए कह रहे हैं। दुर्गेश पाठक ने कहा कि मुझे समझ नहीं आ रहा है कि आखिर समस्या क्या है। एक ही जांच आप कितनी बार कराओगे? इनका एक ही मकसद है कि ठेकेदारों तक संदेश पहुंच जाए कि हिस्सा कहां आना है। एलजी से साहब से हाथ जोड़कर विनती करते हैं कि हमसे यह नहीं हो पाएगा। ठेकेदारों को खुद बुलाकर बात करलो, हमें क्यों परेशान किया जा रहा है।

हम दिल्ली की सेवा करना चाहते हैं। आम आदमी पार्टी ने वह काम करके दिखाया है जो बड़ी से बड़ी पार्टियां नहीं कर पाई हैं। स्कूल बनाए, अस्पताल बनाए, भ्रष्टाचार में कमी लाई और यह सब हम नहीं बल्कि खुद पीएम मोदी जी की रिपोर्ट कहती है।

पिता को तेज रफ्तार कार ने रौंदा, सदमे में बेटे ने खाया जहर; चिता के सामने दी जान

नई दिल्ली। कुंडली के पास शुक्रवार को एक बस चालक को कार सवार ने रौंद दिया की जिससे उसकी मौत हो गई। पिता की मौत के सदमे को बेटा बर्दाश्त नहीं कर पाया। उसने श्मशान घाट में जहर खाकर अपनी जान दे दी। सोनीपत पुलिस ने इस मामले में जिम मालिक 30 वर्षीय महिला को पश्चिमी दिल्ली के मोती नगर इलाके से शुक्रवार को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान न्यू मोती नगर निवासी मोनिका ग्रोवर के रूप में हुई है।49 साल के बस चालक की पहचान सोनीपत के जगबीर सिंह के तौर पर हुई है जो सरस्वती विहार में अपने परिवार के साथ रहता था और हरियाणा रोडवेज के लिए बसें चलाता था। पुलिस ने सिंह के बड़े बेटे दीपक की शिकायत पर केस दर्ज किया है। उसने पुलिस को बताया कि 6 सितंबर को जब मेरे पिता प्रमोद द्वारा संचालित हरियाणा रोडवेज की बस से सुबह 4 बजे बस डिपो जा रहे थे, तो उन्हें सोनीपत में कुंडली के पास एक काली थार ने कुचल दिया। कार बस के पीछे रुकी। जैसे ही मेरे पिता, प्रमोद और कंडक्टर फतेह बस से नीचे उतरे थार ड्राइवर ने उन्हें कुचल दिया। मेरे पिता की मौके पर ही मौत हो गई। बस कंडक्टर फतेह ने दावा किया कि थार जानबूझकर उनका रास्ता रोक रही थी। उन्होंने कहा, हरियाणा के बहलगढ़ से, कार चालक ने लगातार ब्रेक दबाया और बस को रास्ता नहीं दिया। हमें लगा कि इससे टक्कर हो सकती है, इसलिए हमने बस रोक दी। फतेह ने कहा कि सिंह, मैं और प्रमोद कार चालक को उसके गलत तरीके से ड्राइविंग करने को लेकर डांटना चाहते थे, लेकिन उन्हें ऐसा करने का मौका नहीं मिला। फतेह ने कहा, जगबीर को थार ने कुचल कर मार दिया, मैं भी बुरी तरह से घायल हो गया और कार ने कुछ दूर तक प्रमोद को घसीटा। बाद में सिंह के अंतिम संस्कार में उनके छोटे बेटे, संदीप ने दुखी होकर जहर खा लिया और पिता की चिता के सामने आखिरी सांस ली।

लंपी स्किन रोग : गोट पॉक्स वैक्सीन की 60,000 डोज खरीदेगी दिल्ली सरकार, फ्री दिए जाएंगे टीके

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार लंपी स्किन रोग को फैलने से रोकने के लिए राजधानी में स्वस्थ मवेशियों के टीकाकरण के लिए बकरी पॉक्स के टीके की 60,000 डोज खरीदेगी। ये टीके की खुराक निःशुल्क दी जाएगी। विकास मंत्री गोपाल राय ने शनिवार को कहा कि दिल्ली में ज्यादातर दक्षिण-पश्चिम जिले में मवेशियों में लंपी स्किन रोग के 173 मामले पाए गए हैं। यह पहली बार है जब दिल्ली सरकार ने शहर में लंपी स्किन रोग के मामले दर्ज किए हैं। एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि शनिवार शाम से मामलों में कोई वृद्धि नहीं हुई है। अब तक किसी की मौत की खबर नहीं है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में मवेशियों की आबादी 80,000 है। केंद्र सरकार जो सप्लायर के साथ रेटों को अंतिम रूप दे रही है, उसने आश्वासन दिया है कि 60,000 खुराक जल्द ही हम तक पहुंच जाएगी। अधिकारी ने कहा कि हमने शनिवार को पशुपालन और डेयरी विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की और उनसे जल्द से जल्द वैक्सीन उपलब्ध कराने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि सरकार रिंग टीकाकरण रणनीति अपनाएगी जिसमें प्रभावित क्षेत्रों के 5 किमी के दायरे में स्वस्थ मवेशियों को वायरस के उत्तरकाशी स्ट्रेन के साथ बकरी का टीका दिया जाएगा। लंपी स्किन रोग एक संक्रामक वायरल रोग है जो मवेशियों के बीच मच्छरों, मक्खियों, जूँ और ततैया के सीधे संपर्क के माध्यम से फैलता है, साथ ही दूषित भोजन और पानी के माध्यम से भी फैलता है। यह मवेशियों से मनुष्यों में नहीं फैलता है। इसके लक्षणों में तेज बुखार, दूध उत्पादन में कमी, त्वचा की गांठें, भूख न लगना, नाक से पानी निकलना और आंखों से पानी आना आदि शामिल हैं। केंद्र के मुताबिक, यह बीमारी गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश में फैल चुकी है और इससे 57,000 से ज्यादा मवेशियों की मौत हो चुकी है। दिल्ली में गोयला डेयरी क्षेत्र, रेवला खानपुर क्षेत्र, घुमानहेड़ा और नजफगढ़ में लंपी स्किन रोग के सबसे अधिक मामले सामने आए हैं।

भारत विकास परिषद ने भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने पर दिया जोर

हरियाणा दक्षिण प्रांत की पैराडाइज हॉटल में भव्य बैठक

- 6 जिलों की 32 शाखाओं में 24 शाखाओं ने लिया भाग
- प्रथम प्रांत परिषद बैठक में विभिन्न प्रकल्पों पर हुई चर्चा
- सैकड़ों शाखा सदस्य एवं दायित्वधारी हुए शामिल

कपिल शर्मा /गौरवशाली भारत

नारनौल। हरियाणा दक्षिण प्रांतीय भारत विकास परिषद शाखाओं के सम्मानित सदस्य एवं दायित्वधारियों द्वारा रविवार को दिल्ली - रेवाड़ी रोड़ स्थित पैराडाइज हॉटल में विशाल बैठक का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में हरियाणा के 6 जिलों की 32 शाखाओं में 24 शाखाओं के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। प्रथम प्रांत परिषद बैठक में नारनौल निवासी शिक्षक एवं प्रान्तीय अध्यक्ष महेंद्र शर्मा सहित विभिन्न जिलों के प्रांतीय कोषाध्यक्ष, क्षेत्रीय सचिव, महासचिव की अध्यक्षता में यह बैठक भारतीय संगीत वंदे मातरम के साथ आयोजित की गई।

भारत विकास परिषद के विभिन्न शाखाओं की इस कार्यकारिणी बैठक में शाखा अध्यक्ष व सचिव देवियों एवं स्वजनों ने अपने क्षेत्र में किए गए सामाजिक कार्यों की रुपरेखा एवं कार्यप्रणाली की उपलब्धियों का ज़िक्र करते हुए स्लाइड प्रस्तुति से बैठक में विद्यमान महानुभावों को अवगत कराया साथ ही शाखा के प्रकल्पों एवं उदेश्य के बारे में बताते हुए भारत विकास परिषद के पाँच मूल मंत्र संपर्क, संयोग, संस्कार और सेवा, समर्पण को विस्तार से वर्णन किया। इस दौरान कार्यक्रम में फरीदाबाद शाखा से महिला एवं बाल संस्कार दायित्वधारी क्षेत्रीय सचिव निधि जैन सहित नारनौल शाखा द्वारा आयोजित महिलाओं के अधिकार और उनकी सुरक्षा पर आधारित नाट्य नृत्य से जागरूक करते हुए नन्ही बालिकाओं ने संगीत समूह लोक नृत्य प्रस्तुत किया। इस कार्यकारिणी बैठक में सभी शाखा सदस्य एवं दायित्वधारियों ने नवीन कार्यप्रणाली एवं रुपरेखा पर अपने-अपने विचार साझा करते हुए भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने पर बल दिया। साढ़े तीन घंटे से अधिक चली बैठक राष्ट्रीय गीत जन-गण-मन के साथ सम्पन्न हुई।

प्रांतीय अध्यक्ष महेंद्र शर्मा ने बैठक को संबोधित करते हुए अपने अध्यक्षीय संबोधन में सभी सदस्य एवं पद भूमिका निर्वहनकर्ताओं को निर्देशित किया कि, व्हाट्सएप्प संपर्क स्थापित करने की बजाय संस्था संचालन में व्यक्तिगत संपर्क अधिक बढ़ाएं। उन्होंने गौरवशाली भारत से विशेष बातचीत में कहा कि, भारत विकास परिषद में उनका सहयोग 1995 से रहा है। हरियाणा दक्षिण प्रांत के 6 जिलों की 32 शाखाएं नियुक्त की गई हैं।

रविवार बैठक में 24 शाखाओं के प्रतिनिधि शामिल हुए हैं। प्रत्येक शाखा का दायित्व समाजिक कार्यों में साकारात्मक बदलाव और असहाय निर्बल परिवारों का विशेष सहयोग के साथ-साथ युवाओं में संस्कार स्थापित करना और भारत के विकास को अग्रदूत की भांति अग्रेषित करना है।

इस भा.वि. परिषद की विशेष बैठक में चौबीस शाखाओं के अध्यक्ष, सचिव, महासचिव महिला एवं पुरुषों सहित नाँगल चौधरी शाखा के अध्यक्ष जगदेव शर्मा, शाखा संरक्षक सुभाष शर्मा, सचिव, सत्यवीर स्वामी, कोषाध्यक्ष पवन मित्तल, शाखा सदस्य एवं अधिवक्ता लक्खीराम यादव, रविन्द्र चौधरी समेत अन्य गणमान्य स्वजन बैठक समारोह के साक्षी रहे।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल बेरहम और निरंकुश : कांग्रेस

आनंद राय/गौरवशाली भारत

नई दिल्ली। बाहरी दिल्ली के मुंडका स्थित एक अपार्टमेंट में सीवर की सफाई के दौरान, ड्यूटी पर तैनात, दो कर्मचारियों की मौत के बाद दिल्ली सरकार की तरफ से किसी तरह की सहायता राशि की घोषणा नहीं होने पर कांग्रेस ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को बेरहम और निरंकुश करार दिया है।

दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ नरेश कुमार ने आज बक्करवाला के लोक नायक पुरम में जाकर पीड़ित परिवार से मुलाकात करने के बाद दिल्ली सरकार से दोनों कर्मचारियों रोहित और अशोक के परिजनों को एक एक करोड़ रूपए सहायता राशि तथा उनकी विधवाओं को सरकारी नौकरी देने की उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना तथा मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से मांग की है। उन्होंने कहा कि केजरीवाल दूसरे राज्यों में जाकर इस प्रकार के हादसों में जान गवाने वालों को एक करोड़ का मुआवजा देकर वाहवाही बटोर कर मीडिया में छाए रहने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं लेकिन जहां वह सत्ता में हैं, उन्हें वहां के लोगों की कोई सुध नहीं हैं। डॉ कुमार ने कहा कि श्री केजरीवाल की कथनी और करनी में अंतर है और वह यह नौटंकी मीडिया में छाए रहने के लिए करते हैं। उन्होंने कहा कि उस हादसे के दो दिन बाद भी ना तो मुख्यमंत्री कार्यालय, ना दिल्ली सरकार का कोई नुमाइंदा पीड़ित परिवारो से मिलने आया है जो साबित करता है कि राजा के लिए गरीब प्रजा की जान की कोई कीमत नहीं हैं।

कांग्रेस प्रवक्ता ने क्षेत्रीय सांसद प्रवेश कुमार वर्मा के यहां नहीं आने पर कटाक्ष करते हुए कहा कि वह अपने क्षेत्र में लोगों से मिलने भी नहीं आते हैं जो उनके असली चेहरे की पोल खोलता है। उन्होंने कहा कि पिता साहिब सिंह वर्मा के निधन के बाद लोगों की सहानुभूति से राजनीति में आने वाले प्रवेश वर्मा में अगर थोड़ी बहुत इंसानियत जिंदा होती तो कम से कम वह अपने क्षेत्र में लोगों से मिलने जरूर आते, लेकिन वह सिर्फ झूठ की राजनीति करने में लगे हुए हैं।

इस दौरान उन्होंने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष चौधरी अनिल कुमार तथा पार्टी की तरफ से पीड़ित परिवार को हर संभव मदद का आश्वासन दिया। इस मौके पर जिला अध्यक्ष नजफगढ़ सतबीर शर्मा, पूर्व निगम पार्षद सुरेश पहलवान तथा अन्य लोग भी मौजूद थे।

उन्होंने कहा कि यहां से आम आदमी पार्टी विधायक महेंद्र यादव को भी इस घटना की कोई सुध नहीं है और इस तरह की लापरवाही बताती है कि दिल्ली की सरकार आम लोगों के लिए नहीं बल्कि खास लोगों के लिए हैं।

हाउसिंग सोसाइटी में कभी रेजिडेंट तो कभी सुरक्षाकर्मी बन रहे उपद्रवी

नोएडा। नोएडा की हाउसिंग सोसाइटी में मारपीट और अभद्रता करने के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। कभी सुरक्षाकर्मियों की तरफ से वारदात की जाती है तो कभी रेजिडेंट अभद्रता पर उतारू हो जाते हैं। चाहे वो श्रीकांत त्यागी प्रकरण हो या गाली बाज महिला वकील की करतूत। सोशल मीडिया पर महिला वकील और श्रीकांत को यूजर्स ने गालीबाज कहा था। अब सेक्टर 121 स्थित क्लियो काउंटी सोसाइटी में सुरक्षाकर्मी को थप्पड़ जड़ने वाली महिला प्रोफेसर को थप्पड़बाज कहा जा रहा है।23 अगस्त को सेक्टर 128 स्थित जेपी विश टाउन सोसाइटी में एक महिला वकील ने सुरक्षाकर्मी के साथ अभद्रता और गाली-गलौच की थी। महिला द्वारा गाली- गलौच करने का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हुआ था। पुलिस ने महिला को गिरफ्तार किया था। वहीं, श्रीकांत त्यागी प्रकरण अभी तक सुर्खियों में बना हुआ है। 5 अगस्त को श्रीकांत त्यागी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। इस वीडियो में श्रीकांत एक महिला के साथ गाली-गलौच और अभद्रता कर रहा था।

मेवाड़ में 'सोलहवें प्रतिभा प्रोत्साहन पुरस्कार समारोह' का रंगारंग समापन

1647 बच्चों ने दिखाये जलवे, मनमोहक नृत्यों से मचाई धूम

विवेक राय/गौरवशाली भारत

गाजियाबाद। वसुंधरा स्थित मेवाड़ ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस में 'प्रतिभा-2022' नाम से क्रांतिकारी बाल गंगाधर तिलक व चंद्रशेखर आजाद को समर्पित सोलहवें प्रोत्साहन पुरस्कार समारोह में दिल्ली-एनसीआर के 32 स्कूलों के कुल 1647 विद्यार्थियों ने धूम मचा दी। अंतिम दिन प्रतिभाशाली बच्चों ने अपनी नृत्य शैली से दर्शकों का मन मोह लिया। अंतिम दिन सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, एकल नृत्य प्रतियोगिता एवं समूह नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस मौके पर मेवाड़ ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के चेयरमैन डॉ. अशोक कुमार गदिया ने बताया कि प्रतिभा-2022 समारोह में इस बार दिल्ली-एनसीआर के 32 स्कूलों के 1647 बच्चों ने भाग लेकर अपनी प्रतिभा का बेहतरीन प्रदर्शन किया। विगत सोलह सालों में कुल 31,191 विद्यार्थियों को मेवाड़ अपनी प्रतिभा उजागर करने के लिए एक समर्थ मंच प्रदान कर चुका है। प्रतिभा प्रोत्साहन पुरस्कार समारोह में कुल 10 प्रतियोगिताएं हुईं। उनका यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि हमारे देश के पास 65 करोड़ युवा हैं। इनमें देशभक्ति व समाज के प्रति संवेदनशीलता का भाव पैदा करना होगा। तभी देश विकसित व खुशहाल होगा।

इससे पूर्व डॉ. गदिया व डॉ. अलका अग्रवाल ने दीप जलाकर समारोह की विधिवत शुरुआत की। इस दौरान आयोजित नृत्य के रंगारंग कार्यक्रमों ने समारोह में चार चांद लगाए। समारोह का कुशल संचालन अमित पाराशर ने किया।

संपादकीय

'स्मार्ट' और 'हाईटेक' सिटी की पोल खोलती बारिश

'भारत में महानगरों में विकास तो बहुत तेजी से हो रहा है, लेकिन बुनियादी ढांचे को नजरंदाज किया जा रहा है. महानगरों के विकास में आसपास के गांवों को मिलाया जा रहा है, लेकिन गांवों को शहर के सीवेज सिस्टम से जोड़ने पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है.'

कुदरती कहर से हमारे सभी महानगर हलाकान हैं. अगर 24 घंटे भारी बारिश हो जाए तो दिल्ली , मुंबई , चेन्नई और कोलकाता जैसा महानगर हो या कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु – सब पानी–पानी हो जाते हैं. 'स्मार्ट' और 'हाईटेक' सिटी का रुतबा दिखाने वाले शहर भी एक–दो दिन की भारी बारिश झेल नहीं पाते. कई–कई फुट पानी में डूबे दिखाई देते हैं. हालत यह है कि बरसात का मौसम आते ही लोगों में खौफ कायम हो जाता है. हमारे लगभग सभी महानगरों की हालत एक जैसी है. इस समय बात करें बेंगलुरु की तो बारिश ने लोगों का जीना मुहाल कर दिया है. सड़कों पर पानी भर गया, घरों के बेसमेंट जलमग्न हो गए और लोगों को आवागमन के लिए ट्रैक्टर का सहारा लेना पड़ा. ये कोई पहली बार नहीं है कि यहां बारिश इस तरह की आफत लेकर आई है. दरअसल, हमारे नगर और महानगर खराब जल निकासी की व्यवस्था, उचित योजना और बुनियादी ढांचे की कमी के कारण जलभराव की परेशानी से दो–चार होते रहते हैं और इनके 'हाईटेक' होने के दावों की पोल खुल जाती है. हमारे महानगरों में विकास तो बहुत तेजी से हो रहा है, लेकिन बुनियादी ढांचे को नजरंदाज करते हुए. महानगरों के विकास में आसपास के गांवों को मिलाया तो जा रहा है, लेकिन गांवों को शहर के सीवेज सिस्टम से जोड़ने पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है. यही कारण है कि तूफानी बारिश में नालियां बेकार हो जाती हैं और बारिश का पानी सड़कों पर सैलाब बनकर फैल जाता है. शहर कोई भी हो, अचानक और भारी बारिश से निपटने के लिए तैयार नहीं दिखता. नालियां अक्सर कचरे से भरी रहती हैं, जिससे पानी का बहाव रुकता है. लगातार बढ़ती आबादी के मुकाबले नालियों का आकार भी छोटा है. अनियोजित कॉलोनियां और अतिक्रमण एक बड़ी समस्या है. भवन और कॉलोनियां खड़ी हो रही हैं लेकिन जलनिकासी की कोई विस्तृत और वृहद योजना नहीं दिखती. समय पूर्व नाले–नालियों की सफाई न होना, उनसे गाद न निकालना बड़ी समस्या का कारण बनता है. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस की एक केस स्टडी के मुताबिक बगैर योजना के शहरीकरण ने प्राकृतिक तरह से जल सोखने या उसकी निकासी क्षेत्रों की क्षमता पर बेहद बुरा असर डाला है. एक्सपर्ट कहते हैं कि जब मानव प्राकृतिक बाढ़ के मैदानों यानी वेटलैंड्स पर जबरन अतिक्रमण करता है तो इससे बाढ़ के पानी को सोखने या स्टोर करने वाले प्राकृतिक साधन खत्म होते जाते हैं. भारी बारिश के दौरान ड्रेनेज सिस्टम में पानी का स्तर बढ़ जाता है. नतीजतन ठोस कचरे को सही तरीके से ठिकाने लगाने की व्यवस्था न होने पर नालियां बंद हो जाती हैं. शहरी बाढ़ हमारे महानगरों के लिए एक चुनौती है.

पुरानी और नई पीढ़ी के मध्य संवाद हीनता, गहराता संकट

भारत में सर्वे के अनुसार बुजुर्गों और नौजवान पीढ़ी के बीच संवाद हीनता एक चिंताजनक स्वरूप ले चुका हैद्य बुजुर्ग एकाकीपन से अब मानसिक रोगों के शिकार होने लगे हैं। जिन बुजुर्गों को चलने फिरने और बाहर जाने में परेशानी होती है उनके लिए नौजवान पीढ़ी के साथ संवाद हीनता परेशानी का एक बड़ा सबक बन चुका हैद्य महिला तथा पुरुष बुजुर्गों के साथ यह समस्या बृहद रूप लेकर सामाजिक समस्या बन गई हैद्य बुजुर्ग हमारी धरोहर हैं इनका जीवन के हर दृष्टिकोण में संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। मोबाइल ,व्हाट्सएप फेसबुक और इंटरनेट ने नौजवान पीढ़ी और बुजुर्गों के बीच एक बड़ा संवाद हीनता का संकट पैदा कर दिया है।बुजुर्ग यदि अपने मन की बात किसी से कह नहीं सकेंगे तो उन्हें मानसिक रूप से बीमारी का संकट हो सकता है।नौजवान पीढ़ी को खाली समय में मोबाइल कंप्यूटर में फेसबुक व्हाट्सएप इंस्टाग्राम से ही फुर्सत नहीं है। ऐसे में बुजुर्गों के लिए यह संकट और गहराने का खतरा बढ़ता जा रहा हैद्य उल्लेखनीय है कि बुजुर्गों का अनुभव उनका ज्ञान परिवार,समाज तथा देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैद्य देश की संस्कृति में बुजुर्गों का सम्मान और इज्जत उनकी रक्षा निहित हैद्य करोना की तीसरी लहर से भारतीय समाज में निवास कर रहे बुजुर्गों की बड़ी संख्या को हमें सुरक्षित और महफूज रखना है।वह वटवृक्ष की तरफ हम सबका मार्गदर्शन करते हैं ,अत: हमारा प्रथम कर्तव्य होगा कि हम वृद्धजनों की हर संभव रक्षा कर उनकी इज्जत, तवज्जो करेंद्य इसके साथ ही हमें बच्चों तथा नौजवानों की भी रक्षा करनी होगीद्य भारत सरकार की लगातार चेतावनी और विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी निर्देशों की अवहेलना अभी भी भारत देश में जारी हैद्य सैकड़ों लोग मौत के मुंह में समा चुके हैंद्य हमें कोविड–19 के आतंक के साए को भी नहीं भूलना चाहिए।हमे लगातार सावधानी रख कोविड–19 के प्रोटोकॉल का अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ संगठन की गाइडलाइंस के अनुसार अपना आचरण रखना होगा। अन्यथा कोविड–19 की तीसरी लहर फिर भारत के निवासियों को परेशान कर सकती है। भारत में कोविड–19 की तीसरी लहर की शुरुआत बड़े शहरों से लेकर छोटे शहरों तक हो चुकी है। इसके लिए हमें अतिरिक्त सावधानी रखनी होगी। मैंने पहले भी कहा था कि करोना का केरल हॉटस्पॉट बन चुका है। अब दिल्ली, मुंबई चेन्नई अहमदाबाद तथा पूर्वोत्तर राज्य मैं भी कोविड–19 की तीसरी लहर के आंकड़े डरावने हो गए हैं। करोना का डेल्टा वैरीअंट यानी करोना की तीसरी लहर हर जगह फैलने लगी हैद्य
अब यह संक्रमण भारत के महानगरों में फैलने की आशंका को लेकर आया है दिल्ली ,मुंबई कोलकाता, अहमदाबाद, चेन्नई से कोविड–19 की तीसरी लहर अपना पैर पसार चुकी है। और यदि आपने अपने चेहरे पर मास्क नहीं लगाया, लगातार हाथ नहीं धोया, लोगों से 2 गज की दूरी नहीं रखी और भीड़ भाड़ में जाने से नहीं बचे, तो निश्चित तौर पर कोविड–19 का डेल्टा वैरीअंट को आने से कोई नहीं रोक सकता है ।वैसे भी विश्व में इंडोनेशिय,मलेशिया,थाईलैंड, ब्रिटेन, फ्रांस, ब्राजील, अर्जेंटीना,अमेरिका मैं डेल्टा वैरीअंट के तेजी से हजारों प्रकरण बढ़ते दिखाई दे रहे हैं। अमेरिका डेल्टा वैरीअंट के संक्रमण का भयानक प्रकोप झेल रहा है। भारत में भी पूर्वांचल प्रदेशों में मिजोरम,असम, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा में तीसरी लहर के आसार स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। ब्रिटेन, अमेरिका,और फ्रांस जैसे उच्च शिक्षित देशों के नागरिकों ने लॉकडाउन हटते ही विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा जारी की गई गाइडलाइंस का उल्लंघन कर कोविड–19 की तीसरे संक्रमण की लहर को आमंत्रित कर लिया है। अमेरिका के स्वास्थ विभाग के वैज्ञानिक डॉ मूर्ति ने यहां तक कहा कि अमेरिका तथा यूरोपीय देशों को तीसरी लहर के अल्फा बीटा गामा कप्पा और डेल्टा वैरीअंट से बचने के लिए इंजेक्शन का बूस्टर डोज लगाना पड़ेगा, तभी लोगों की जान बच पाएगी। 24 करोड़ आबादी वाला उत्तर प्रदेश अब तक करोना की लहर से लड़कर उसे दबाने में काफी हद तक सफल रहा है।

'सवारी बुलबुल की ' : रूपक, गप या फ़साना ?

1965 में रिलीज़ हुई फ़िल्म जब जब फूल खिले में गीतकार आनंद बख़्शी द्वारा लिखित गीत एक था गुल और एक थी बुलबुल दोनों चमन में रहते थे,यह उस दौर के सबसे लोकप्रिय गीतों में एक तो ज़रूर था। परन्तु निश्चित रूप से उन दिनों भी किसी ने बुलबुल की शक्ति व सामर्थ्य के बारे में उतनी चर्चा नहीं की जितनी बुलबुल पर चर्चा पिछले दिनों कथित तौर पर विनायक दामोदर सावरकर द्वारा बुलबुल की सवारी करने के विषय को लेकर सुनाई दी। टी वी डिबेट से लेकर ख़बरों व आलेख तक में सावरकर के पैरोकारों व आलोचकों सभी ने इस विषय पर बिंदास होकर अपने अपने तर्क रखे। ग़ौरतलब है कि कर्नाटक के सरकारी स्कूल की 8वीं कक्षा की कन्नड़ भाषा की एक किताब के एक अध्याय में कुछ हास्यास्पद बातें प्रकाशित की गयी हैं और इन्हें बच्चों को पढ़ाया जा रहा है जिससे विवाद पैदा हो गया है। लेखक के टी गट्टी द्वारा लिखित पुस्तक में लेखक का दावा है कि जिन दिनों सावरकर अंडमान जेल में बंद थे, तो वहां उनके जेल कक्ष में कोई सूक्ष्म सा भी सुराख नहीं था, परन्तु इसके बावजूद वहां एक बुलबुल पक्षी आया करती थी और सावरकर उसपर सवार होकर जेल से बाहर मातृभूमि की सैर किया करते थे। इन दावों को सावरकर वादियों द्वारा स्वीकार कर लेना कोई आश्चर्य की बात इसलिये नहीं क्यूंकि हमारा देश अध्यात्म प्रधान देश होने के नाते यहाँ के लोगों में अनेकानेक असंभव सी लगने वाली बातों को भी आसानी से हज़म कर लेने की पूरी क्षमता है। अन्धविश्वास प्राय: तर्क पर भारी पड़ जाता है।

कल तक सावरकर को भारतीय इतिहास में किस तरह याद किया जाता था यह एक अलग विषय है परन्तु देश की वर्तमान सत्ता सावरकर को वीर सावरकर कहती है।और उन्हें महान स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा देती है। जबकि सावरकर के आलोचक उन्हें अंग्रेज़ों से अनेक बार मुआफ़ी मांगने वाला और अंग्रेज़ों से पेंशन हासिल करने वाला तथा उनका मददगार होने का आरोप लगाते रहे हैं । हालांकि इसतरह के कई दस्तावेज़ आज भी उपलब्ध हैं। परन्तु आज सावरकर के महिमामंडन का वह दौर है जबकि कहीं गणेशोत्सव के पंडालों में सावरकर की तस्वीर लगाई जाती है तो जब कोई सावरकर विरोधी इसकी आलोचना करता है,गणेश जी के साथ सावरकर का चित्र लगाने को ग़लत बताता है तो सावरकर समर्थक व ज़िम्मेदार समझे जाने वाले नेता जवाब देते हैं कि यदि सावरकर के पोस्टर छुए तो हाथ काट देंगे। देश में कई जगहों पर उनकी मूर्तियां स्थापित करने की भी ख़बरें हैं। सावरकर को भारत रत्न दिये जाने की मांग उनके समर्थक लंबे समय से करते ही आ रहे हैं। और कोई आश्चर्य नहीं कि भारत सरकार कभी भी सावरकर को भारत रत्न देने की घोषणा कर भी दे। क्योंकि विगत महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के घोषणापत्र में भाजपा ने सावरकर को भारत रत्न सम्मान देने का वादा भी किया था।

सावरकर को भारत रत्न दिये जाने के सन्दर्भ में यहां पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपई को 2015 में भारत रत्न दिये जाने का ज़िक्र करना प्रासंगिक होगा। जिस तरह सावरकर को कथित तौर पर अंग्रेज़ों का मददगार व स्वतंत्रता आंदोलन का विरोधी बताया जाता है लगभग वैसे ही आरोपों का सामना वाजपेई भी सारी उम्र करते रहे। उनपर आरोप था कि जब उनके अपने गांव बटेश्वर की बाज़ार में 27 अगस्त, 1942 को ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ़ लगभग 200 क्रांतिकारियों की भीड़ इकट्ठा हुई जिसने वहां के वन विभाग के भवन में तोड़फोड़ की व भारतीय झण्डा फहराया उस समय अटल बिहारी वाजपेयी अपने भाई प्रेम बिहारी वाजपेयी के साथ घटनास्थल के समीप ही खड़े थे। घटना के अगले दिन पुलिस ने गांव में छापामारी की और कई लोगों को गिरफ़्तार कर आगरा जेल भेज दिया गया। गिरफ़्तार लोगों में अटल बिहारी वाजपेयी और उनके भाई प्रेम बिहारी वाजपेयी भी शामिल थे। बाद में वाजपेयी के पिता ने अंग्रेज़ अफ़सरों से सिफ़ारिश कर अपने दोनों बेटों को अंग्रेज़ों के चंगुल से आज़ाद करा लिया। इतना ही नहीं बल्कि इन दोनों वाजपेई बंधुओं ने बाद में गिरफ़्तार स्वतंत्रता सेनानियों के ख़िलाफ़ अदालत में गवाही भी दी थी। जिसके आधार पर स्वतंत्रता सेनानियों को सज़ा भी हुई। इतने संगीन आरोपों के बावजूद वाजपेई न केवल भाजपा की ओर से देश के प्रधानमंत्री चुने गये बल्कि सत्ता में आते ही मोदी सरकार ने उन्हें भारत रत्न जैसे देश के सर्वोच्च सम्मान से भी नवाज़ा। अत: सावरकर को भी चाहे कोई माफ़ी वीर कहे या अंग्रेज़ों का शुभचिंतक परन्तु उन्हें भी भारत रत्न दिये जाने में किसी को कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिये।

बहरहाल,जहाँ तक सावरकर का बुलबुल के पंख पर सवार होकर पोर्ट ब्लेयर की जेल से बाहर निकल कर मातृभूमि का भ्रमण करने जैसे प्रकरण का प्रश्न है तो सावरकर भक्तों ने भले ही इस अफ़साने को हज़म क्यों न कर लिया हो परन्तु इस कथा के रचयिता लेखक की पत्नी इस प्रसंग को पचा नहीं पा रही हैं।

इस विवादित प्रसंग के कथाकार के टी गट्टी की पत्नी यशोदा अम्मेमबाला ने बुलबुल पर सावरकर की सवारी की कल्पना को लेकर उठे विवाद को देखते हुए यह स्पष्टीकरण दिया है कि यह एक रूपक से अधिक और कुछ नहीं है। हो सकता है कि यह लेखक की ग़लती से हुआ हो अथवा यह संपादकीय त्रुटि भी हो सकती है। लेखक की पत्नी यशोदा अम्मेमबाला ने कहा कि ' हमें नहीं पता कि सावरकर का बुलबुल के पंख पर बैठने का रूपक लेखक ने ख़ुद लिखा है अथवा यह कोई कहानी है जो उन्होंने किसी किताब अथवा स्थानीय सूत्रों से ली है, लेकिन हम इतना तो विश्वास से कह सकते हैं कि यह लेखक की कल्पना नहीं है।'' गोया लेखक की वयोवृद्ध पत्नी ने भी बुलबुल के पंख पर सावरकर के बैठने व मातृभूमि का भ्रमण करने जैसी अविश्वसनीय कथा को लेखक की अथवा संपादकीय त्रुटि बताकर इस हास्यास्पद दावे से अपने लेखक पति को मुक्त कराने का प्रयास किया है। लेखक की पत्नी यशोदा अम्मेमबाला ने अपना स्पष्टीकरण देकर तो बुलबुल के पंख से सावरकर को ज़रूर उतारने की पूरी कोशिश की है परन्तु आश्चर्य है उन अंधभक्तों की अंध भक्ति पर जो बुलबुल के पंख पर सवार होकर सावरकर के साथ साथ ख़ुद भी मातृभूमि का भ्रमण करने निकल पड़े थे।

इंसानियत को शर्मसार करती एक धांधली

बैचेन मन इतना दुःख से भरा की लिखना भी चाहूं पीड़ा दिल की पर लिख ना पा रही थी ,दो दिन से शब्दों को दिल के भीतर ही , मेरा घायल दिल समाने ही नहीं दे रहा था , कुछ शब्द लिखती फिर मिटा देती , फिर लिखती फिर मिटा देती बस इस क्रम में दो दिन निकल गये , पर आज बस मन कि व्यथा पर बोझिल सा पत्थर रखा पाया तो सोचा , लेखिका हूं मैं , नहीं लिखूंगी तो ये मेरी नजरों में एक गुनाह होगा , लेखिका होने का दायित्व निभा मुझे एसे ही देश के बहुत से राज्यों में चल रही धांधली को सामने लाना था , ये धांधली किसी भी सम्मानित अधिकारियों से संबंधित नहीं है । ये धांधली तो वो धांधली है जो आम जनता द्वारा ही , आम जनता को लूटने की कोशिश है जिसमें वो अकसर सफल भी हो जाते हैं ये एसी धांधली है जिसके अंतर्गत बहुत ही मजबूर इंसांन को इस तरह लूटा जाता हे कि वो बेबस हो लुटने को तैयार हो जाता है स्वयं , केवल ये सोच की आज भी दुनिया में इंसानियत जिंदा है , इतना अधिक विश्वास इस कल युग में की , खुद को ठगा हुआ देख कर दुखी होकर सिर्फ समाज से सिफारिश करता अपने परिवार के किसी सदस्य को बचाने के लिए जो अस्पताल में रक्त की एक–एक बूंद के लिए तरस रहा , जिसमें उसको कोई भी रक्त देकर नया जीवन दान दे सके पर ये क्या रक्तदान के नाम पर उसके साथ उस दुखद घड़ी में धांधली हो जाती जब पहले से ही उस के सर पर चिंता और दुखों का भारी पहाड़ पड़ा हो ।जी हां मैं बात कर रही उस धांधली की जिसमें यदि किसी के परिवार के सदस्य को ब्लड चाहिए और वो ब्लड के लिए दान दाताओं की तलाश करता , विभिन्न सामाजिक संस्था से संपर्क भी करता जिससे एक शहर के अस्पताल की खबर पूरे भारत देश में वायरल हो जाती विभिन्न एपस से जुड़ी सामाजिक संस्थाओं के द्वारा कि फलाने शहर के फलानी अस्पताल में फलाने मरीज़ को रक्त की जरूरत है । जिसके चलते खबर पाते ही बहुत सी संस्थाएं मरीज के परिचित से संपर्क करती हैं सहयोग में आशा की किरण देकर , परंतु कुछ लोग एसे होते हैं , जो खबर पाते ही मरीज के परिचित से संपर्क कर सहयोग के लिए एक रकम की मांग करते हैं , मरीज के परिचित बताई राशि दे भी देते हैं परंतु उन्हें ये नहीं पता होता कि वो जिन पर आंख बंद करके विश्वास कर रहे हैं । वो ही उनके जज़्बातों और विश्वास को घायल कर देंगे । बहुत से लोग रक्त दान के नाम पर पैसा तो ले लेते हैं पर पैसा मिलने के बाद जाते तक नहीं रक्त दान करने । वो पैसा मिलने के बाद या तो अपना फोन बंद कर लेते हैं, या तो वो फोन उठाते ही नहीं , बेबस लुटा हुआ मरीज का परिचित जैसे–तैसे पैसे का बंदोबस्त कर अपने को बचाने की कोशिश करता है और वही पैसा जब डूब जाता है तो छलनी–छलनी हो जाता उसका दिल । बहुत बार हमारे द्वारा अटेंडेंट को समझाया जाता कि आप पैसा मत देना , अगर आप अपनी स्वेच्छा से देना चाहते तो भी आप जब मरीज को कोई रक्तदान कर दे उसी के बाद देना , पर मजबूर मरीज के परिचित को बस कैसे भी करके अपने परिवार के सदस्य को बचाना होता है फिर क्या वो रक्त दान से पहले ही आनलाईन या कैसे भी करके पैसा दे देता और फिर खुद अपने ही हाथों लुटा सा नजर खुद को पाता है । एसे धांधली करने वाले नकाबपोश चेहरों पर से पर्दा हटाना बहुत जरूरी है । या तो दूसरा रास्ता यही है कि अटेंडर सावधान रहे । हम समाजसेवी सिर्फ समझा सकते और कोशिश कर सकते सहयोग की हर मरीज की । हाल ही में लखनऊ के केस में एक मरीज के परिचित के साथ यही हुआ जो बिहार राज्य से आए थे इलाज करवाने और अपने ही इंसानियत भरे दिल से सोच कि इंसानियत अभी जिंदा है , विश्वास कर पैसे दिए और कोई भी सहयोग प्राप्त नहीं हुआ । इस विश्वास पर ऑनलाइन पैसे भेज दिए ,फिर क्या था खाते में पैसा जाते ही मोबाइल का स्विच ऑफ कर दिखावे की इंसानियत का गला घोंट दिया जाता है। यही कहानी होती जा रही इंसानियत के सौदागरों की । अब हमें इन नकाबपोस इंसानियत के सौदागरों से सावधान रहना पड़ेगा। किसी अनजाने को रक्तदान के नाम पर तीन सौ ,चार सौ ,पांच सौ रुपये खाते में डालने से बचना पड़ेगा।

आर्टिफिशियल स्वीटनर ना बन जाए डायबिटीज की वजह, रहें जरा सतर्क

मिताली जैन

आर्टिफिशियल स्वीटनर के सेहत पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में बात करने से पहले आपको इनके बारे में विस्तारपूर्वक जानना चाहिए। आमतौर पर, लोग इन्हें शुगर सब्सिट्यूट के रूप में इस्तेमाल करते हैं और यह एक तरह के सिंथेटिक शुगर है। आज के समय में अधिकतर लोग अपनी डाइट से शुगर बाहर करने की कोशिश करते हैं। ऐसे में अपने टेस्ट बड का ख्याल रखने के लिए वह आर्टिफिशियल स्वीटनर का इस्तेमाल करते हैं। चूंकि मार्केट में मिलने वाले इन आर्टिफिशियल स्वीटनर का कैलोरी काउंट काफी कम होता है, इसलिए उन्हें यह एक हेल्दी ऑप्शन नजर आता है। लेकिन लगातार आर्टिफिशियल स्वीटनर का इस्तेमाल सेहत के लिए हानिकारक होता है। कछ रिपोर्ट्स के अनुसार, आर्टिफिशियल स्वीटनर का इस्तेमाल करने से आपको डायबिटीज होने तक का खतरा बढ़ जाता है। तो चलिए जानते हैं इस बारे में–

आर्टिफिशियल स्वीटनर के सेहत पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में बात करने से पहले आपको इनके बारे में विस्तारपूर्वक जानना चाहिए। आमतौर पर, लोग इन्हें शुगर सब्सिट्यूट के रूप में इस्तेमाल करते हैं और यह एक तरह के सिंथेटिक शुगर है। इन्हें केमिकली प्रोड्यूस किया जाता है और इनमें स्वीटनेस सामान्य चीनी की अपेक्षा कई अधिक होती है। आज के समय में इन्हें सिर्फ केमिकल्स ही नहीं, बल्कि नेचुरल प्रोडक्ट्स की मदद से भी इन्हें तैयार किया जाता है।

यह सच है कि आर्टिफिशियल स्वीटनर में कैलोरी काउंट कम होता है, लेकिन यह पूरी तरह से हेल्दी हैं। यह सच नहीं है। दरअसल, आर्टिफिशियल स्वीटनर में सैकरीन और सुक्रालोज़ पाया जाता है। यह आपको मिठास का अहसास करवाते हैं। लेकिन यह व्यस्क में ग्लूकोज टोलरेंस को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसे में लंबे समय तक इनका इस्तेमाल करना सेहत पर विपरीत असर डाल सकता है।

राष्ट्रीय दादा दादी, नाना नानी (ग्रैंड पैरेंट्स) दिवस मान्य

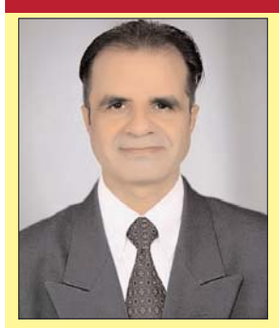

गोंदिया – भारत आदि अनादि काल से बड़े बुजुर्गों माता पिता दादा–दादी नाना नानी वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान करते आया है, जिनकी गाथाओं से भारत के साहित्य पुराण ग्रंथ राम लक्ष्मण रामायण गीता श्रावण भगत प्रल्हाद इत्यादि अनेकों महान योनियां भारत माता की गोद में अवतरित हुई है जो आज भी इस आस्था का बहुत सटीक प्रमाण है। चूंकि 11 सितंबर 2022 को राष्ट्रीय ग्रैंड पेरेंट्स दिवस यानें दादा–दादी दिवस बच्चों संस्थाओं समाज में बहुत उत्साहित होकर मनाया गया इसलिए आज हम इस आर्टिकल के माध्यम से बच्चों के दादा–दादी की खुशियों के रूप में घर परिवार में खुशियों की बारिश हुई पर चर्चा करेंगे।साथियों बात अगर हम दादादादी नाना–नानी की हुजूरी की करें तो खुश किस्मत है वह बच्चे या बड़े मानवीय जीव जिनके पास दादा दादी नाना–नानी अभी हयात हैं। मेरा मानना है कि उनके पास यह अनमोल धरोहर है उनका सम्मान बहुत संजीदगी और शिद्दत के साथ करना चाहिए क्योंकि उनके ऊपर वर्तमान में जो धरोहर है उसकी वैल्यू उनसे पूछिए जिनके पास यह धरोहर नहीं है। दादा दादी बड़े बुजुर्ग हमारी छत्रछाया हैं, इनका स्थान महात्माओं ईश्वर अल्लाह से भी बढ़कर है, ऊंचा हैं, इनकी आशीर्वाद को कुदरत भी नकार नहीं सकती ऐसा मेरा मानना है।

साथियों बात अगर हम राष्ट्रीय दादा–दादी दिवस मनाने की करें तो बच्चों के अपने दादा दादी नाना नानी से एक अलग लगाव होता है, क्योंकि दादा दादी नाना नानी रिश्तो के बगीचे में माली होते हैं जो हर दिन अपने परिवार को सहेजते रहते हैं। जब भी कहानियां या घरेलू नुस्खे सुनने का मन होता है दादा दादी नाना नानी की याद आ जाती है और बच्चे पप्पा मम्मी के गुस्से से बचने के लिए भी इनकी शरण में चले जाते हैं। सही अर्थों में बुजुर्ग घर की छत्रछाया और शान होते हैं उनके द्वारा सुनाई गई कहानियों के मूल्यों और सीख के रूप में मोती रूपी ज्ञान बच्चों को मिलता है, जो उनका व्यक्तित्व निर्माण में नींव का काम करता है और भविष्य की सफलता मील का पत्थर साबित होती है। साथियों बात अगर हम वर्तमान परिपेक्ष की करें तो प्रौद्योगिकी युग में मोबाइल कंप्यूटर किताबों से भरे बच्चों के स्कूल के बैग टेलीविजन पर कार्यक्रम की भरमार लगी पड़ी है परंतु फिर भी यह सब हमारे दादा दादी नाना नानी की कहानियों घरेलू नुस्खों की वाणी की अनमोल सीख से बहुत बड़ी मात्रा में कम है, क्योंकि इनकी वाणी के शब्द कानों से टकराते ही कल्पना की उड़ान भरते हैं। उदाहरण के लिए यदि कहानी शुरू होती है कि एक बरगद का पेड़ था, तो बच्चे के मन में पेड़ के आकार और उनके स्थान की कल्पना शुरू हो जाती है और उनकी सोच का दायरा विस्तार करता है और कहानी सुनने में सभी इंद्रियां सक्रिय हो जाती है।

साथियों बात अगर हम राष्ट्रीय दादा दादी नाना नानी दिवस मनाने के उत्साह की करें तो, चूंकि 11 सितंबर को रविवार था इसलिए कई स्कूलों कालेजों संस्थाओं ने एक दिन पहले ही इसका सेलिब्रेशन किया। स्कूल में दादा दादी नाना नानी ने पहुंचकर बच्चों का साथ निभाया। बुजुर्गों का स्कूल में स्वागत किया गया। स्कूल में उनका बहुत सम्मान किया गया। दादा दादी भी बच्चों के साथ बच्चे बनकर स्कूल में बहुत मौज मस्ती किए और खेलने कूदने में बच्चों का साथ दिए मेरा मानना है कि जिन भी स्कूलों संस्थाओं समाजों में दादा दादी दिवस रविवार होने के कारण 11 सितंबर को नहीं मनाया गया है वह आगे के दिनों में कभी भी इसे मना कर दादा दादी नाना नानी बुजुर्गों के सम्मान में इस बात को जरूर रेखांकित करें ऐसा मेरा सुझाव है। यानें अपने आंगन में बच्चों की खुशियों की बारिश जरूर करें। मेरा सुझाव है कि केंद्र और राज्य सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा बुजुर्गों के सम्मान के लिए इसे मनाने हेतु नोटिफिकेशन जारी किया जाना चाहिए। साथियों बात अगर हम बच्चों के जीवन में दादा दादी के विशेष भूमिका की करे तो, दादा–दादी ने बच्चों के जीवन में विशेष रूप से उनकी कम उम्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यह फैक्ट से भी सिद्ध होता है कि जब दादा–दादी और नाती–पोते एक–दूसरे के साथ समय बिताते हैं तो यह दोनों को खुश रखने में मदद करता है। सेवानिवृत्ति की उम्र में दादा–दादी सभी कामों से मुक्त हो जाते हैं, लेकिन उनके बुढ़ापे के कारण जाहिर है कि वे अपने जीवन का आनंद नहीं ले सकते हैं जैसे वे छोटे में लेते थे, इसलिए अपने पोते–पोतियों के साथ खेलना और उन्हें निहारना सबसे अधिक पसंद करते हैं। साथियों बात अगर हम बच्चं का दादा दादी से पारिवारिक इतिहास सीखने की करे तो, जब बच्चे अपने पारिवारिक इतिहास के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं, तो वे अपने दादा–दादी से भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं और स्नेह, सम्मान और उनमें सेवा और अपनों के प्रति लगाव जैसे मानवीय गुणों का विकास करते हैं। नतीजतन, बच्चे लचीले होना सीखते हैं और वे दूसरों की तुलना में अधिक स्मार्ट और परिपक्व दिखाई देते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब वे अपने परिवार के इतिहास और कठिनाई के बारे में जानते हैं, तो वे कठिनाइयों का सामना करना सीखते हैं।दादा दादी का प्यार अपने नाती पोतो को पालने के लिए पर्याप्त हैं। बच्चों को पालने के लिए उन्हें दाई की जरूरत नहीं है। क्योंकि दादा–दादी अपने पोते–पोतियों की अच्छी देखभाल कर सकते हैं। वे न केवल बच्चों की परवरिश में मदद करते हैं बल्कि आपके बच्चों की सुरक्षा भी करते हैं।

साथियों बात अगर हम राष्ट्रीय दादा धारी दिवस पर एक बच्चे द्वारा 10 सितंबर को स्कूल में राष्ट्रीय दादा–दादी दिवस पर रखे गए विचारों की करें तो, हमारे दादा–दादी/नाना–नानी एक पुस्तकालय हैं, हमारे निजी गेम सेंटर हैं, सर्वश्रेष्ठ रसोइए हैं, सर्वश्रेष्ठ समर्थन देने वाले व्यक्ति हैं, अच्छे शिक्षक हैं और प्यार से भरी दुनिया, जिसमें दो आत्माओं को एक साथ रखा गया है, वे हमेशा हमारे लिए मदद के लिए खड़े रहते हैं। माता–पिता के माता पिता यह शब्द हमारे दादा–दादी/नाना–नानी के लिए बहुत उपयुक्त है। मैं सिर्फ इतना कह सकता हूं।

पितृपक्ष विशेष

धरती पर पितृपक्ष में आए हैं

भारत में प्राचीन मान्यता है
पितृपक्ष में यमराज पितरों को
अपने
परिजनों से मिलने मुक्त करते हैं
इसलिए धरती पर पूर्वज आए हैं

मान्यता है कि श्राद्ध करने से
घर में सुख शांति पाए हैं
यह समय पुण्य करने का है
समस्याओं का निवारण पाए हैं

पितृपक्ष आए हैं।
पूर्वजों की याद लाए हैं।।
आशीष भरपूर हम पाए हैं।
परिवार वालों की स्मृति संजोए हैं।।

जीवन से मुक्त हुए।
जो शाश्वत क्रम वो हुए।।
जीवन भर प्रेरणा दिए।
हम सबका जीवन संजो दिए।।

आज फिर छाया तुम्हारी।
पूरे परिवार ने महसूस किए हैं।।
कन्याओं को भोजन के रूप में।
तुम्हारे पवित्र मुख में भोज अर्पण किए हैं।।

शार्ट न्यूज

एक रुपये में होगी डायलिसिस, गोरखपुर में शुरू होगा सेंटर, पूर्वांचल को मिलेगी बड़ी राहत

वाराणसी। मुंबई के उत्तर भारतीय संघ के संस्थापक आरएन सिंह की स्मृति में गोरखपुर में डायलिसिस सेंटर की स्थापना होगी। यहां महज एक रुपये में मरीजों की डायलिसिस होगी। पूर्वांचल के किडनी रोगियों के लिए यह व्यवस्था वरदान साबित होगी। इसका शुभारंभ अगले साल एक जनवरी को होने की संभावना है। यह जानकारी उत्तर भारतीय संघ के वर्तमान अध्यक्ष एवं आरएन सिंह के पुत्र संतोष आरएन सिंह ने रविवार दोपहर मैदागिन स्थित पराड़कर स्मृति भवन में पत्रकारों को दी। उन्होंने कहा कि इस डायलिसिस सेंटर की स्थापना वह अपने पिता की याद में कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने काशी की तस्वीर बदल दी है। काशी का विकास मॉडल दूसरे प्रदेशों के लिए नजीर बन रहा है। पर्यटन को भी बढ़ावा मिल रहा है। इससे पहले काशी पत्रकार संघ के अध्यक्ष सुभाष चंद्र सिंह और महामंत्री डॉ. अत्रि भारद्वाज ने संतोष आरएन सिंह का स्वागत किया। इस मौके पर हिन्दी पत्रकार संघ मुंबई के अध्यक्ष आदित्य दुबे, वाराणसी प्रेस क्लब के अध्यक्ष चंदन रूपानी, आर. संजय, राजेश राय, सुरेश चंद्र मिश्रा, डॉ. विकास सिंह, देव कुमार केशरी, शंकर चतुर्वेदी आदि उपस्थित थे।

उरई में ट्रेन में आगे कूदी युवती, बचाने के चक्कर में किराएदार की भी कटकर मौत

उरई। उत्तर प्रदेश के उरई जिले के राठ रोड रेलवे क्रासिंग के पास रविवार दोपहर युवती ने ट्रेन के आगे छलांग लगा दी। उसे बचाने के प्रयास में किराएदार भी ट्रेन की चपेट में आ गया। हादसे में दोनों की मौके पर मौत हो गई। इस घटना से इलाके में सनसनी फैल गई है। जानकारी के मुताबिक उरई रेलवे स्टेशन के पास गांधीनगर मोहल्ले में रहने वाली 18 वर्षीय अंजिली स्टेशन से मालगाड़ी निकलते ही ट्रैक पर कूद गई। उसके घर में किराये पर रह रहे 50 वर्षीय संतोष ने उसे कूदते देखा तो बचाने के लिए वह भी रेलवे ट्रैक पर पहुंच गए। जब तक वह अंजली को ट्रैक से बाहर खींचते तब तक ट्रेन आ गई और दोनों उसकी चपेट में आ गए। मालगाड़ी से कटने से दोनों की मौके पर मौत हो गयी। ट्रेन के गुजरने के बाद रेलवे ट्रैक पर सैकड़ों लोगों की भीड़ जमा हो गई। घटना की सूचना लोगों ने पुलिस को दी। स्टेशन से जीआरपी के प्रभारी निरीक्षक सुरेंद्र सिंह फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे और मृतकों की शिनाख्त के बाद उनके परिजनों को सूचना दी। अंजिली मां-बाप की मौत के बाद यहां अपने नाना देवीदयाल वर्मा के यहां रहती थी, जबकि संतोष अपने परिवार से अलग उसके मकान में अकेले किराए पर रहता था।

लखीमपुर खीरी में दलित युवती के साथ गांव के ही युवकों ने किया गैंगरेप, दादी के घर से दूसरे घर जा रही थी किशोरी

मोहम्मदी। उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी में एक युवती के साथ गैंगरेप का मामला सामने आया है। ये घटना मोहम्मदी कोतवाली क्षेत्र के गांव की है। जहां शनिवार को एक दलित किशोरी के साथ कुछ लोगों ने गैंगरेप किया। 15 वर्षीय किशोरी शनिवार देर रात अपने दादी के घर से दूसरे घर जा रही थी। इस बीच रास्ते में ही कुछ युवकों व्यंग कसने लगे और किशोरी को में दबोच लिया। गैंगरेप करने के बाद युवकों ने किशोरी को डराया धमकाया। इसके बाद किशोरी ने घर आकर परिजनों से सारी बात बताई। किशोरी के भाई ने गांव के ही पांच लोगों के खिलाफ गैंगरेप सहित कई अन्य में मुकदमा दर्ज कराया। वही युवती को महिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जब इस घटना की सूचना एसपी को मिली तो उन्होंने मामले को संज्ञान में लेते हुए खुद मोहम्मदी कोतवाली पहुंचे। अपर पुलिस अधीक्षक के मुताबिक दलित किशोरी की दुष्कर्म की घटना सामने आने पर तत्काल कार्रवाई करते हुए युवती को चिकित्सीय परीक्षण के लिए अस्पताल भेजा गया। युवती की हालात सामान्य है। युवती ने अपने बयान में गांव के चार युवक के नाम बताए। जिन्हें हिरासत में ले लिया गया है और उनसे पूछताछ की जा रही है। जल्द ही युवकों पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

कुशीनगर : दो किग्रा गांजा और साढ़े तीन किग्रा चरस के साथ दो तस्कर पकड़े

कुशीनगर। उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में नशे के अवैध कारोबार के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान के तहत पुलिस ने रविवार को गांजा और चरस की खेप के साथ दो कुख्यात तस्करों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार नशीले पदार्थों की तस्करी में संलिप्त 25 हजार रुपये का इनामी तस्कर समीर आलम उर्फ भोलू पुत्र मन्नान साकिन को थाना तुर्कपट्टी क्षेत्र में धुनवलिया पुल के पास से 3.4 किग्रा अवैध चरस के साथ गिरफ्तार किया गया। उसके पास से पकड़ी गयी चरस की कीमत लगभग 8.5 लाख रुपये आंकी गयी है। पुलिस ने उसके पास से एक अवैध तमंचा एवं एक मोटर साइकिल भी बरामद की है। इस बीच पुलिस ने थाना हनुमानगंज क्षेत्र में नरकहवा मंझरिया मोड़ के पास से मुखबिर की सूचना पर 02 किग्रा अवैध गांजा के साथ तस्कर नथुनी पुत्र मोहम्मद निवासी डोमनपट्टी थाना खड्डा को गिरफ्तार किया। उसके पास से बरामद किये गये गांजे की कीमत लगभग 20 हजार रुपये बतायी गयी है। दोनों तस्करों के खिलाफ सुसंगत धाराओं में मामला दर्ज कर जेल भेज दिया गया है।

सहारनपुर में विवाहिता की मौत

सहारनपुर। उत्तर प्रदेश में सहारनपुर जिले के सरसावा कस्बे में रविवार को एक विवाहिता की जहरीले पदार्थ का सेवन करने से मौत हो गयी। मृतका के परिजनो ने दहेज हत्या का आरोप लगाया है। पुलिस सूत्रों ने बताया कि गंगोह निवासी नरेशचंद की बेटी रचना (27) की आज सुबह ससुराल में जहरीला पदार्थ खाने से मृत्यु हो गयी। पांच साल उसका विवाह सरसावा के मोहल्ला अफगानान पूर्वी निवासी संदीप के साथ हुआ था। इस मामले में मृतका के परिजनों ने दहेज हत्या की तहरीर दी है। उन्होने बताया कि ससुराल पक्ष के लोगों ने पुलिस का इत्तिला दी कि रचना सुबह करीब आठ बजे घर की छत पर गई थी और तभी उसने कोई विषैला पदार्थ खा लिया जिससे उसकी मौत हो गई। सूचना मिलने पर गंगोह से उसके मायके वाले सरसावा पहुंचे। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए सहारनपुर भिजवा दिया है। मामले की जांच की जा रही है।
सं प्रदीप

सहारनपुर में आग लगने से चार झुलसे

सहारनपुर। उत्तर प्रदेश सहारनपुर जिले के गंगोह कोतवाली क्षेत्र में रविवार को बर्थडे कैंडिल बनाने के दौरान लगी आग में दो सगे भाई समेत चार लोग झुलस गए जिन्हे गंभीर हालत में जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस सूत्रों ने बताया कि करनाल हाईवे पर स्थित बोढपुर गांव में स्थित मस्कीन के मकान में आज दोपहर आग लगने से वहां बर्थडे कैंडिल बना रहे शहजाद (27), उसका छोटा भाई जियाउल (20) के अलावा मोनिस (13) और समीर (12) गंभीर रूप से झुलस गए जिन्हे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्होंने बताया कि आग लगने का कारण अभी मालूम नहीं हो सका है। आठ दिन पूर्व ही यह परिवार हरियाणा के पानीपत जिले के पत्थरगढ से यहां आया था। उनके पास विस्फोटक बनाने का लाइसेंस नहीं है। पुलिस और अग्निशमन विभाग दोनो मामले की जांच कर रहे है।

सोनभद्र में पत्नी की पीट पीटकर हत्या

सोनभद्र। उत्तर प्रदेश में सोनभद्र के म्योरपुर क्षेत्र में बिना बताए मायके जाने से नाराज होकर एक व्यक्ति ने लाठी से पीट पीटकर अपनी पत्नी की हत्या कर दी और शव को बोरे में भर कर मौके से फरार हो गया। पुलिस सूत्रों ने रविवार को बताया कि कुसम्हा गांव निवासी पप्पू पटेल की पत्नी रीता (30) बिना बताए मायके चली गई थी। शनिवार को वह अपने घर वापस आ गई। रीता के वापस आते ही देख उसका पति गुस्से में आ गया और दोनों में वाद विवाद होने लगा। इसी बीच पप्पू ने लाठी से अपनी पत्नी को पीटना शुरू कर दिया जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। पत्नी की मौत के बाद उसने शव को एक बोरे में भर दिया और घर में रख दिया।

स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती का निधन

ज्योतिर्मठ और शारदा पीठ के शंकराचार्य थे, आज नरसिंहपुर के परमहंसी गंगा आश्रम में दी जाएगी समाधि

नरसिंहपुर। ज्योतिर्मठ बद्रीनाथ और शारदा पीठ द्वारका के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती का 98 साल की आयु में रविवार को निधन हो गया। उन्होंने मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर जिले के झोतेश्वर स्थित परमहंसी गंगा आश्रम में माइनर हार्ट अटैक आने के बाद दोपहर 3 बजकर 50 मिनट पर अंतिम सांस ली। स्वरूपानंद सरस्वती को हिंदुओं का सबसे बड़ा धर्मगुरु माना जाता था।

शंकराचार्य लंबे समय से बीमार चल रहे थे। उनका बेंगलुरु में इलाज चल रहा था। हाल ही में वे आश्रम लौटे थे। शंकराचार्य के शिष्य ब्रह्म विद्यानंद ने बताया- स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती को सोमवार को शाम 5 बजे परमहंसी गंगा आश्रम में समाधि दी जाएगी। स्वामी शंकराचार्य आजादी की लड़ाई में जेल भी गए थे। उन्होंने राम मंदिर निर्माण के लिए लंबी कानूनी लड़ाई भी लड़ी थी।

9 साल की उम्र में घर छोड़ धर्म यात्रा पर निकले

शंकराचार्य श्री स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती का जन्म मध्यप्रदेश के सिवनी जिले के दिघोरी गांव में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके माता-पिता ने बचपन में इनका नाम पोथीराम उपाध्याय रखा था। महज 9 साल की उम्र में इन्होंने घर छोड़ धर्म की यात्रा शुरू कर दी थी। इस दौरान वो काशी पहुंचे और यहां इन्होंने ब्रह्मलीन श्री स्वामी करपात्री महाराज से वेद-वेदांग, शास्त्रों की शिक्षा ली।

19 साल की उम्र में बने थे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

जब 1942 में अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन का ऐलान हुआ तो स्वामी स्वरूपानंद भी आंदोलन में कूद पड़े। 19 साल की आयु में वह क्रांतिकारी साधु के रूप में प्रसिद्ध हुए। उन्हें वाराणसी में 9 महीने और मध्यप्रदेश की जेल में 6 महीने कैद रखा गया। जगदगुरु शंकराचार्य का अंतिम जन्मदिन हरितालिका तीज के दिन मनाया गया था।

1981 में शंकराचार्य की उपाधि मिली

स्वामी स्वरूपानंद 1950 में दंडी संन्यासी बनाए गए थे। ज्योर्तिमठ पीठ के ब्रह्मलीन शंकराचार्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती से दण्ड सन्यास की दीक्षा ली और स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती नाम से जाने जाने लगे। उन्हें 1981 में शंकराचार्य की उपाधि मिली।

राम मंदिर के नाम पर दफ्तर बनाने का आरोप लगाया था

शंकराचार्य स्वामी स्परूपानंद सरस्वती ने राम जन्मभूमि न्यास के नाम पर विहिप और भाजपा को घेरा था। उन्होंने कहा था- अयोध्या में मंदिर के नाम पर भाजपा-विहिप अपना ऑफिस बनाना चाहते हैं, जो हमें मंजूर नहीं है। हिंदुओं में शंकराचार्य ही सर्वोच्च होता है।

सपा शासनकाल में हुये विकास कार्यों पर रोक लगा रही है योगी सरकार: अखिलेश

लखनऊ। समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष अखिलेश यादव ने आरोप लगाया कि सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार ने बदले की भावना से सपा सरकार के कार्यकाल में लंबित विकास परियोजनाओं पर रोक लगा दी है।

किसान एवं सिख समाज के प्रतिनिधिमण्डल से सपा कार्यालय में मुलाकात के दौरान श्री यादव ने रविवार को कहा कि भाजपा समाजवादी पार्टी के बारे में बेबुनियाद बातें फैला रही है।

समाजवादी सरकार में निवेश भी आया था और विकास कार्य भी हुए थे लेकिन भाजपा सरकार ने बदले की भावना से समाजवादी सरकार में हुए तमाम विकास कार्यों और योजनाओं पर रोक लगा दी, कुछ कार्यों के नाम बदल दिये गये तो कुछ विकास कार्यों को बर्बाद कर दिया गया है। आज उत्तर प्रदेश विकास कार्यों में पूरी तरह से पिछड़ गया है।

उन्होने कहा कि भाजपा संविधान का ईमानदारी से पालन नहीं कर रही है। संवैधानिक संस्थाओं को कमजोर किया जा रहा है। गांवों में कोई विकास कार्य नहीं हुआ है। विद्युत आपूर्ति में कटौती की जा रही है। भाजपा को अंधेरा पसंद है। इसलिए प्रदेश को विनाश की ओर ले जा रही है।

यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में किसान की घोर उपेक्षा है। महंगाई के कारण किसानों के सामने अर्थ संकट है। भाजपा की आर्थिक नीतियों के चलते ग्रामीण अर्थव्यवस्था पूरी तरह चौपट हो गई है। गरीब की कमर टूट गई है। महिलाएं अपमानित हो रही है।

घर बंटवारे को लेकर छोटे भाई को डंडे से पीटा, अस्पताल ले जाते वक्त हुई मौत

बांदा। उत्तर प्रदेश में रिश्तों को शर्मसार करने का मामला सामने आया है। घर के बंटवारे को लेकर बड़े भाई ने छोटे भाई को लाठियों से पीटा जिससे वह गंभीर रूप से घायल होगा। इलाज को ले जाते समय रास्ते में ही छोटे भाई ने दम तोड़ दिया। पिता की तहरीर पर पुलिस ने बड़े भाई के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया। ये घटना बांदा के नरैनी थाना क्षेत्र के शहबाजपुर गांव की है। जहां शनिवार रात 28 वर्षीय कलकू प्रजापति का अपने बड़े भाई बच्चू के साथ घर के बंटवारे को लेकर विवाद हो गगया। कुछ ही देर में दोनों के बीच हाथापाई होने लगी। बड़े भाई बच्चू ने छोटे भाई कलकू के सिर पर डंडे से ताबड़तोड़ वार कर दिया। जिससे वह खून से लथपथ हो गया। वहीं पति को बचाने आई पत्नी कल्ली और उसके बच्चे को एक कमरे में बंद कर दिया। इसके बाद मौके पर पिता जागेश्वर और पड़ोस के रहने वाले लोग मौके पर पहुंचे। बेहोशी के हालात में उन्होंने कलकू को लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे। जहां डॉक्टरों ने गंभीर हालत देखते हुए मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। इससे पहले परिजन कलकू को लेकर अस्पताल पहुंचते उससे पहले ही उसने दम तोड़ दिया। मृतक के पिता जागेश्वर ने बताया कि कलकू उनके आठ बेटों में से तीसरे नंबर का था।

पूर्व मंत्री ने कहा, परिवार में उलझकर रह गये हैं अखिलेश, सपा है वेंटिलेटर पर

उत्पल राय ने अखिलेश यादव के खिलाफ बोला हमला, कहा परिवार में उलझ कर रहे गये हैं अखिलेश यादव

लखनऊ। जो व्यक्ति अपने ही घर में आग लगाने के लिए माचिस लेकर बैठा हो, उसके लिए किसी दुश्मन की क्या जरूरत है। जो दिनरात अपने घर के लोगों को पीछे धकेलने में लगा हो, अपने चाचा और पिता को किनारे कर दिया हो, भला वह दूसरों के भला करने के बारे में कैसे सोच सकता है। ये बातें भाजपा नेता और पूर्व मंत्री उत्पल राय ने कही।

उन्होंने अखिलेश यादव द्वारा किये गये ट्वीट पर एकजुटता देखकर भाजपा बौखला गयी है। के जवाब में ये बातें कही। इलाहाबाद विवि के पूर्व छात्रनेता व बसपा शासन काल में दर्जा प्राप्त मंत्री रह चुके उत्पल राय ने कहा कि समाजवादी पार्टी अब प्रदेश में वेंटिलेटर के स्तर तक पहुंच चुकी है।

आने वाले दिनों में वह जल्द ही कांग्रेस जैसी विलुप्त प्राय हो जाएगी। आज अखिलेश यादव की एसी वाली राजनीति के कारण उनके लोग भी उनसे दूर भग रहे हैं।

उत्पल राय ने कहा कि भाजपा हमेशा जनता के बीच रहकर जनता के लिए काम करती है। यहां हर कार्यकर्ता समर्पण भाव से समाज में होने वाली गतिविधियों पर ध्यान रखता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अधिकांश योजनाएं किसानों, गरीबों के जीवन स्तर को सुधारने के लिए होती हैं। वे योजनाओं को आमजन तक पहुंचाने में विश्वास करते हैं।

उत्पल राय ने कहा कि अखिलेश यादव को विरासत में पार्टी मिली। इस कारण वे गरीबों का दर्द नहीं सकझ सकते।

वे तो सिर्फ अपने परिवार में ही लगे रहते हैं। उनका ध्यान अपने परिवार के सदस्यों में किसको नीचे धकेलना है, किसका साथ देना है, इसी ओर लगा रहता है।

आखिर जिसकी सोच सिर्फ परिवार तक हो, वह समाज कल्याण की बात कैसे सोच सकता है।

दहेज में कार नहीं मिलने पर विवाहिता को जिंदा जलाने का प्रयास, पड़ोसियों ने बचाया

बरेली। उत्तर प्रदेश के बरेली में दहेज प्रताड़ना का मामला सामने आया है। दहेज में कार और 10 लाख रुपये नहीं मिलने पर पति और ससुराल पक्ष ने विवाहिता को जिंदा जलाने की कोशिश की। चीख पुकार सुनकार पड़ोसियों ने उसे बचाया। विवाहिता ने शनिवार को पति समेत सात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया। ये घटना बरेली के अटरिया गांव का हैं। इस गांव के रहने वाले नारायण दास ने डेढ़ साल पहले अपनी बेटी यशोदी की शादी पीलीभीत जिले के विहार कॉलोनी के रहने वाले परमेश्वरी दयाल के बेटे सत्यपाल गंगवार के साथ की थी। पीड़िता के परिजनों का आरोप है कि शादी के कुछ समय बाद ही ससुराल पक्ष ने एक कार और 10 लाख रुपये की डिमांड रख दी। जब मायके वाले नहीं दे पाए तो विवाहिता को प्रताड़ित किया जाने लगा। जिसके बाद पिछले साल ससुराल पक्ष ने विवाहिता के साथ मारपीट की। विवाहिता ने पति के खिलाफ सुनगढ़ी थाना में एफआईआर दर्ज कराई लेकिन इसके बावजूद विवाहिता के साथ मारपीट की घटनाएं कम नहीं हुई। 14 अगस्त साल 2022 से विवाहिता मायके आकर रहने लगी। जब विवाहिता के मां-बाप काम पर गए हुए थे तब इस बीच उसका पति, ससुर, जेठ और चाचा बाइक आ गए। विवाहिता का आरोप है कि सुसराल पक्ष ने उसके ऊपर डीजल उड़ेलकर आग लगा दी। चीख पुकार सुनकर पड़ोसियों ने उसकी जान बचाई। इसके बाद पीड़िता ने अपने ससुर परमेश्वरी दयाल, पति सत्यपाल गंगवार समेत आठ लोगों पर नवाबगंज थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई।

जौनपुर में वाहन की चपेट में आने से पीडब्लूडी कर्मी की मौत

जौनपुर। उत्तर प्रदेश में जौनपुर जिले के लाइन बाजार क्षेत्र में रविवार को बाइक से घर लौट रहे पी डब्लू डी के कर्मचारी की एक अज्ञात वाहन से टकराकर मौत हो गई। पुलिस के अनुसार आजमगढ़ जिले के देवगांव थाना क्षेत्र के लालगंज कैथी गांव निवासी अनिरुद्ध कुमार गिरी (58) अपने घर से आज सुबह बाइक से जौनपुर आ रहा था कि सुबह लगभग आठ बजे पचहटिया बाजार के पास अज्ञात वाहन से टकरा कर गंभीर रूप से घायल हो गया। लोगों के सहयोग से घायल को जिला अस्पताल लाया गया जहां चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक पीडब्ल्यूडी विभाग में रोलर चलाने का काम करता था।

पति ने हंसिया से पत्नी का सिर काटकर धड़ से किया अलग, खुद भी जहर खाकर की आत्महत्या

बरेली। उत्तर प्रदेश के बरेली में एक शख्स ने मामूली बात पर पत्नी का सिर काट दिया। इस घटना के बाद गांव में सनसनी फैल गई। शनिवार दोपहर खेत में चारा काटने गए दंपति की किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया। जिसके बाद पति ने पत्नी का सिर धड़ से अलग कर दिया और खुद जहर खाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने दोनों के शव को कब्जें में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। बेटे के मुताबिक पिता मानसिक रूप से बीमार थे। ये घटना बरेली के ईश्वरपुर की है। जहां 45 वर्षीय सोहन लाल शनिवार को पत्नी कौशल्या के साथ पशुओं का चारा लेने खेत गए। चारा काटने के दौरान पति-पत्नी में किसी बात को लेकर विवाद हो गया। विवाद इतना बढ़ गया कि दोनों में हाथापाई होने लगी। इस बीच सोहनलाल ने पास में रखे हंसिये से पत्नी कौशल्या का सिर धड़ से अलग कर दिया। इसके बाद उसने जहर खाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस को जब इस मामले की सूचना मिली तो सीओ बहेड़ी दीपशिखा और इंस्पेक्टर राम अवतार यादव मौके पर पहुंचे। पुलिस ने मुताबिक पति-पत्नी का शव गन्ने के खेत में था। मृतक के बड़े भाई हेतराम ने बताया कि सोहन का तीन महीने से मानसिक संतुलन खराब था जिसे लेकर मानसिक चिकित्सालय में इलाज चल रहा था।

सांसद अतुल राय की 58 लाख की सम्पत्ति कुर्क

गाजीपुर। माफिया डान मुख्तार अंसारी के करीबी मऊ में घोसी क्षेत्र के बहुजन समाज पार्टी (बसपा) सांसद अतुल राय की करीब 58 लाख रूपये कीमत की सात बेनामी संपत्तियां पुलिस ने रविवार को कुर्क कर ली हैं।

सांसद अतुल राय की 1.48 हेक्टेयर की सात बेनामी संपत्तियों को वाराणसी और गाजीपुर पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में कुर्क कर किया गया। कुर्की की कार्यवाही पुलिस आयुक्त कमिशनरेट वाराणसी के आदेश पर की गयी है। गौरतलब है कि अतुल राय इस समय प्रयागराज की नैनी जेल में बंद हैं और उनके ऊपर वाराणसी के भेलूपुर थाने में गैंगेस्टर एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज है। आज यह कुर्की की कार्यवाही गैंगेस्टर एक्ट की धारा 14 (1) के तहत की गयी है। अतुल राय के पैतृक गांव गाजीपुर के बीरपुर थाना क्षेत्र भांवरकोल में ये कार्रवाई की गयी है। वाराणसी की भेलूपुर और लंका पुलिस, सीओ सिटी गाजीपुर और तहसीलदार मुहम्मदाबाद के नेतृत्व में सभी सात जमीनों को कुर्क कर लिया गया। कुर्की की कार्यवाही की तहसीलदार मुहम्मदाबाद विजय प्रताप सिंह ने पुष्टि करते हुए बताया कि सरकार द्वारा अवैध ढंग से अर्जित की गयी बेनामी संपत्तियों की कुर्की की जा रही है, जिसके क्रम में आज अतुल राय की सात बेनामी जमीनों को कुर्क किया गया है जिनकी कुल कीमत 58 लाख 13 हजार 800 रुपया है।

'निराश' गठबंधन को 'अकेला' बनाने के लिए बिन बुलाए मेहमान बन रहे अखिलेश: स्वाती सिंह

संवाददाता/गौरवशाली भारत

लखनऊ। एक गरीब परिवार के व्यक्ति को गरीबों का कल्याण करते हुए राहुल नहीं देख सकते। यहां विपक्ष के पास जब मुद्दा नहीं रह गया तो सब भ्रष्टाचारी दल के नेता मिलकर नरेंद्र मोदी के खिलाफ मोर्चा बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इसके बावजूद यह निराश केला अर्थात नीतिश, राहुल, शरद, केजरीवाल और लालू कभी इमानदार व राष्ट्र के प्रति समर्पित नेता नरेन्द्र मोदी से नहीं लड़ पाएगा। ये बातें उप्र सरकार की पूर्व मंत्री स्वाती सिंह ने कही। स्वाती सिंह ने कहा कि वृक्ष में केला और जंतु में बिच्छू यही दो ऐसे इस जगत में जीव हैं, जो जन्म लेते ही

अपनी माता को ही मार देते हैं। यही कारण है कि केला की पूजा तो की जाती है, लेकिन उसे कभी दरवाजे पर नहीं लगाया जाता। यह ख्याल रखा जाता है कि उसकी जड़े हमारे मंडप में न पड़े। यही स्थिति इन विपक्षी पार्टियों की भी हैं। यह एक भ्रष्टाचार का गठबंधन है, जिसमें अखिलेश का जुड़ना केला से अकेला कर देता है और जनता इन्हें अकेला ही करने जा रही है।

उन्होंने कहा कि इसी बीच जनता और अन्य पार्टियों दूर हो चुके अखिलेश यादव ने भी बिन बुलाए मेहमान बनने की कोशिश में जुट गये हैं, लेकिन इनके जाते ही यह केला की जगह अकेला गठबंधन हो जाएगा। अर्थात नितीश, राहुल, शरद पवार, अखिलेश, केजरीवाल और लालू इन सभी को पहले अक्षर को लेंगे तो निराश अकेला बनता है। जो व्यक्ति अपने पिता का नहीं हुआ, अपने चाचा को हर कदम पर धोखा दिया। वह भला आम जनता और दूसरे दलों के साथ कैसे रह सकता है। पूर्व मंत्री ने कहा कि अखिलेश यादव जब भी किसी के साथ गये, उसकी मिट्टी पलीत कर दिये। पहले कांग्रेस से उन्होंने गठबंधन किया आज उप्र में कांग्रेस मृत प्राय हो गयी। पिछले लोकसभा चुनाव में बसपा के साथ गठबंधन कर बुआ और भतीजा की जोड़ी कहला रही थी। कभी पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने वाली मायावती के पार्टी की आज विधानसभा में मात्र एक विधायक हैं।

उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव के विपक्षी गठबंधन में जाने का मतलब है, वह पूरा गठबंधन अकेला हो जाएगा। राहुल गांधी और प्रियंका गांधी की भी स्थिति इसी से देखी जा सकती है कि प्रियंका यूपी के पूरे विधानसभा में पूरे विपक्ष से ज्यादा सक्रिय रहीं और सीटें जीत पाई दो। विधानपरिषद में कांग्रेस शून्य हो गयी।

कानपुर में चाइनीज बी बोज गैंग के 3 और गुर्गे गिरफ्तार

शेयर ट्रेडिंग और ऑनलाइन इन्वेस्टमेंट के नाम पर ठगे हैं 100 करोड़

कानपुर। कानपुर क्राइम ब्रांच ने चाइनीज नागरिक बी बोज उर्फ वीबी गिरोह के तीन और गुर्गों को गिरफ्तार कर लिया है। गैंग ने पूरे देश में 100 करोड़ से ज्यादा की ठगी को अंजाम दिया है। गुडवर्क करने वाली टीम को पुलिस कमिश्नर ने 50 हजार का इनाम देने की घोषणा की है।

12 जून को एम्पोरियम इस्टेट सिविल लाइंस निवासी फैज उर रहमान ने कोतवाली में एफआईआर दर्ज कराई थी जिसमें जानकारी दी कि 30 अप्रैल से शेयर ट्रेडिंग का काम शुरू किया था जिसके लिए आईडेक्स-ऑनलाइन.कॉम में पैसा इन्वेस्ट करना शुरू किया। वेबसाइट ने अच्छा रिटर्न दिया। उन्होंने एक साथ 11 लाख रुपये लगा दिए। उसी के बाद साइट क्रैश कर गई और पैसों की ठगी हो गई थी।

क्राइम ब्रांच ने 18 जुलाई को आगरा निवासी गिरोह के दो सगे भाई विकास और विक्रम सिंह, विकास सिंह पुत्र दीवान सिंह, नितिन सोनी और राहुल नागर को गिरफ्तार कर जेल भेजा था। पुलिस कमिश्नर बीपी जोगदंड के मुताबिक गिरोह के तीन सदस्य शिव कॉलोनी हेली मंडी गुड़गांव निवासी यश यादव, सिद्धार्थ नगर के भवानीगंज निवासी श्रवण यादव और नेतानगर बबेरू, बांदा निवासी अनुपम द्विवेदी को गिरफ्तार किया गया है। चीनी नागरिक देश के बाहर है, उसके लिए सीबीआई को सूचना भेजी जा चुकी है।

ठगी के ये तीन तरीके

भारतीय नागरिकों को ठगने को तीन तरीके अपनाता था। पहला कमोडिटी एक्सचेंज और क्रिप्टोकरेंसी के नाम पर इन्वेस्ट को फेसबुक और अन्य सोशल मीडिया से लिंक भेजता था। कोई व्यक्ति रकम इन्वेस्ट कर देता है तो वेबसाइट को क्रैश कर देते हैं। दूसरा तरीका ऑनलाइन गेम खिलाने के नाम पर लिंक भेजते हैं और रकम ठग कर वेबसाइट क्रैश कर देते हैं। तीसरा तरीका लोन दिलाने या लाटरी के नाम पर लिंक भेजते हैं और लोग झांसे में आकर रकम गवां देते हैं।

क्रिप्टोकरेंसी में कन्वर्ट कर चाइना भेजा जाता था पैसा

जिन तीन आरोपितों को क्राइम ब्रांच ने गिरफ्तार किया उनके पास से चार खातों की डीटेल मिली है जिसमें 27 करोड़ के ट्रांजेक्शन के सबूत मिले हैं। डीसीपी क्राइम सलमान ताज पाटिल ने बताया कि आरोपित यश और श्रवण के नाम पर कई फर्जी कंपनियां बनी हैं।

श्रवण के खाते में पैसा आता था और वह उसे क्रिप्टोकरेंसी में बदलकर चाइनीज हैंडलर के बताए गये खातों में ट्रांसफर करता था।

25 हजार रुपये का इनामी बदमाश मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद में रविवार को 25 हजार रुपये के इनामी गैंगस्टर को थाना बिलारी पुलिस ने मुठभेड़ में अवैध तमंचा व कारतूस सहित गिरफ्तार किया है।

पुलिस अधीक्षक(ग्रामीण) संदीप कुमार मीणा ने बताया कि आज सुबह पुलिस को मुखबिर की सूचना मिली कि एक बाइक पर सवार दो संदिग्ध व्यक्ति किसी अपराधिक घटना को अन्जाम देने के लिए चन्दौसी-मुरादाबाद मार्ग पर इब्राहीमपुर से थाँवला के रास्ते से होकर जा रहे हैं। सूचना मिलते ही पुलिस ने सतर्कता बढ़ाते हुए बाइक सवार संदिग्धों को पकड़ने के लिये उक्त मार्ग पर चैकिंग शुरु कर दी।

इसी दौरान ग्राम इब्रामहीम पुर के रास्ते पर एक बाइक आती दिखाई दी, जिस पर दो लोग सवार थे। पुलिस ने उन्हें रुकने का इशारा किया। वे बाइक को रोकने के बजाय विपरीत दिशा में भागने लगे। तभी पुलिस टीम ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया। इस पर बदमाशों ने पुलिस टीम पर गोली चला दी। पुलिस ने भी जवाबी कार्रवाई कर गोली चलाई, जिसमें एक बदमाश घायल हो गया जबकि दूसरा मौके का फायदा उठाकर भाग गया । घायल बदमाश को पुलिस टीम द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया है।

शार्ट न्यूज

चीन की फर्जी कंपनियों का भंडाफोड़, मुख्य साजिशकर्ता चीनी नागरिक गिरफ्तार

नयी दिल्ली। देश कारोबार कर रही चीन की फर्जी कंपनियों का भंडाफोड़ करते हुए इसके मुख्य साजिशकर्ता एक चीनी नागरिक को गिरफ्तार किया गया है। कंपनी मामलों के मंत्रालय के अधीन कार्यरत गंभीर धोखाधड़ी जांच कार्यालय ने बिहार के रास्ते सड़क मार्ग से देश से भागने की कोशिश कर रहे चीन के नागरिक जिलियान द्रोस्टे को कल गिरफ्तार किया। मंत्रालय ने आज यहां जारी बयान में बताया कि चीन की फर्जी कंपनियों के बारे में जानकारी मिलने के बाद गंभीर धोखाधड़ी जांच कार्यालय को इसकी जांच करने के लिए सौंपा गया। कुल मिलाकर 32 फर्जी चीनी कंपनियों की जानकारी मिलने के बाद यह कार्रवाई शुरू की गयी जिसमें इसके मुख्य साजिशकर्ता इस चीनी नागरिक को गिरफ्तार किया गया है। उसने बताया कि हांगकांग की कंपनी जिलियान हांगकांग लिमिटेड की गुरूग्राम स्थित भारतीय इकाई जिलियान कंस्टलटेंट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरु की फिनिटी प्राइवेट लिमिटेड और हैदराबाद की कंपनी हुसिस कंस्लटिंग लिमिटेड पर छापेमारी की कार्रवाई की गयी जिसके बाद चीनी नागरिक द्रोस्टे देश छोड़कर भागने के लिए बिहार के दूरस्थ क्षेत्रों में पहुंच गया। इसके बाद एक टीम बनाकर कल उसकी गिरफ्तारी की गयी। द्रोस्टे कई फर्जी कंपनियां बनाने का मुख्य साजिशकर्ता है और उसने कंपनी पंजीयन में स्वयं को हिमाचल प्रदेश के मंडी का निवासी बताया है।

मोदी आज करेंगे अंतरराष्ट्रीय डेयरी सम्मेलन का उद्घाटन

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सोमवार को उत्तर प्रदेश में ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट में पूर्वाह्न साढ़े 10 बजे इंटरनेशनल डेयरी फेडरेशन वर्ल्ड डेयरी समिट (आईडीएफ डब्ल्यूडीएस) का उद्घाटन करेंगे। चार दिवसीय इस सम्मेलन में देश और विदेश के डेयरी उद्योग से जुड़े प्रमुख उद्यमी, विशेषज्ञ, किसान और नीति-निर्माता शामिल होंगे। इस सम्मेलन का विषय 'पोषण और जीविका के लिए डेयरी' है। इसमें 50 देशों के करीब 1500 प्रतिनिधि जुटेंगे। भारत में इस तरह का सम्मेलन इससे पहले 1974 में हुआ था। भारत में डेयरी उद्योग सहकारिता पर आधारित अपनी तरह उत्कृष्ट मॉडल है। इसके माध्यम से छोटे एवं मध्यम किसानों और खासकर महिलाओं का सशक्तीकरण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। श्री मोदी के दृष्टिकोण के मद्देनजर डेयरी क्षेत्र की उन्नति के लिए अनेक कदम उठाये गये हैं जिससे पिछले आठ वर्षों में दुग्ध उत्पादन में 44 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी हुई है। पूरी दुनिया के कुल दुग्ध उत्पादन का 23 प्रतिशत दूध भारत में उत्पादित होता है। देश में 21 करोड़ टन दूध का प्रतिवर्ष उत्पादन किया जाता है। इससे आठ करोड़ से अधिक डेयरी किसान लाभान्वित होते हैं। सम्मेलन में भारत के दुग्ध किसानों को वैश्विक दुग्ध उत्पादन से जुड़ी बेहतर एवं आधुनिक तकनीकों आदि की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

चांदी में 2818 रुपये की तेजी, सोना फिसला

मुंबई। विदेशी बाजारों की तेजी से समर्थन पाकर बीते सप्ताह घरेलू सर्राफा बाजार में चांदी में 2818 रुपये प्रति किलोग्राम की तेजी रही वहीं मांग फिसलने से सोना 87 रुपये प्रति दस ग्राम की मामूली गिरावट पर रहा। समीक्षाधीन सप्ताह में वैश्विक बाजार में कीमती धातुओं में गिरावट का रुख रहा। सोना हाजिर 6.19 डॉलर प्रति औंस मजबूत होकर सप्ताहांत पर 1716.99 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गया। अमेरिकी सोना वायदा भी 1.65 डॉलर प्रति औंस की तेजी लेकर 1712.80 डॉलर प्रति औंस हो गया। इसी तरह सप्ताहांत पर चांदी हाजिर 0.71 डॉलर प्रति औंस की बढ़त के साथ 18.74 डॉलर प्रति औंस रही। बीते सप्ताह देश के सबसे बड़े वायदा बाजार एमसीएक्स में सप्ताहांत पर सोना 87 रुपये फिसलकर 50413 रुपये प्रति दस ग्राम पर आ गया। वहीं, इस दौरान सोना मिनी 111 रुपये की तेजी के साथ 50501 रुपये प्रति दस ग्राम पर रही। इसी तरह समीक्षाधीन अवधि में चांदी 2818 रुपये महंगी होकर 55718 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई। चांदी मिनी भी 1011 रुपये की बड़ी साप्ताहिक बढ़त लेकर सप्ताहांत पर 55270 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई।

विदेशी मुद्रा भंडार 7.9 अरब डॉलर घटकर 553.1 अरब डॉलर पर

मुंबई। विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति, स्वर्ण भंडार, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि में कमी आने से देश का विदेशी मुद्रा भंडार 02 सितंबर को समाप्त सप्ताह में 7.9 अरब डॉलर गिरकर लगातार पांचवें सप्ताह उतरता हुआ 553.1 अरब डॉलर पर आ गया। इसके पिछले सप्ताह विदेशी मुद्रा भंडार तीन अरब डॉलर घटकर लगातार चौथे सप्ताह गिरता हुआ 561.05 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 02 सितंबर को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 6.53 अरब डॉलर की गिरावट लेकर 492.12 अरब डॉलर रह गयी। इस अवधि में स्वर्ण भंडार भी 1.34 अरब डॉलर घटकर 38.3 अरब डॉलर पर आ गया। इसी तरह आलोच्य सप्ताह एसडीआर पांच करोड़ डॉलर की कमी हुई और यह घटकर 17.8 अरब डॉलर पर रहा।

पेट्रोल और डीजल की कीमतें स्थिर

नयी दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेल की कीमतों के 90 डॉलर प्रति बैरल के आसपास बने रहने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई कमी नहीं की जा रही है, जिससे इसके दाम आज भी स्थिर रहे। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सप्ताहांत पर लंदन ब्रेंट बढ़त के साथ 92.84 डॉलर प्रति बैरल पर और अमेरिकी क्रूड 3.06 प्रतिशत बढ़कर 86.10 डॉलर प्रति बैरल पर रहा। घरेलू स्तर पर तेल विपणन करने वाली कंपनी भारत पेट्रोलियम के अनुसार, घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये प्रति लीटर और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर पर यथावत है। पिछले दो महीने से अधिक समय से तेल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। मुंबई में पेट्रोल और डीजल के दाम क्रमश: 106.31 रुपये प्रति लीटर और 94.27 रुपये प्रति लीटर हैं। देश में पेट्रोल और डीजल की कीमतें मूल्य वर्धित कर (वैट) और माल ढुलाई शुल्क के आधार पर सभी राज्यों में अलग-अलग हैं। पेट्रोल-डीजल के मूल्यों की प्रतिदिन समीक्षा की जाती है।

एफआईआई का निवेश जारी रहा तो जल्द नई ऊंचाई छूएगा शेयर बाजार

मुंबई। वैश्विक स्तर पर महंगाई को नियंत्रित करने के लिए ब्याज दरों में हो रही बढ़ोतरी के दबाव के बावजूद विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की जबरदस्त लिवाली और कच्चे तेल की कीमतों में कमी की बदौलत बीते सप्ताह 1.7 प्रतिशत की छलांग लगा चुके घरेलू शेयर बाजार में यदि एफआईआई का निवेश जारी रहा तो सेंसेक्स और निफ्टी जल्द ही नई ऊंचाई को छूएंगे।

बीते सप्ताह बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेद सूचकांक सेंसेक्स 989.81 अंक की छलांग लगाकर सप्ताहांत पर 59793.14 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 293.9 अंक की तेजी के साथ 17833.35 अंक पर रहा। इस दौरान बीएसई की दग्गज कंपनियों की तरह मझौली और छोटी कंपनियों में भी लिवाली हुई। इससे मिडकैप 473.31 मजबूत होकर सप्ताहांत पर 25937.22 अंक और स्मॉलकैप 727.92 अंक चढ़कर 29528.74 अंक हो गया।

आधिकारिक स्रोतों से उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, बीते सप्ताह एफआईआई ने बाजार में कुल 6948.41 करोड़ रुपये की शुद्ध लिवाली की लेकिन सोमवार को वह 811.75 करोड़ रुपये के बिकवाल भी रहे, जिससे इनका शुद्ध निवेश 6136.66 करोड़ रुपये रहा। इसी तरह सितंबर माह में अबतक वे 3837.56 करोड़ रुपये की शुद्ध लिवाली कर चुके हैं वहीं घरेलू संस्थागत निवेशक 69.71 करोड़ रुपये के बिकवाल रहे हैं।

इस वर्ष पिछले छह महीने के बाद अगस्त में शुरू हुई एफआईआई की लिवाली लगातार जारी है। इस महीने एफआईआई ने बाजार में 22025.62 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश किया जबकि घरेलू निवेशकों ने 7068.63 करोड़ रुपये की बिकवाली की थी। ऐसे में विश्लेषकों का मानना है कि

यदि एफआईआई और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) का बाजार में निवेश लगातार जारी रहा तो जल्द ही सेंसेक्स और निफ्टी नई ऊंचाई को छूने में कामयाब हो जाएंगे।

इसके अलावा अगले सप्ताह अगस्त की खुदरा और थोक महंगाई तथा औद्योगिक उत्पादन के आंकड़े भी जारी होने वाले हैं। जुलाई में खुदरा महंगाई घटकर 6.71 प्रतिशत और थोक महंगाई भी कम होकर 13.93 प्रतिशत रह गई थी। यदि इस बार भी महंगाई दर में गिरावट आई तो बाजार पर सकारात्मक असर पड़ेगा।

बीते सप्ताह शेयर बाजार में तीन दिन तेजी और दो दिन गिरावट रही। विदेशी बाजारों की गिरावट के बावजूद स्थानीय स्तर पर सत्रह समूहों में हुई लिवाली की बदौलत सोमवार को सेंसेक्स 442.65 की छलांग लगाकर 59245.98 अंक और निफ्टी 115.75 अंक उछलकर 17655.20 अंक पर पहुंच गया। वहीं, वैश्विक बाजार की तेजी के बीच स्थानीय स्तर पर दोपहर से पहले हुई भारी बिकवाली की भरपाई करने की तमाम कोशिशों के बावजूद शेयर बाजार पिछले दिवस की तेजी गंवाकर मंगलवार को गिरावट के साथ बंद हुआ। सेंसेक्स 48.99 अंक उतरकर 59196.99 अंक और निफ्टी 10.20 अंक फिसलकर 17655.60 अंक पर रहा।

इसी तरह अमेरिका में सेवा क्षेत्र के मजबूत आंकड़ों से फेड रिजर्व के ब्याज दरों में बढ़ोतरी की संभावना प्रबल होने से वैश्विक बाजार में आई गिरावट के दबाव में स्थानीय स्तर पर पांच समूहों में हुई बिकवाली से बुधवार को शेयर बाजार लगातार दूसरे दिन भी गिरकर बंद हुआ। सेंसेक्स 168.08 अंक टूटकर 59028.91 अंक और निफ्टी 31.20 अंक फिसलकर 17624.40 अंक पर रहा।

आसमान छूती महंगाई को काबू में करने के लिए यूरोपीय केंद्रीय बैंक (ईसीबी) के ब्याज दरों में बढ़ोतरी की पूरी तैयारी से वैश्विक बाजार के कमजोर रुख के बावजूद स्थानीय स्तर पर अन्य के साथ बैंकिंग समूह के मजबूत प्रदर्शन की बदौलत शेयर बाजार पिछले दो दिन की गिरावट से उबरते हुए गुरुवार को एक प्रतिशत से अधिक की तेजी पर रहा। सेंसेक्स 659.31 अंक की छलांग लगाकर 59688.22 अंक और निफ्टी 174.30 अंक उछलकर 17798.70 अंक पर पहुंच गया। वैश्विक बाजार के सकारात्मक रुख की बदौलत स्थानीय स्तर पर आईटी और टेक समेत दस समूहों में हुई लिवाली से शुक्रवार को शेयर बाजार में लगातार दूसरे दिन भी तेजी का सिलसिला जारी रहा। सेंसेक्स 104.92 अंक की तेजी लेकर 59793.14 अंक और निफ्टी 34.60 अंक अर्थात 0.19 प्रतिशत चढ़कर 17833.35 अंक पर रहा।

एफआईआई ने बाजार में किया 3837 करोड़ से अधिक का निवेश

मुंबई। महंगाई की मार झेली रही पूरी दुनिया में ब्याज दरों में हो रही बढ़ोतरी से उत्साहित विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने निवेश के सुरक्षित गंतव्य भारतीय शेयर बाजार में इस वर्ष सितंबर में अबतक 3837.56 करोड़ रुपये डाले वहीं घरेलू संस्थागत निवेशक (डीआईआई) 69.71 करोड़ रुपये निकाल चुके हैं।

स्टॉक एक्सचेंज से उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, इस वर्ष 09 सितंबर तक एफआईआई ने 51647.28 करोड़ रुपये की लिवाली की जबकि वह 47809.72 करोड़ रुपये के बिकवाल भी रहे। इससे शेयर बाजार में उनका शुद्ध निवेश 3837.56 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। इसी तरह डीआईआई ने 44296.51 करोड़ की लिवाली जबकि 44366.22 करोड़ रुपये की बिकवाली कर बाजार से 69.71 करोड़ रुपये निकाल लिए है।

सितंबर की पहली तारीख को एफआईआई ने 11907.28 करोड़ की लिवाली जबकि 14197.59 करोड़ बिकवाली कर 2290.31 करोड़ रुपये, इसके अगले दिन 6332.11 करोड़ की लिवाली जबकि 6340.90 करोड़ की बिकवाली कर 8.79 करोड़ रुपये और 05 सितंबर को 4849.29 करोड़ निवेश जबकि 5661.04 करोड़ की बिकवाली कर 811.75 करोड़ रुपये निकाल लिए।

वहीं, इसके अगले दिन उन्होंने 6467.47 करोड़ की लिवाली जबकि 5322.94 करोड़ की बिकवाली कर 1144.53 करोड़ रुपये, इसके बाद 6645.50 करोड़ की लिवाली वहीं 5887.13 करोड़ की बिकवाली कर 758.37 करोड़, 08 सितंबर को 8592.21 करोड़ की लिवाली जबकि 5679.12 करोड़ की बिकवाली कर 2913.09 करोड़ तथा 09 सितंबर को 6853.42 करोड़ की लिवाली वहीं 4721 करोड़ की बिकवाली कर 2132.42 करोड़ रुपये के शुद्ध लिवाल रहे। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2022 के पिछले छह महीने की बिकवाली के बाद अगस्त में शुरू हुई एफआईआई की लिवाली लगातार जारी है। अगस्त 2022 में एफआईआई ने बाजार में 22025.62 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश किया जबकि घरेलू निवेशकों ने 7068.63 करोड़ रुपये की बिकवाली की थी।

बोनस बांटने के साथ कंपनी करेगी शेयरों का टुकड़ों में बंटवारा

नई दिल्ली। शेयर बाजार के निवेशकों को बोनस का इंतजार हमेशा रहता है। और अगर हाई रिटर्न देने वाली कंपनी बोनस बांटे तो निवेशकों की खुशी दोगुनी हो जाती है। एक्सल रिएल्टी एन इंफ्रा लिमिटेड उन्हीं कुछ कंपनियों में से एक है जिसने निवेशकों को पहले तगड़ा रिटर्न दिया और अब कंपनी बोनस देने जा रही है। इसके अलावा कंपनी के मैनेजमेंट ने स्टॉक स्प्लिट की मंजूरी भी दे दी है। आइए जानते इस स्टॉक पर फॉर्मेंस कैसा है, साथ बोनस और स्प्लिट के लिए रिकॉर्ड डेट कब है?

कंपनी के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की मीटिंग में तय हुआ था कि कंपनी के 1 शेयर को 10 बांट दिया जाएगा। इसके अलावा एक्सल रिएल्टी एन इंफ्रा लिमिटेड अपने निवेशकों को 2 शेयरों पर एक शेयर बोनस के रूप में भी देगी। कंपनी की तरफ अब इसके लिए रिकॉर्ड डेट का ऐलान किया गया है। कंपनी ने रेगुलेटरी को दी जानकारी में बताया है कि बोनस और स्टॉक स्प्लिट के लिए रिकॉर्ड डेट 28 सितंबर 2022, दिन बुधवार रहेगा। बता दें, यह एक स्मॉल कैप कपंनी है, जिसका मार्केट कैप 64.99 करोड़ रुपये का है।

एक्सल रिएल्टी एन इंफ्रा लिमिटेड शुक्रवार को 4.79 रुपये की गिरावट के साथ 6.95 रुपये पर क्लोज़ हुआ था। कंपनी ने पिछले एक साल के दौरान निवेशकों को 101.45 प्रतिशत का रिटर्न दिया है। वहीं, तीन साल पहले जिस किसी निवशेक ने पैसा लगाया होगा और अपना इंवेस्टमेंट होल्ड किया होगा उन्हें अबतर 396.43 प्रतिशत का रिटर्न मिल चुका होगा।

अनिल अंबानी की बढ़ी मुसीबतः रिलायंस कैपिटल के बिडर्स ने पक्की बोली देने के लिए चार महीने का समय मांगा

नई दिल्ली। कर्ज में डूबी रिलायंस कैपिटल लिमिटेड (आरसीएल) के बोलीदाताओं ने कंपनी की समाधान प्रक्रिया के तहत बाध्यकारी या पक्की बोलियां देने की समयसीमा का चार महीने तक के लिए विस्तार करने का अनुरोध किया है। सूत्रों ने बताया कि अमेरिका के परिसंपत्ति प्रबंधन कोष एडवेंट ने 16 सप्ताह का विस्तार मांगा है जबकि पीरामल फाइनेंस ने 12 अतिरिक्त हफ्ते मतलब दिसंबर तक का वक्त मांगा है। मौजूदा समयसीमा के मुताबिक, 75 करोड़ रुपये की अग्रिम राशि (ईएमडी) के साथ पक्की बोलियां देने की अंतिम तारीख 29 सितंबर है। सूत्रों ने बताया कि पक्की बोलियों के लिए समयसीमा बढ़ाने की मांग अन्य बोलीदाताओं ने भी की है। उन्होंने बताया कि इंडसइंड बैंक ने 10 हफ्ते का विस्तार, ओकट्री ने 12 हफ्ते का और ज्यूरिख रे ने आठ हफ्तों का विस्तार मांगा है।

भारत की कामकाजी आबादी 2028 में चीन से आगे निकल जायेगी

चेन्नई। केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा है कि भारत में काम करने वाली आबादी 2028 में चीन को पीछे छोड़ देगी।

सीतारमण ने कल रात यहां भारतीय सूचना तकनीकी डिजाइन और मैन्युफैक्चरिंग संस्थान (आईआईआईटीडीएम) कांचीपुरम के 10वें दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र के 2019 के आंकड़ों के अनुसार भारत की कामकाजी आबादी 2028 में चीन से आगे निकल जायेगी।

उन्होंने कहा कि 2036 में हमारी आबादी का 65 प्रतिशत कामकाजी आबादी के रुप में पहुंच जायेगी और यह 2047 तक उस स्तर पर रहेगी। जिन्होंने इस तरह के संस्थानों से स्नातक किया है उत्पादकता में अपना योगदान दें।

उन्होंने इस तथ्य को रेखांकित करते हुए कहा कि भारत की उच्च शिक्षा ने कंपनी के सर्वश्रेष्ठ अधिकारियों में योगदान दिया है और 58 शीर्ष कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) मूल रुप से भारतीय हैं और 11 में ऐसे हैं जो बहुराष्ट्रीय कंपनियां हैं जिनका सामूहिक राजस्व एक खरब और चार खरब टर्नओवर से अधिक है।

वित्त मंत्री ने कहा कि सिलिकॉन वैली में सभी स्टार्ट-अप का 25 प्रतिशत का प्रबंधन भारतीय मूल के लोग करते हैं। भारत अब 100 यूनिकॉर्न हैं क्योंकि स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र इतनी अच्छी तरह से बनाया गया है। इनका बाजार मूल्य ये कंपनियां 250 अरब अमरीकी डालर हैं और उनके पास है सामूहिक रूप से बाजार से 63 अरब अमेरिकी डॉलर जुटाए गए।

दीक्षांत समारोह के दौरान कुल 380 छात्रों ने स्नातक किया। इसमें छह पीएचडी, 53 एमटेक, 110 दोहरी डिग्री और 11 बी.टेक डिग्री प्राप्तकर्ता शामिल हैं।

खाद्य तेल सस्ता; दाल-दलहन में घटबढ़

नयी दिल्ली। विदेशी बाजारों में पाम ऑयल के दाम में भारी गिरावट के दबाव में बीते सप्ताह दिल्ली थोक जिंस बाजार में अधिकांश खाद्य तेल सस्ते हो गए वहीं दाल-दलहन की कीमतों में घटबढ़ रही।

तेल तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का अक्टूबर वायदा समीक्षाधीन सप्ताह के दौरान 280 रिंगिट टूटकर 3550 रिंगिट प्रति टन पर आ गया। इसी तरह अक्टूबर का अमेरिकी सोया तेल वायदा भी सप्ताहांत पर 0.06 सेंट फिसलकर 63.94 सेंट प्रति पाउंड रह गया। बीते सप्ताह सरसों तेल 147 रुपये, मूंगफली तेल 220 रुपये, सोया रिफाइंड 148 रुपये और पाम ऑयल 366 रुपये प्रति क्विंटल सस्ता रहा जबकि वनस्पति तेल में 852 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी रही। वहीं, सूरजमुखी तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ।

सप्ताहांत पर सरसों तेल 16849 रुपये प्रति क्विंटल, मूंगफली तेल 19413 रुपये प्रति क्विंटल, सूरजमुखी तेल 20000 रुपये प्रति क्विंटल, सोया रिफाइंड 15237 रुपये प्रति क्विंटल, पाम ऑयल 13187 रुपये प्रति क्विंटल और वनस्पति तेल 15237 रुपये प्रति क्विंटल पर रहा।

दाल-दलहन : बीते सप्ताह दाल-दलहन के बाजार में घटबढ़ रही। सप्ताहांत पर चना 50 रुपये और चना दाल 50 रुपये प्रति क्विंटल उतर गई जबकि उड़द दाल 150 रुपये और अरहर दाल 100 रुपये प्रति क्विंटल चढ़ गई। वहीं, मसूर दाल और मूंग दाल के भाव स्थिर रहे।

सप्ताहांत पर चना 4550-4650, दाल चना 5550-5650, मसूर काली 8200-8300, मूंग दाल 8000-8100, उड़द दाल 10100-10200, अरहर दाल 9100-9200 रुपये प्रति क्विंटल रही।

अनाज : बीते सप्ताह अनाज के बाजार में मिलाजुला रुख रहा। सप्ताहांत पर गेहूं 100 रुपये प्रति क्विंटल सस्ता हो गया वहीं चावल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ और वे पुराने स्तर पर पड़े रहे।

सप्ताहांत पर अनाज (भाव प्रति क्विंटल) : गेहूं दड़ा 2300-2400 रुपये और चावल : 2600-2700 रुपये प्रति क्विंटल पर रहा।

चीनी-गुड़ : आलोच्य सप्ताह मीठे के बाजार में टिकाव रहा। सप्ताहांत पर चीनी और गुड़ के भाव पिछले स्तर पर टिके रहे।

सप्ताहांत पर चीनी एस. 3360-3460, चीनी एम. 3800-3900, मिल डिलीवरी 3310-3410 और गुड़ 3800-3900 रुपये प्रति क्विंटल पर रहे।

गूगल ने गलत तरीके हासिल किया एकाधिकार दबदबा बनाने के लिए एपल-सैमसंग जैसी कंपनियों को हर साल दे रही अरबों डॉलर

नई दिल्ली। गूगल दुनिया का सबसे बड़ा सर्च इंजन है, लेकिन यह एकाधिकार उसने प्रतिस्पर्धा के जायज तरीकों से नहीं हासिल किया है। गूगल की पेरेंट कंपनी एल्फाबेट सर्च इंजन में दबदबा कायम रखने के लिए एपल, सैमसंग जैसी मोबाइल कंपनियों को हर साल अरबों डॉलर का भुगतान करती है। यह जानकारी अमेरिकी न्याय विभाग ने स्थानीय कोर्ट को दी है। कोर्ट के जज अमित मेहता इस मामले की सुनवाई कर रहे हैं। न्याय विभाग के अटॉर्नी केनेथ डिंट्जर ने रकम तो नहीं बताई, लेकिन बताया कि कंपनियों को हर साल किया जाने वाला भुगतान अरबों डॉलर में है। मोबाइल, लैपटॉप और डेस्कटॉप पर अपना सर्च इंजन डिफॉल्ट तौर पर रखने के लिए इन कंपनियों से कॉन्ट्रैक्ट किया जाता है। आमतौर पर लोग डिफॉल्ट सर्च इंजन में बदलाव नहीं करते। अगर करते भी हैं तो कई तरह की तकनीकी परेशानियां बार-बार सामने आती रहती हैं। इसी से गूगल का एकाधिकार कायम है। अमेरिकी न्याय विभाग का दावा है कि एकाधिकार कायम रखने के लिए गूगल एंटी ट्रस्ट कानून का उल्लंघन कर रही है। कोर्ट अभी दोनों पक्षों को सुन रहा है। उसके बाद इस मामले की औपचारिक सुनवाई शुरू होगी।

इंदौर का आकाश नमकीन खरीदेगी रिलायंस : डील पर बातचीत

बीते दिनो कैंपा कोला और इनसाइट कॉस्मेटिक्स में कंट्रोल स्टेक खरीदी थी

एजेंसी

नई दिल्ली। सॉफ्ट ड्रिंक ब्रांड कैंपा के अधिग्रहण के बाद रिलायंस रिटेल अपने पोर्टफोलियो में इंदौर की कंपनी आकाश नमकीन प्राइवेट लिमिटेड को जोड़ने वाला है। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में ये दावा किया गया है। कंपनी रतलामी सेव, चिवड़ा और भेल जैसे नमकीन बनाती है। उसके प्रोडक्ट पोर्टफोलियो में बेसन के लड्डू, गुलाब जामुन और सोन पापड़ी जैसी पारंपरिक मिठाइयां है।

1936 में हुई थी आकाश नमकीन की शुरुआत

आकाश नमकीन की शुरुआत साल 1936 में मध्य प्रदेश की बिजनेस कैपिटेल इंदौर से हुई थी। कंपनी के पास इंदौर में मैन्युफैक्चरिंग प्लांट है। 7 को-पैकिंग यूनिट भी हैं। पूर्वी भारत में 4, उत्तरी भारत में 2 और पश्चिमी भारत में 1 यूनिट। अमेरिका, यूरोप, मिडिल ईस्ट, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और श्रीलंका में इसके प्रोडक्ट एक्सपोर्ट होते हैं।

आकाश का प्रोडक्ट पोर्टफोलियो

नमकीन में रतलामी सेव, मूंग दाल, बूंदी, मिक्सचर, पीनट, काजू मसाला, सालेटेड काजू, उपवास चिवड़ा, सोया स्टिक, भावनगरी गंठिया और भुजिया शामिल है। डाइट रेंज में मखाना, बॉम्बे फटाफट भेल, लाइट चिवड़ा और लाइट मिक्सचर शामिल है। वहीं मीठे में बेसन के लड्डू, सोहन पापड़ी, रसगुल्ला और गुलाब जामुन शामिल है। ईटी की एक रिपोर्ट के मुताबिक कंपनी रोज 40 टन से ज्यादा नमकीन 100,000 से ज्यादा पैकेट में भरती है।

रिलायंस तेजी से बढ़ा रहा प्रोडक्ट पोर्टफोलियो

पिछले महीने अपनी 45वीं एनुअल जनरल मीटिंग में रिलायंस रिटेल ने कहा था कि वह स्वस्थ मार्केट में एंट्री लेगा।

इसी के तहत वो अपने प्रोडक्ट पोर्टफोलियो को तेजी से बढ़ा रहा है। आकाश नमकीन के अलावा उसकी कार्बोनेटेड बेवरेज ब्रांड बिग कोला के मैन्युफैक्चरर, त्रश्च इंडिया के साथ बात चल रही है। दोनों के जॉइंट वेंचर एग्रीमेंट पर साइन करने की उम्मीद है।

इनसाइट कॉस्मेटिक्स में कंट्रोल स्टेक खरीदी

रिलायंस रिटेल वेंचर्स लिमिटेड ने हाल ही में मेकअप और पर्सनल केयर ब्रांड इनसाइट कॉस्मेटिक्स में कंट्रोल स्टेक खरीदी थी। उसकी सूरत बेस्ड हजूरी बेवरेजेज के साथ सोस्यो ब्रांड को भी खरीदने पर बातचीत चल रही है।

स्नैक टैक ब्रांड के तहत रिलायंस इंस्टेंट नूडल्स और सूप, बिस्कुट, नमकीन, मिठाई, पास्ता, सेंवई, केचप और जैम बेचती है।

गुड लाइफ ब्रांड के तहत आटा, खाने का तेल, चावल, दालें, सूखे मेवे, मसाले, नमक, चीनी उपलब्ध हैं। ओलिव ऑयल सीज ब्रांड के तहत बेचा जाता है। यह बबल्स एंड येह! लेबल के तहत बेवरेज भी बेचता है।

इस सप्ताह होगी बोनस की बरसात, जानें इन 4 कंपनियों की रिकॉर्ड डेट

नई दिल्ली। पोजीशनल निवशकों को बोनस शेयर का इंतजार रहता है। ऐसे इंवेस्टर्स के लिए यह सप्ताह खुशियों से भरा रहेगा। 4 कंपनियों की रिकॉर्ड डेट इसी सप्ताह है। आइए एक-एक करके जानते हैं सभी कंपनियों के विषय में, साथ ही बोनस की तारीख भी...

1- बज़ाज फिनसर्व बोनस रिकॉर्ड डेट

निवेशकों को मालामाल करने वाली कंपनी बज़ाज फिनसर्व के बोनस की रिकॉर्ड डेट 14 सितंबर 2022 है। कंपनी 13 सितंबर को एक्स-बोनस हो रही है। कंपनी योग्य निवेशकों को एक रेशिया एक के हिसाब से बोनस देगी। बात दें, पिछले सप्ताह शुक्रवार को कंपनी के शेयर 1.03 प्रतिशत की गिरावट के साथ 17,202.65 रुपये पर क्लोज़ हुआ था। पिछले दो साल के

दौरान कंपनी के शेयरों की कीमतों में 180.50 प्रतिशत का इजाफा देखने को मिला है। कंपनी के मार्केट कैप 2,74,006.47 करोड़ रुपये का है।

2- एएए टेक्नोलॉज़ी बोनस रिकॉर्ड डेट

कंपनी दो शेयर पर एक बोनस शेयर निवेशकों को देगी। कंपनी के बोर्ड ऑफ डॉयरेक्टर्स ने 14 सितंबर की तारीख को बोनस के लिए रिकॉर्ड डेट तय किया है। कंपनी ने अक्टूबर 2020 से अबतक एनएसई में 214 प्रतिशत की छलांग लगाई है। बता दें, शुक्रवार को कंपनी के शेयर 1.46 प्रतिशत की गिरावट के साथ 135 रुपये पर क्लोज़ हुए थे।

3- भारत इलेक्ट्रॉनिक बोनस रिकॉर्ड डेट

कंपनी के योग्य शेयर धारकों को 1 शेयर 2 बोनस शेयर मिलेंगे। पिछले दो साल के दौरान कंपनी के शेयरों में 223 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली है। भारत इलेक्ट्रॉनिक्स के बोर्ड ऑफ डॉयरेक्टर्स ने बोनस शेयर के लिए रिकॉर्ड डेट 16 सितंबर तय किया है। कंपनी शेयर बाजार में 15 सितंबर को एक्स-डिविडेंड के रूप में ट्रेड करेगी। बता दें, 10 अक्टूबर 2020 से अबतक कंपनी के शेयर का भाव 102 रुपये से नीचे आ गया था।

4- जी.के.पी प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग बोनस शेयर डेट

कंपनी स्टॉक मार्केट में 16 सितंबर को एक्स बोनस के रूप में ट्रेड करेगी। कंपनी की तरफ से बोनस के लिए रिकॉर्ड डेट 19 सितंबर 2022 तय किया गया है। जी.के.पी प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग हर दो शेयर पर एक शेयर देगी।

पिछले दो साल के दौरान कंपनी के शेयरों की कीमतों में 624 प्रतिशत की तेजी आई है। शुक्रवार को कंपनी के शेयर 4.99 प्रतिशत की गिरावट के साथ 90.40 रुपये के लेवल पर क्लोज़ हुआ। बता दें, कंपनी का मार्केट कैप 132.58 करोड़ रुपये का है।

शार्ट न्यूज

पश्चिम, उत्तर दलीप ट्रॉफी फाइनल में

चेन्नई। पश्चिम क्षेत्र ने पहली पारी की बढ़त के आधार पर दलीप ट्रॉफी क्वार्टरफाइनल में रविवार को पूर्वोत्तर क्षेत्र को हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। पश्चिम ने आखिरी दिन का खेल खत्म होने तक दूसरी पारी में पांच विकेट के नुकसान पर 268 रन बनाये। ऑलराउंडर अतीत सेठ (नाबाद 102) और शम्स मुलानी (97) ने पश्चिम के लिये बल्ले से शानदार प्रदर्शन किया। मैच ड्रॉ होना तभी निश्चित हो गया था जब पश्चिम ने तीसरे दिन पहली पारी में 355 रन की बढ़त ले ली थी। बेंगलुरु के एमए चिदंबरम स्टेडियम में चौथे दिन का खेल पश्चिम क्षेत्र के उन बल्लेबाजों के लिए एक मौका था जिन्हें पहली पारी में विकेट पर समय बिताने का मौका नहीं मिला। पश्चिम ने चौथे दिन दूसरी पारी में 12 रन पर एक विकेट से आगे खेलते हुए राहुल त्रिपाठी (24) और हार्दिक तामोरे (24) के विकेट जल्दी गंवा दिये। चिराग जानी (चार रन) भी बड़ा योगदान दिये बिना विश्वोर्जित सिंह की गेंद पर आउट हुए। पश्चिम के 68 रन पर चार विकेट गिरने के बाद सेठ और मुलानी ने पांचवें विकेट के लिए 179 रन की साझेदारी की। मुलानी ने 115 गेंदों 12 चौके लगाकर 97 रन बनाये जबकि सेठ ने 101 गेंदों पर 10 चौके और एक छक्का लगाकर 102 रन की नाबाद पारी खेली। मुलानी शतक लगाने से चूक गये और विश्वोरजीत (39 रन पर दो विकेट) की गेंद पर उन्हें ही कैच थमा बैठे। दूसरे छोर पर सेठ खड़े रहे और जयदेव उनादकट (एक नाबाद) के साथ 24 रन जोड़कर मैच को समाप्त किया। दूसरे क्वार्टरफाइनल मुकाबले में उत्तर क्षेत्र ने पूर्वी क्षेत्र को पहली पारी की बढ़त के आधार पर हराकर सेमीफाइनल का टिकट कटाया।

39वीं इंडियन ऑयल सुरजीत हॉकी 27 अक्टूबर से

जालंधर। भारत का प्रतिष्ठित 39वां इंडियन ऑयल सुरजीत हॉकी टूर्नामेंट 27 अक्टूबर से चार नवंबर तक स्थानीय सुरजीत हॉकी स्टेडियम, बर्लटन पार्क में खेला जाएगा। सुरजीत हॉकी सोसायटी के अध्यक्ष एवं जिला उपायुक्त जसप्रीत सिंह ने रविवार को बताया कि सोसायटी द्वारा हर साल टूर्नामेंट का आयोजन पूर्व भारतीय हॉकी टीम के कप्तान और ओलंपियन सरदार सुरजीत सिंह रंधावा के नाम को जीवित रखने के लिए किया जाता है, जिन्होंने सात जनवरी 1984 को जालंधर के पास एक दुखद कार दुर्घटना में अपनी जान गंवा दी थी। जसप्रीत सिंह ने कहा कि टूर्नामेंट का 39वां संस्करण नॉकआउट-कम-लीग के आधार पर खेला जाएगा। पिछले टूर्नामेंट के दौरान टीमों के प्रदर्शन को ध्यान में रखते हुए छह टीमों को सीधे क्वार्टरफाइनल लीग चरण में शामिल किया गया है जबकि दो टीमें नॉकआउट चरण के मैचों से क्वालीफाई करेंगी। प्रत्येक पूल से शीर्ष दो टीमें तीन नवंबर को सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगी।सिंह ने कहा कि विजेता टीम को पांच लाख रुपये और उपविजेता टीम को 2.50 लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाएगा। पहले की तरह, टूर्नामेंट के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी को 51,000 रुपये के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि पूर्व चैंपियन भारतीय रेलवे, नयी दिल्ली और उपविजेता पंजाब और सिंध बैंक, दिल्ली के अलावा देश की 16 शीर्ष टीमें इस साल टूर्नामेंट में हिस्सा लेंगी। पांच नवंबर को होने वाले टूर्नामेंट के अंतिम दिन टीमों को पुरस्कार वितरण के लिए पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान और खेल मंत्री गुरमीत सिंह मीत हेयर को बतौर मुख्य अतिथि निमंत्रण भेजा गया है जबकि आई.ओ.सी.एल. के कार्यकारी निदेशक जतिंदर कुमार विशेष अतिथि के तौर पर शामिल होंगे।

क्यूएफए के साथ एआईएफएफ का एमओयू

नयी दिल्ली/दोहा। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने रविवार को क़तर फुटबॉल महासंघ (क्यूएफए) के साथ समझौता ज्ञापन(एमओयू) पर हस्ताक्षर करने की घोषणा की। एआईएफएफ की ओर से जारी बयान के मुताबिक एआईएफएफ और क्यूएफए के शीर्ष अधिकारियों ने रविवार को मुलाकात की, जिसके बाद दोनों महासंघों ने समझौते के लिए सहमित जतायी। एआईएफएफ अध्यक्ष कल्याण चौबे ने बैठक के बाद कहा, मैं भारत और कतर के बीच सहयोग की संभावनाओं पर चर्चा करने के वास्ते अपना बहुमूल्य समय देने के लिए क्यूएफए अध्यक्ष शेख हमाद बिन खलीफा बिन अहमद अल-थानी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूं। मुझे यकीन है कि यह समझौता दोनों देशों के लिए दूरगामी फायदेमंद होगा। एआईएफएफ अध्यक्ष के साथ महासचिव डॉ शाजी प्रभाकरन इस सप्ताह की शुरुआत में दोहा की यात्रा पर गये थे जहां उन्होंने शुक्रवार को भारतीय फुटबॉल के भविष्य पर चर्चा करने के लिए फीफा अध्यक्ष जियानी इन्फेंटिनो से मुलाकात की थी।

पीयर्स-सैंडर्स ने जीता यूएस ओपन मिश्रित युगल खिताब

न्यूयॉर्क। जॉन पीयर्स और स्टॉर्म सैंडर्स की ऑस्ट्रेलियाई जोड़ी ने फ्रांस के एडुअर्ड रोजर वेसलिन और बेल्जियम की कर्स्टन फ्लिपकेन्स को हराकर यूएस ओपन का मिश्रित युगल खिताब जीत लिया। ऑस्ट्रेलियाई युगल ने शनिवार को आर्थर ऐश स्टेडियम में फ्लिपकेन्स-वेसलिन की जोड़ी को 4-6, 6-4, 10-7 से मात देकर बतौर टीम अपना पहला ग्रैंड स्लैम खिताब जीता। सैंडर्स ने जीत के बाद कहा, विश्व के सबसे बड़े कोर्ट पर खेलना एक यादगार अनुभव है। हम अगले साल वापस आयेंगे। चौथी सीड ऑस्ट्रेलियाई जोड़ी ने पहले सेट में कई ब्रेक-पॉइंट गंवाये, लेकिन दूसरे सेट में उन्होंने बेहतरीन प्रदर्शन किया और सेट पॉइंट पर वेसलिन के डबल फॉल्ट का फायदा उठाते हुए मैच को तीसरे सेट में पहुंचाया। फ्लिपकेन्स-वेसलिन की जोड़ी ने निर्णायक सेट में 0-3 से पिछड़ने के बाद वापसी की लेकिन लय बरकरार नहीं रख सके और 10-7 से तीसरा सेट हार गये। पीयर्स ने जीत के बाद कहा, यह सप्ताह खुशी से भरा रहा है, इसलिए उम्मीद है कि हम कुछ और टूर्नामेंट जीतेंगे। इस साल एकल प्रतियोगिता से सन्यास लेने की घोषणा करने वाली फ्लिपकेन्स ने दर्शकों को बताया कि वह अपने फ्रांसीसी साथी के साथ कोर्ट पर वापस आकर खुश हैं। उन्होंने कहा, मुझे उम्मीद भी नहीं थी कि एक दिन मैं फाइनल में यहां खड़ी रहूंगी।

स्वियातेक की यूएस ओपन ट्रॉफी में निकला तोहफा

न्यूयॉर्क। सीज़न 2022 में पेरिस से लेकर न्यूयॉर्क तक कुल सात डब्ल्यूटीए खिताब जीतने वाली पोलैंड की इगा स्वियातेक को यूएस ओपन खिताब जीतने के बाद वह तोहफा मिल गया जिसका उन्हें साल भर से इंतजार था। विश्व की नंबर एक खिलाड़ी स्वियातेक हर आयोजन जीतने के बाद ट्रॉफी समारोह के दौरान ट्रॉफी के अंदर झांकती थीं, और उसके खाली होने के कारण चेहरे पर निराशा के भाव ले आती थीं। यूएस ओपन में हालांकि ऐसा नहीं हुआ। ट्रॉफी समारोह के बाद संवाददाता सम्मेलन के दौरान स्वियातेक से ट्रॉफी का ढक्कन हटाकर देखने के लिये कहा गया। स्वियातेक ने ढक्कन हटाकर देखा तो उसके अंदर उनकी मनपसंद मिठाई तिरामिसु थी। तिरामिसु इटली की पारंपरिक मिठाई है। अमेरिकी टेनिस संघ (यूएसटीए) द्वारा किये गये इस प्रबंध ने स्वियातेक को हैरान कर दिया। यूएसटीए के सामाजिक संचार के प्रबंध निदेशक क्रिस विडमेयर ने समझाया, हम देखते हैं कि आप हमेशा अपनी ट्रॉफी की जांच करती हैं। इस बार हम चाहते थे कि आपको कुछ मिले।

ग्लेन, डंकले के आगे भारत पस्त

चेस्टर ली स्ट्रीट। इंग्लैंड महिला टीम ने सारा ग्लेन (चार विकेट) की शानदार गेंदबाजी और सोफिया डंकले (61) के नाबाद अर्द्धशतक की बदौलत भारत को पहले टी20 मुकाबले में नौ विकेट से मात दे दी। भारत ने इंग्लैंड को 133 रन का लक्ष्य दिया था, जिसे उन्होंने 13 ओवर में ही हासिल कर लिया। टॉस हारने के बाद पहले बल्लेबाजी करते हुए स्मृति मंधाना ने भारत को अच्छी शुरुआत दिलायी मगर 20 गेंदों पर 23 रन बनाकर पवेलियन लौट गयीं। कप्तान हरमनप्रीत ने 20(15) रन, रिचा घोष ने 16(12) रन और दीप्ति शर्मा 29(24) रन बनाकर भारत को 20 ओवर में 132/7 के स्कोर तक पहुंचाया। 133 रन के लक्ष्य की हिफाजत करते हुए भारत के लिये दूसरी पारी विस्मरणीय रही।

जीत के साथ समाप्त हुआ फिंच का एकदिवसीय करियर

केर्न्स। ऑस्ट्रेलिया ने स्टीव स्मिथ (105) के शतक और मार्नस लाबुशेन (52) के अर्द्धशतक की बदौलत न्यूजीलैंड को तीसरे एकदिवसीय मैच में रविवार को 25 रन से मात दी।
ऑस्ट्रेलिया ने न्यूजीलैंड को 268 रन का लक्ष्य दिया था, जिसके जवाब में वह 242 रन पर ऑलआउट हो गयी।
इस जीत के साथ ऑस्ट्रेलिया ने कप्तान ऐरन फिंच की आखिरी एकदिवसीय श्रृंखला में न्यूजीलैंड को 3-0 से क्लीन स्वीप कर दिया।
न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर ऑस्ट्रेलिया को पहले बल्लेबाजी के लिये बुलाया। एकदिवसीय क्रिकेट से सन्यास लेने की घोषणा कर चुके फिंच ने पांच रन बनाये, जबकि जॉश इंग्लिस ने 10(16) रन का योगदान दिया।
शतकवीर स्मिथ ने लाबुशेन के साथ तीसरे विकेट के लिये 118 रन की साझेदारी की, जबकि एलेक्स कैरी (42) के साथ चौथे विकेट के लिये 69 रन जोड़े।
ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान स्मिथ ने एकदिवसीय क्रिकेट में अपना 11वां शतक जमाते हुए 131 गेंदों पर 11 चौकों और एक छक्के की बदौलत 105 रन की पारी खेली।
अंत में कैमरन ग्रीन ने 12 गेंदों पर दो चौकों और दो छक्कों की मदद से 25

रन बनाकर ऑस्ट्रेलिया को 50 ओवर में 267 रन तक पहुंचाया।
न्यूजीलैंड ने 268 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए अच्छी शुरुआत की लेकिन नियमित अंतराल पर विकेट गंवाने के कारण जीत तक नहीं पहुंच सकी।
सलामी बल्लेबाज फिन ऐलेन (35) और डेवन कॉनवे (21) ने कीवी टीम को सहज शुरुआत दिलाई और पहले विकेट के लिये 49 रन जोड़े।
कप्तान केन विलियमसन (27), टॉम लैथम (10) और डेरिल मिशेल (16) का विकेट जल्दी गिरने के बाद ग्लेन फिलिप्स ने जेम्स नीशम के साथ छठे विकेट के लिये 61 रन की साझेदारी की। फिलिप्स ने 53 गेंदों पर 47 रन बनाये, जबकि नीशम ने 34 गेंदों पर 36 रन की जुझारू पारी खेली।
जब न्यूजीलैंड को 12 ओवर में 95 रन की दरकार थी तब कप्तान फिंच ने ग्रीन को गेंद सौंपी जिन्होंने नीशम को आउट करके इस साझेदारी को तोड़ा। फिलिप्स ने मिचेल सैंटनर (30) के साथ भी सातवें विकेट के लिये 51 रन जोड़े, लेकिन मिचेल स्टार्क ने फिलिप्स को और शॉन एबट ने सैंटनर को आउट कर कीवी टीम की बची-कुची पर उम्मीदों को समाप्त किया।
स्टार्क ने 50वें ओवर में लोकी फर्ग्यूसन और ट्रेंट बोल्ट का विकेट लिया जिसकी बदौलत न्यूजीलैंड 49.5 ओवर में ही 242 रन पर ऑलआउट हो गयी।

टी20 विश्व कप में वापसी के लिये तैयार बुमराह, हर्षल

मुंबई। भारत के शीर्ष तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और हर्षल पटेल टी20 विश्व कप 2022 के लिये टीम में वापसी करने को तैयार हैं, हालांकि दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ घर में होने वाली टी20 श्रृंखलाओं के दौरान उनकी फिटनेस पर नजर रखी जाएगी।
क्रिकबज ने रविवार को जारी रिपोर्ट में बीसीसीआई सूत्र के हवाले से कहा कि बुमराह और हर्षल पूरी तरह फिट हैं और बेंगलुरु की राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में बिना किसी परेशानी के गेंदबाजी कर रहे हैं।
भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने भारत की एशिया कप स्क्वाड की घोषणा करते हुए कहा था, जसप्रीत बुमराह और हर्षल पटेल चोटों के कारण चयन के लिए उपलब्ध नहीं हैं। वे वर्तमान में बेंगलुरु में एनसीए में रिहैब कर रहे हैं।
क्रिकबज ने कहा कि बुमराह और हर्षल ने अपना रिहैब पूरा कर लिया है। दोनों गेंदबाज चोट के कारण एशिया कप में हिस्सा नहीं ले सके थे,

जहां डेथ ओवर में खराब गेंदबाजी भारत की हार का एक प्रमुख कारण रही।
बुमराह और हर्षल की टी20 विश्व कप 2022 के लिये टीम में वापसी लगभग तय है, हालांकि दोनों गेंदबाज उससे पहले घर में दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाली टी20 श्रृंखलाओं में हिस्सा लेंगे जहां चयनकर्ता दोनों की गेंदबाजी का आंकलन करेंगे।
टी20 विश्व कप के लिये चयनकर्ता समिति की बैठक 15 सितंबर तक होने की संभावना है। टी20 विश्व कप 2022 का आयोजन ऑस्ट्रेलिया में 16 अक्टूबर से 13 नवंबर के दौरान किया जाएगा।

स्वियातेक ने पहली बार जीता यूएस ओपन खिताब

एजेंसी

न्यूयॉर्क। पोलैंड की इगा स्वियातेक ने एकतरफा फाइनल मुकाबले में ट्यूनीशिया की ऑन्स जब्यूर को हराकर अपना पहला यूएस ओपन खिताब जीत लिया।
विश्व की नंबर एक टेनिस खिलाड़ी स्वियातेक ने शनिवार को आर्थर ऐश स्टेडियम में जब्यूर को 6-2, 7-6 (5) से हराकर साल का अपना दूसरा ग्रैंड स्लैम खिताब हासिल किया।
इस साल मार्च में एशले बार्टर के आकस्मिक सन्यास के बाद 21 वर्षीय स्वियातेक डब्ल्यूटीए रैंकिंग में नंबर

एक पर पहुंच गयी थीं, लेकिन युवा खिलाड़ी ने इससे घबराने के बजाय प्रेरणा ली। स्वियातेक ने जीत के बाद कहा, मुझे संयमित रहने और लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत थी। सीज़न की शुरुआत में मुझे एहसास हुआ कि शायद डब्ल्यूटीए इवेंट्स में कुछ परिणाम मेरे हित में हो सकते हैं। मैंने ऑस्ट्रेलियन ओपन के सेमीफाइनल में भी जगह बनाई, लेकिन मुझे यकीन नहीं था कि मैं वास्तव में ग्रैंड स्लैम जीत सकती थी, खासकर यूएस ओपन पर जहां सतह इतनी तेज है।
उन्होंने कहा, यह कुछ ऐसा है जिसकी मुझे निश्चित रूप से उम्मीद नहीं थी। इससे मुझे यकीन हुआ है कि आकाश ही सीमा है। मुझे गर्व है, और थोड़ा आश्चर्य भी, बस इस बात की खुशी है कि मैं ऐसा करने में सक्षम रही। पहला सेट 6-2 से स्वियातेक की तरफ जाने के बाद दूसरा सेट टाइब्रेकर पर आ गया था। स्वियातेक ने 4-5 से पिछड़कर वापसी की और फोरहैंड शॉट से बराबरी हासिल की। दो पॉइंट बाद जब्यूर का फोरहैंड कोर्ट के बाहर गिरने से स्वियातेक को विजय प्राप्त हुई और वह यूएस ओपन जीतने वाली पोलैंड की पहली महिला खिलाड़ी बन गयीं।
इस साल से पहले स्वियातेक को लाल बजरी का मजबूत खिलाड़ी माना जाता था, लेकिन दोहा, इंडियन वेल्स और मियामी में तीन हार्डकोर्ट खिताब जीतने के बाद उन्होंने लोगों की राय बदल दी।

मैदान गीला था, हम 'जबरदस्ती' खेले : हरमनप्रीत

एजेंसी

चेस्टर ली स्ट्रीट। भारतीय महिला टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने इंग्लैंड के खिलाफ पहले टी20 मैच में हार के बाद कहा कि मैदान आवश्यकता से अधिक गीला था और टीम ने जबरदस्ती मैच में हिस्सा लिया।
हरमनप्रीत ने मैच के बाद कहा, मुझे लगता है कि हम जबरदस्ती खेले। मैदान की स्थिति 100 प्रतिशत खेलने लायक नहीं थी, वह आवश्यकता से अधिक गीला था।उन्होंने कहा, चोट लगने की कई

संभावनाएं थीं। हमारी एक खिलाड़ी को चोट भी लगी जिसके कारण हमें एक गेंदबाज के बिना खेलना पड़ा। मुझे यकीन है कि हम अगले मैच में वापसी करेंगे।
इंग्लैंड ने शनिवार को खेले गये टी20 मैच में भारत को नौ विकेट से मात दी। भारत ने इंग्लैंड को 133 रन का लक्ष्य दिया था, जिसे उन्होंने 13 ओवर में ही हासिल कर लिया।
इस जीत के साथ इंग्लैंड ने श्रृंखला में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली है। श्रृंखला का दूसरा मैच मंगलवार, 13 सितंबर को डर्बी में खेला जाएगा।

पाकिस्तान में बाढ़ प्रभावितों के लिए हिंदू मंदिर ने खोले दरवाजे, मुस्लिम परिवारों के लिए बना पनाहगाह

कराची। पाकिस्तान में बाढ़ के बाद हालात बद से बदतर हो गए हैं। बाढ़ का पानी धीरे-धीरे कम जरूर हो रहा है लेकिन लोगों को राहत नहीं मिली है। पाकिस्तान में बाढ़ में फंसे और विस्थापित लाखों लोगों को मदद का बेसब्री से इंतजार है। इस बीच बलूचिस्तान के एक छोटे से गांव में एक हिंदू मंदिर के दरवाजे बाढ़ प्रभावितों के लिए खोल दिया गया है। मंदिर की ओर से लगभग 200 से 300 बाढ़ पीड़ितों को भोजन और आश्रय प्रदान करके इंसानियत और नेकदिली का परिचय दिया है।
कच्छी जिले के जलाल खान गांव में ऊंचाई पर स्थित होने के कारण बाबा माधोदास मंदिर बाढ़ के पानी से अपेक्षाकृत बचा हुआ है। ऐसे में यह मुश्किल समय में बाढ़ प्रभावित लोगों के लिए एक पनाहगाह बन गया है। नारी, बोलन, और लहरी नदियों में बाढ़ के कारण यह गांव प्रांत के बाकी हिस्से से कट गया है, जिसके कारण दूरदराज के इलाके के निवासी बाढ़ के बीच फंसे हुए हैं।
'डॉन' अखबार की रिपोर्ट के मुताबिक, स्थानीय हिंदू समुदाय ने बाढ़ प्रभावित लोगों और उनके मवेशियों

के लिए बाबा माधोदास मंदिर के दरवाजे खोल दिए। स्थानीय लोगों के अनुसार बाबा माधोदास विभाजन से पहले के हिंदू संत थे, जिनका क्षेत्र के मुसलमानों और हिंदुओं के बीच काफी सम्मान था। भाग नारी तहसील से अकसर गांव में आने वाले अल्ताफ बुजदार कहते हैं, वह ऊंट पर यात्रा करते थे। बुजदार कहते हैं कि उनके माता-पिता द्वारा सुनाई गई कहानियों के अनुसार, लोग संत का अपनी धार्मिक सीमाओं से परे जाकर सम्मान करते थे।
उन्होंने अपने माता-पिता की बात का हवाला देते हुए कहा, वह लोगों को उनकी जाति और पंथ के बजाय मानवता की नजर से देखते थे। भाग नारी तहसील के एक दुकानदार 55 वर्षीय रतन कुमार वर्तमान में मंदिर के प्रभारी हैं। रिपोर्ट में उनके हवाले से कहा गया है, मंदिर में सौ से अधिक कमरे हैं क्योंकि हर साल बलूचिस्तान और सिंध से बड़ी संख्या में लोग तीर्थयात्रा के लिए यहां आते हैं। रतन के बेटे सावन कुमार ने कहा कि बाढ़ से कुछ कमरे क्षतिग्रस्त हो गए, लेकिन कुल मिलाकर ढांचा सुरक्षित रहा।

मुस्लिम परिवारों को भी दिया गया है शरण

रिपोर्ट में कहा गया है कि कम से कम 200-300 लोगों, ज्यादातर मुस्लिम और उनके पशुओं को परिसर में शरण दी गई और हिंदू परिवारों द्वारा उनकी देखभाल की गई।
शुरुआत में, क्षेत्र शेष जिले से पूरी तरह से कट गया था। विस्थापितों ने कहा कि उन्हें हेलीकॉप्टर से राशन उपलब्ध कराया गया था, लेकिन जब वे मंदिर के अंदर चले गए, तो उन्हें हिंदू समुदाय द्वारा भोजन खिलाया जा रहा है।

चिकित्सा शिविर भी स्थापित किया गया है

जलाल खान के एक डॉक्टर इसरार मुघेरी जिन्होंने मंदिर के अंदर एक चिकित्सा शिविर स्थापित किया है, ने बताया, स्थानीय लोगों के अलावा, हिंदुओं ने अन्य जानवरों के साथ-साथ बकरियों और भेड़ों को भी रखा है। वह बताते हैं, स्थानीय हिंदुओं द्वारा लाउडस्पीकर पर घोषणाएं की गईं, मुसलमानों को शरण लेने के लिए मंदिर में आने को कहा गया।
वहां शरण लेने वालों का कहना है कि इस मुश्किल घड़ी में उनकी सहायता के लिए आने और उन्हें भोजन और आश्रय प्रदान करने के लिए वे स्थानीय समुदाय के ऋणी हैं।

भारत को हिल्सा मछली का निर्यात रोकने के लिए कानूनी नोटिस

ढाका। भारत को हिल्सा मछली का निर्यात रोकने के लिए बंगलादेश सरकार को कानूनी नोटिस भेजा गया है। उच्चतम न्यायालय के वकील ने आज यह कानूनी नोटिस रजिस्टर्ड मेल से महमूदूल हसन को भेजा। नोटिस में वाणिज्य मंत्रालय , मत्स्य एवं पशु संसाधन मंत्रालय , विदेश मंत्रालय , निजी विमानन और पर्यटन मंत्रालय के सचिव , राजस्व बोर्ड के अध्यक्ष , आयात निर्यात के मुख्य नियंत्रक और बंगलादेश पर्यटन निगम के अध्यक्ष को नामित किया गया है। नोटिस में कहा गया है कि बंगलादेश की निर्यात नीति 2021-24 के अनुसार हिल्सा मछली निर्यात करने वाला उत्पाद नहीं है। वाणिज्य मंत्रालय जनहित को नजरअंदाज कर अनुचित रुप से इसे भारत को निर्यात करने की अनुमति दे रहा है। अगर बंगलादेश सरकार चाहती है कि पर्यटक हिल्सा के स्वाद का आनंद ले तो बंगलादेश पर्यटन निगम को सरकार की तरफ से हिल्सा उत्सव का आयोजन करना चाहिए जहां विदेशियों को हिल्सा के स्वाद का आनंद लेने के लिए बंगलादेश की यात्रा का निमंत्रण देना चाहिए। भारतीयों को भी आगामी दुर्गा पूजा के दौरान हिल्सा के स्वाद का आनंद लेने के लिए बंगलादेश की यात्रा करने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि पर्यटन निगम अधिनियम की धारा पांच के अनुसार पर्यटन निगम विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने सहित पर्यटन में विकास और सभी तरह की उत्कृष्टता के लिए जिम्मेदार है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था में अरब का प्रमुख योगदान : जयशंकर

रियाद। विदेश मंत्री डॉ एस जयशंकर ने रविवार को सऊदी अरब को उसकी प्रभावशाली वृद्धि संख्या और ऊर्जा बाजारों में केंद्रीय स्थिति के कारण उसे वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी करार दिया है। डा. जयशंकर ने सऊदी न्यूज को रियाद में यह जानकारी दी। वह 10 से 12 सितम्बर तक सऊदी अरब की यात्रा पर है। डा. जयशंकर ने प्रिंस सॉद अल फजल इंस्टीट्यूट ऑफ डिप्लोमेटिक इंस्टडीज में राजनयिकों को संबोधित करते हुए भारत-सऊदी सामरिक साझेदारी के महत्व को रेंखाकित किया। उन्होंने ऐसे समय में जब दुनिया चौराहे पर है भारत-सऊदी सामरिक संबंधों के महत्व को रेखांकित करते हुए ट्विटर पर इसके बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा , हमारा सहयोग साझा विकास , समृद्धि , स्थिरता , सुरक्षा और विकास का वादा करता है। विदेश मंत्री ने अपने दौरे के दौरान सऊदी गणमान्य व्यक्तियों के साथ साथ गल्फ कॉरपोरेशन कौंसिल (जीसीसी) के महासचिव डा. नायेफ फलाह मुबारक अल हजरफ से भी मिले और उत्पादकता पर बैठक बुलाई। डा. जयशंकर ने सऊदी अरब दौरे की शुरुआत भारतीय समुदाय से बातचीत करके की। उन्होंने राष्ट्रीय चुनौतियों का सामना करने और उसमें योगदान देने पर प्रवासी भारतीय की सराहना की।

बंगलादेश में दुर्गा पूजा के दौरान पंडालों को सुरक्षा

ढाका। बंगलादेश के गृह मंत्री असदुज्जमां खान कमाल ने रविवार को कहा कि इस वर्ष दुर्गा पूजा के दौरान देश में सभी पूजा पंडालों को सुरक्षा प्रदान की जाएगी और वहां पुलिस बल तैनात किया जाएगा। कमाल ने ढाका सचिवालय में रविवार को संवाददाताओं से कहा कि एक अक्टूबर से शुरू होने वाले दुर्गा पूजा के दौरान किसी भी अप्रिय घटना से बचने के लिए यह निर्णय लिया गया है। पूजा के दौरान सभी मंडपों में सीसीटीवी कैमरे लगाने की आवश्यकता है। गृह मंत्री ने कहा कि पूजा शांतिपूर्वक संपन्न हो इसलिए मंडपों की रक्षा स्वयंसेवक भी करेंगे।

यूरोप के सबसे बड़े जापोरिज्जिया परमाणु संयंत्र का आखिरी रिएक्टर बंद, ब्लैक आउट की आशंका

कीव। यूरोप के सबसे बड़े परमाणु संयंत्र को यूक्रेन के बिजली ग्रिड से फिर से जोड़ा गया और इंजीनियरों ने इलाके में लड़ाई तेज होने पर परमाणु विकिरण की आपदा से बचने की कवायद के तौर पर इसके आखिरी रिएक्टर को भी बंद कर दिया। छह रिएक्टर वाले जापोरिज्जिया संयंत्र को इलाके में लड़ाई के परिणामस्वरूप उसकी सभी बिजली लाइन काटने के बाद पिछले सप्ताह ग्रिड से हटा दिया गया था। यह संयंत्र कई दिनों से आइलैंड मोड पर काम कर रहा था और अपने एकमात्र चालू रिएक्टर से अहम कूलिंग उपकरणों के लिए बिजली पैदा कर रहा था। आइलैंड मोड का मतलब ऐसे संयंत्र से होता है जो अन्य ऊर्जा संयंत्रों से नहीं जुड़ा होता।
परमाणु ऑपरेटर कंपनी एनर्गोएटम ने कहा कि बिजली की इन लाइनों में से एक लाइन शनिवार देर रात बहाल की गई, जिससे संयंत्र को सुरक्षित रूप से संचालित करना संभव हुआ। कंपनी ने कहा, अत:बिजली यूनिट संख्या छह बंद करने का फैसला किया गया। इसने कहा कि यह खतरा अब भी बना हुआ है कि बाहर बिजली फिर से काटी जा सकती है और ऐसी स्थिति में संयंत्र को रिएक्टरों को ठंडा रखने तथा परमाणु रिएक्टर को अत्यधिक गर्म होने से बचाने के लिए आपात डीजल जेनरेटर चलाने होंगे।

दुनिया के टॉप टेन परमाणु ऊर्जा केंद्रों में से है एक

कंपनी के प्रमुख ने गुरुवार को बताया था कि संयंत्र के पास महज 10 दिनों के लिए डीजल बचा है। एनर्गोएटम कंपनी ने कहा कि एक पावर लाइन शनिवार देर रात बहाल की गई, जिससे संयंत्र के संचालकों ने अंतिम रिएक्टर को भी बंद कर दिया। दुनिया में 10 सबसे बड़े परमाणु ऊर्जा केंद्रों में से एक इस संयंत्र पर युद्ध की शुरुआत से ही रूसी सेना ने कब्जा कर रखा है। यूक्रेन और रूस संयंत्र के आसपास बमबारी के लिए एक-दूसरे पर आरोप लगाते रहे हैं।

महारानी के निधन पर ऑस्ट्रेलिया में सार्वजनिक अवकाश

कैनबरा। आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय की याद में 22 सितंबर को राष्ट्रीय शोक घोषित किया है। अल्बानीज़ ने रविवार को सोशल मीडिया पर कहा,22 सितंबर को महारानी के लिए राष्ट्रीय शोक दिवस के अवसर पर सार्वजनिक अवकाश रहेगा। शाही परिवार ने शनिवार को कहा कि महारानी एलिजाबेथ द्वितीय का अंतिम संस्कार 19 सितंबर को वेस्टमिंस्टर एब्बे में किया जाएगा, जिसमें ब्रिटिश शाही परिवार और विदेशी गणमान्य लोग शामिल होंगे। ऑस्ट्रेलियाई मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अल्बनीज अंतिम संस्कार समारोह में शामिल होंगे। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री ने शनिवार को कैनबरा में संसद भवन में महारानी एलिजाबेथ द्वितीय की प्रतिमा पर माल्यार्पण भी किया। गौरतलब है कि गुरुवार शाम को बकिंघम पैलेस ने घोषणा की कि 70 से अधिक वर्षों तक ब्रिटेन पर शासन करने वाली महारानी एलिजाबेथ द्वितीय का स्कॉटलैंड के बाल्मोरल महल में 96 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं... से मुद्रित एवं , ब्लाक नं 23 मकान नं 399 त्रिलोक पुरी दिल्ली -91 से प्रकाशित
संपादकः प्रवीण कुमार सिंह, आरएनआई नं. ·DELHIN/2011/38334, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, टेलीफोन नं.: 011-26700510/11 , ई-मेल : info@gauravshalibharat.com, समस्त विवादो का न्यायलय दिल्ली होगा

उंगलियों के दूरी भी बताती है कैसा रहेगा जीवन

हाथ की रेखाओं के साथ आप उंगलियों से भी आप वर्तमान और भविष्य के बारे में जान सकते हैं। हस्तरेखा विज्ञान के अनुसार,हस्तरेखा में उंगलियों की लंबाई के साथ उनकी बनावट और उनके बीच की दूरी भी इंसान के बारे में बता सकती है। अंगुलियों के बीच का अंतर भविष्य में क्या छिपा है यह बता सकता है।

लक्ष्य को लेकर होते हैं काफी गंभीर

हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार, तर्जनी यानी अंगूठे के पास वाली उंगली और मध्यमा यानी मीडिल फिंगर के बीच में खाली जगह है तो उस व्यक्ति के विचार स्वतंत्र होते हैं। वह आसानी से हर बात को कह देता है। अंगुलियों के बीच की ज्यादा दूरी है तो वह काफी मतलबी हो सकते हैं। हालांकि इस तरह के लोग अपने लक्ष्य को लेकर काफी गंभीर होते हैं और इनकी मेहनत भी काफी रंग लाती भी है।

ऐसे लोग केवल अपने फायदे सोचते हैं

हस्तरेखा विज्ञान के अनुसार, मध्यमा यानी मिडिल फिंगर और अनामिका यानी रिंग फिंगर के बीच में दूरी नहीं होनी चाहिए। इन दोनो अंगुलियों का पास-पास होना शुभ माना जाता है। अगर इनके बीच में खाली जगह हो तो ऐसा व्यक्ति काफी लापरवाह माना जाता है। यह केवल अपने बारे में सोचते हैं।

परिवार के लिए करते हैं सभी कार्य

अनामिका यानी रिंग फिंगर और कनिष्ठा यानी सबसे छोटी उंगली के बीच की खाली जगह अशुभ मानी जाती है। ऐसे व्यक्ति बहुत क्रोधी होते हैं। यह अपने हक के लिए किसी भी स्तर पर जा सकते हैं, फिर यह गलत और सही नहीं देख पाते। जिनकी खाली जगह होती है, वह काफी सकारात्मक सोचते हैं और अपने परिवार की शांति के लिए सभी कार्य करते हैं।

बड़े पदों पर काम करते हैं ऐसे लोग

अगर तर्जनी यानी अगूंठे के पास वाली उंगली अनामिका यानी रिंग फिंगर से छोटी होती है। तो ऐसे व्यक्ति में अहं भाव, सम्मान पाने की इच्छा बहुत होती है। यदि यह ऊंगली अनामिका से बड़ी हो तो व्यक्ति उत्तरदायित्व वाले पदों यानी बड़े पदों पर काम करता है। अगर यह सामान्य से छोटी हो तो व्यक्ति में महत्वाकांक्षा की कमी होती है।

गंभीर स्वभाव के होते हैं ऐसे व्यक्ति

हस्तरेखा विज्ञान के अनुसार, यदि किसी भी उंगलियों में फासला नहीं है तो ऐसे व्यक्ति काफी गंभीर स्वभाव के होते हैं। ऐसे लोग किसी से ज्यादा बात नहीं करते हैं, हमेशा अपने आप में रहते हैं। जिनकी सभी उंगलियों में फासला होता है ऊर्जावान होते हैं। इन लोगों की सोच काफी सकारात्मक होती है।

मनी प्लांट लगाते समय रखें यह ध्यान

यूं तो हर कोई मनी प्लांट अपने घर में लगाता है ताकि घर में आर्थिक रूप से संपन्नता हो लेकिन क्या आप जानते हैं कि गलत दिशा में रखा गया मनी प्लांट आपको तबाह कर सकता है। आर्थिक रूप से कंगाल बना सकता है। तो अगर आप भी ये पौधा अपने घर में लगाना चाहते हैं, तो पहले इन बातों को जान लें। इसके मुताबिक ही घर में मनी प्लांट लगाएं। इससे आपको काफी लाभ होगा।

जब भी घर में ये पौधा लाएं तो ध्यान रखें कि इसे आग्नेय दिशा यानी कि दक्षिण-पूर्व में ही लगाएं। बता दें कि इस दिशा के देवता गणेश जी है जो कि अमंगल नाशक हैं और प्रतिनिधि ग्रह है शुक्र जो कि सुख- समृद्धि दायक है। इस तरह आपको आग्नेय दिशा में मनी प्लांट लगाने से फायदा ही फायदा होगा।

वहीं अगर आपने इसे किसी और दिशा में या फिर नकारात्मक कही जाने वाली ईशान दिशा यानी कि उत्तर- पूर्व में रख दिया तो आपको हानि ही हानि होगी। इसके पीछे कारण यह है कि बृहस्पति जो कि देवताओं के गुरु हैं और शुक्र राक्षसों के गुरु हैं। दोनों ही एक-दूसरे के शत्रु हैं ओर ईशान का प्रतिनिधि ग्रह बृहस्पति है।

ऐसे में जब भी आप इस दिशा में मनी प्लांट लगाते हैं तो आपको नुकसान ही नुकसान होगा। तो जब भी आपको घर में मनी प्लांट का पौधा लगाना हो, ध्यान रखें कि उसकी दिशा आग्नेय हो। इससे आपको धन संबंधी लाभ तो मिलेगा ही साथ ही घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा।

पितृपक्ष में रखें इन बातों का ध्यान, पितृ होंगे प्रसन्न

पितृपक्ष शुरू हो गया है, इस समय लोग अपने पितरों को प्रसन्न करने के लिए कई तरह के उपाय करवाते हैं, तो आइए हम आपको कुछ उपाय बताते हैं जिनसे आपके पितृ प्रसन्न होकर आपको आर्शीवाद देंगे।

पितृपक्ष का महत्व

हमारे हिन्दू धर्म में पितृपक्ष विशेष महत्व रखता है। हमारे यहां मृत्यु उपरांत व्यक्ति का श्राद्ध करना आवश्यक होता है। ऐसी मान्यता है कि अगर किसी का श्राद्ध विधिपूर्वक नहीं हुआ तो उसकी आत्मा को शांति नहीं मिलती है। माना जाता है कि पितृपक्ष के दौरान यमराज पितरों को उनके परिजनों से मिलने के लिए मुक्त कर देते हैं। ऐसे में अगर पितृपक्ष में पितरों का श्राद्ध न किया जाए तो उनकी आत्मा दुखी होती है।

पितृपक्ष से जुड़ी पौराणिक कथा

एक पौराणिक कथा के अनुसार प्राचीन काल में जोगे और भोगे नामक के दो भाई रहते थे। जोगे बड़ा था और भोगे छोटा था। जोगे बहुत धनवान था लेकिन भोगे गरीब था। जोगे की पत्नी को अपना धनवान होने का बहुत अभिमान था लेकिन भोगे की पत्नी बहुत सरल थी। पितृपक्ष आने पर जोगे की पत्नी ने जोगे से पितरों का श्राद्ध करने को कहा लेकिन जोगे नहीं माना। लेकिन जोगे की पत्नी को लगा कि अगर श्राद्ध नहीं करेंगे तो समाज क्या कहेगा। इसलिए श्राद्ध करवाया और उसमें अपने मायके वालों को अपना धन दिखाने के लिए बुलाया। इस तरह जिस दिन श्राद्ध था उस दिन पितृ आए और उन्होंने देखा कि जोगे के घर उसके पत्नी के मायके वाले भोजन कर रहे हैं। यह देखकर पितृ बहुत दुखी हुए और भोगे के घर चले गए। भोगे के घर अगियारी निकली थी उसकी राख चाट कर पितृ चले गए।

उसके बाद सभी पितृ जब नदी किनारे इकट्ठे हुए तो जोगे और भोगे के पितृ बहुत दुखी हुए। उन्होंने सोचा कि अगर भोगे के पास धन होता तो वह जरूर हमारा श्राद्ध अच्छे से करता । इसलिए सभी पितृ भोगे को धन मिले कहकर नाचने लगे। इधर भोगे के घर में भोजन नहीं होने के कारण उसके बच्चे भूखे थे। उन्होंने खाने का मांगा तो उनकी मां ने ऐसे ही कह दिया कि जाओ बर्तन में रखा है कुछ लेकर खा लो। जब बच्चों ने बर्तन खोला तो देखा कि उसमें सोने की मुहरे रखी हैं। उन्होंने यह बात मां को बतायी। इसके भोगे की पत्नी ने पितरों का अच्छे से श्राद्ध किया और जेठ-जठानी को बुलाकर आवभगत की।

पितृ पक्ष में ये गलती न करें

पंडितों की मान्यता है कि पितृपक्ष में अपने पितरों का स्मरण करना चाहिए। यदि आप अपने पितरों को तर्पण करते हैं, तो ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करें। तर्पण के दौरान पानी में काला तिल, फूल, दूध, कुश मिलाकर पितरों का तर्पण करें। शास्त्रों का मानना है कि कुश का उपयोग करने से पितर जल्द ही तृप्त हो जाते हैं। पितृ पक्ष के दौरान आप प्रत्येक दिन स्नान के तुरंत बाद जल से ही पितरों को तर्पण करें। इससे उनकी आत्माएं जल्द तृप्त होती हैं और आशीर्वाद देती हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, पितृ पक्ष के दिनों में पितरों के लिए भोजन रखें। वह भोजन गाय, कौआ, कुत्ता आदि को खिला दें। पंडितों का मानना है कि उनके माध्यम से ये भोजन पितरों तक पहुंचता है।

किस दिन करें श्राद्ध

जिसकी मृत्यु तिथि का ज्ञान न हो उसका श्राद्ध अमावस्या को करना चाहिए। मृतक का श्राद्ध मृत्यु होने वाले दिन करना चाहिए। दाह संस्कार वाले दिन श्राद्ध नहीं किया जाता। अग्नि में जलकर, विष खाकर, दुर्घटना में या पानी में डूबकर, शस्त्र आदि से अल्पमृत्यु वालों का श्राद्ध चर्तुदशी को करना चाहिए, चाहे उनकी मृत्यु किसी भी तिथि में हुई हो। आश्विन कृष्ण पक्ष में सनातन संस्कृति को मानने वाले सभी लोगों को प्रतिदिन अपने पूर्वजों का श्रद्धा पूर्वक स्मरण करना चाहिए, इससे पितर संतृप्त हो कर हमें दीर्घायु, आरोग्यता, पुत्र-पौत्रादि यश, स्वर्ग पुष्टि, बल, लक्ष्मी, स्थान, वाहन, सब प्रकार की समृद्धि सौभाग्य, राज्य तथा मोक्ष की प्राप्ति कराते हैं।

पितृपक्ष में निषेध हैं ये काम

1. नए कपड़े और नया सामान न खरीदें।
2. दरवाजे पर आए भिखारी और अतिथि का अपमान न करें।
3. बासी खाना न खाएं। साथ ही शराब और मांस का भी सेवन न करें।
4. पितृपक्ष में होने वाली पूजा में लोहे के बर्तन के स्थान पर हमेशा पीतल और तांबे के बर्तन का इस्तेमाल करें।
5. तेल और सजावट का सामान इस्तेमाल नहीं करें।
6. इस दौरान मसूर की दाल, अलसी, धतूरा, कुलथी और मदार की दाल का सेवन न करें।

इन कामों से होते हैं पितृ प्रसन्न

1. ब्राह्मणों को सम्मान पूर्वक बुलाकर भोजन कराएं। यह ध्यान रहे कि भोजन हमेशा दोपहर में ही कराएं, सुबह और शाम को देवताओं को समय होता है।
2. ब्राह्मणों को भोजन कराकर उन्हें मीठा जरूर खिलाएं। मीठा खाने से ब्राह्मण प्रसन्न होंगे और उससे पितृ खुश होंगे।
3. इसके अलावा आप गाय, कुत्ते और कौवों को भोजन करा सकते हैं। इन्हें भोजन कराएं बिना श्राद्ध अधूरा माना जाता है।

ये 10 चीजें हो तो माता लक्ष्मी कभी नहीं आती पास

व्यक्ति अपने परिवार की खुशी के लिए कड़ी मेहनत करता है ताकि उसके घर में हमेशा सुख और समृद्धि बनी रहे। लेकिन जाने-अनजाने कई बार कुछ छोटी-छोटी गलतियों की वजह से उनके ऊपर माता लक्ष्मी की कृपा नहीं हो पाती। वास्तु शास्त्र के अनुसार घर में कई बार कुछ ऐसी चीजें होती हैं जिसकी हम अनदेखी कर देते हैं लेकिन यही अनदेखी नुकसान और परेशानी की वजह बन जाती है।

वास्तु शास्त्र में घर पर मकड़ी के जाले को अशुभ माना जाता है इसलिए मकड़ी का जाला घर में न लगने दें। इससे उलझन और परेशानी बढ़ती है।

टूटे हुए आईने से हमेशा नकारात्मक ऊर्जा निकलती रहती है इसलिए घर में जब भी कोई दर्पण या शीशा टूट जाए तो उसे घर से बाहर कर दें।

घर में चमगादड़ का प्रवेश अशुभ माना गया है। वास्तु विज्ञान के अनुसार घर में चमगादड़ का आना सूनेपन की निशानी है। घर में कुछ बुरी घटनाएं होने के संकेत होते हैं।

घर की दीवारों में दरारों का होना अशुभ होता है इसलिए जहां दरार हो उसकी मरम्मत करवाएं, दरार का होना धन के लिए अशुभ माना गया है क्योंकि माता लक्ष्मी उन्हीं घरों में वास करती है जहां पर साफ-सफाई होती है।

वास्तु शास्त्र में नल से पानी टपकते रहने को अशुभ माना गया है। नल से लगातार पानी टपकने से धन की हानि होती है। इसलिए जब भी नल से पानी टपकता हो तो उसकी मरम्मत तुरंत करवाएं।

घर की छत पर कबाड़ और बेकार की चीजों को एकत्र न होने दें।

पूजा घर या घर पर कभी भी में बासी फूल को इकट्ठा करके नहीं रखें।

घर में खराब पड़े बिजली के उपकरणों को नहीं रहने देना चाहिए।

घर में कबूतर का घोंसला बनाना वास्तु विज्ञान के अनुसार अशुभ चिन्ह है। माना जाता है इससे घर पर बड़ी मुसीबत आती है।

घर के दीवारों के कोने में अगर कोई मधुमक्खी या मकड़ी घर में छत्ता लगाए तो इसे हटा दें। इनका घर में होना अशुभ सूचक होता है।

घर की फ्लोरिंग के लिए रंगों का चुनाव सोच-समझकर करें

वास्तु के अनुसार अपने घर की फ्लोरिंग के लिए रंगों का चुनाव सोच-समझकर करें। क्योंकि रंग भी घर में भी रहने वाली सकारात्मक या नकारात्मक ऊर्जा को प्रबावित करते हैं। घर में यदि सही रंगों का प्रयोग किया गया है तो घर में अच्छी ऊर्जा बनी रहती है।

पूर्व दिशा

पूर्व दिशा यदि ठीक हो तो घर के मुखिया पर भगवान इंद्र की कृपा रहती है। इसके अलावा यह दिशा भगवान सूर्य को भी समर्पित मानी गई है, इस दिशा में सही होने से समाज में मान-सम्मान बना रहता है। वास्तु के अनुसार इस दिशा का फर्श गहरे हरे रंग का होना चाहिए।

पश्चिम दिशा

शास्त्रों के अनुसार पश्चिम दिशा लक्ष्मीजी का निवास माना गया है। इसलिए इस दिशा का दोष मुक्त होना बहुत जरूरी है। इस दिशा में अच्छी साफ-सफाई रखनी चाहिए। इस दिशा में फर्श का रंग सफेद होना चाहिए और बहुत ज्यादा आकृति और डिजाइंस नहीं होना चाहिए।

उत्तर दिशा

घर की उत्तर दिशा बेहद महत्वपूर्ण होती है। वास्तु-शास्त्र के अनुसार केवल इस एक दिशा के सही होने से घर में खुशहाली आती है। वास्तु-शास्त्र के अनुसार उत्तर दिशा को धन-कुबेर का स्थान माना जाता है। इस दिशा में हमेशा गहरे काले रंग का पत्थर फर्श के तौर पर लगवाना चाहिए।

दक्षिण दिशा

वास्तु के अनुसार दक्षिण दिशा नर्क की दिशा मानी जाती है, इसलिए यह सलाह दी जाती है कि कभी भी इस दिशा में घर का प्रलेश द्वार नहीं होना चाहिए। न ही इस दिशा में शयन-कक्ष या पति-पत्नी का बेडरूम होना चाहिए। चूंकि इसे यम की दिशा मानी जाती है तो यहां के फर्श का रंग गहरा लाल होना चाहिए...।

उत्तर-पूर्व दिशा

उत्तर-पूर्व दिशा में भगवान शिव का वास माना गया है। शिवजी को आसमानी और नीला रंग बेहद पसंद है, इसलिए शिव पूजा में आसमानी रंगों का प्रयोग किया जाना शुभ माना गया है।

दक्षिण पूर्व

इस दिशा का सृष्टि के रचियता ब्रह्मा की दिशा माना गया है। इस दिशा में बैंगनी रंग का फर्श होना शुभ माना जाता है।

दक्षिण-पश्चिम दिशा

दक्षिण दिशा के स्वभाव से ठीक विपरीत दक्षिण पश्चिम दिशा का स्वभाव है। इस दिशा में हल्के रंगों का इस्तेमाल सही माना गया है। यहां हल्के गुलाबी रंग का फर्श ठीक माना गया है।

उत्तर-पश्चिम दिशा

घर की इस दिशा को वायु की दिशा माना जाता है। इसलिए इस दिशा की दीवारों, पर्दों और यहां तक फर्श का रंग भी ग्रे होना चाहिए। यह रंग इस दिशा के लिए सबसे शुभ माना गया है।

इन जानकारी के अनुसार अगर आप अपने घर का फर्श बनवाते हैं तो आपको घर वास्तुदोष से मुक्त रहेगा। लेकिन अगर किसी कारण से आपने किसी दिशा में गलत रंग का फर्श बनवा लिया है तो आप कमरों का उपयोग बदल सकते हैं। जैसे रसोईघर को शयन कक्ष बना लें या लिविंग एरिया को बेडरूम बनाकर घर को वास्तुअनुरूप बना सकते हैं।

CMYK CMYK CMYK CMYK